जैन भारती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका | महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

अगस्त 2015 • वर्ष 63 • अंक 8 • वार्षिक मूल्य 200/-

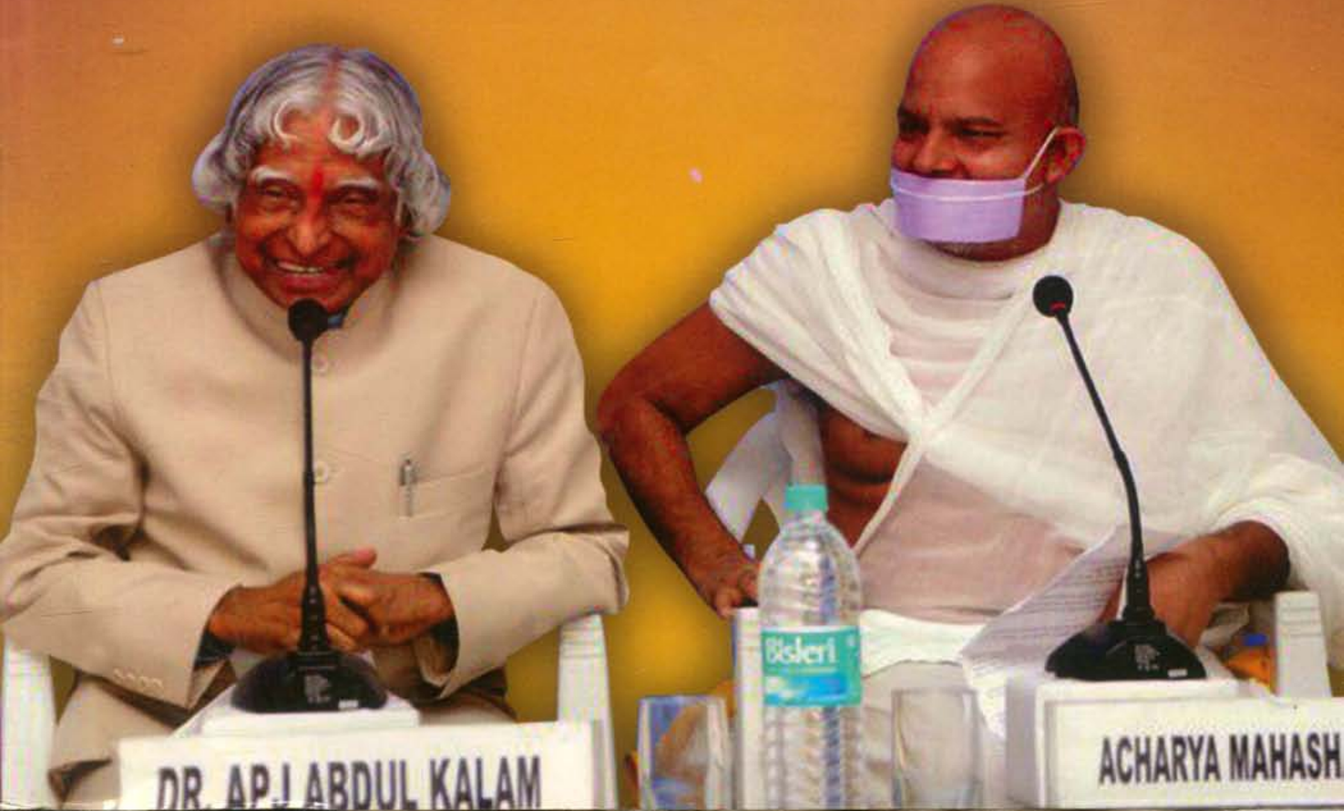

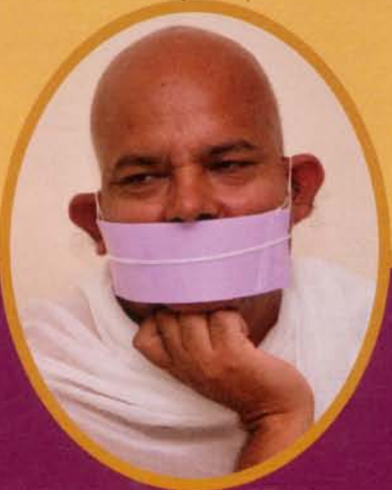

भविष्य का अच्छा होना वर्तमान पर निर्भर है

जो व्यक्ति धर्म की साधना करता है, वह यहां भी आनन्द में रह सकता है, आत्मशान्ति को प्राप्त कर सकता है और मरने के बाद भी उसे आनन्द मिल सकता है। पापी व्यक्ति के इस लोक में भी पाप उदय में आ सकते हैं और मरने के बाद भी पापकर्मों का विपाक हो सकता है। ऐसी स्थिति में उसे संतप्त होना पड़ सकता है, पश्चाताप करना पड़ सकता है। यहां भी पश्चाताप और मरने के बाद भी उसे पश्चाताप करना पड़ सकता है।

जैन वाङ्मय में आगे की गति के बारे में एक दृष्टांत के द्वारा समझाते हुए कहा गया है कि एक पथिक यात्रा में जाता है। उसके पास पाथेय नहीं है। वह खाली जा रहा है। मार्ग लंबा है। उस भयंकर जंगल में न कोई भोजनालय है, न कोई प्याऊ है। उस रास्ते में यात्रा करते हुए वह व्यक्ति बीच में भूख और प्यास से पीड़ित हो जाता है, जिससे उसका प्राणान्त भी हो सकता है। दूसरे राहगीर ने सोचा कि अटवी का रास्ता लंबा है, इसलिए मुझे व्यवस्था के साथ जाना चाहिए। उसने पानी और भोजन की व्यवस्था साथ में ले ली। अटवी पार करते समय उसे जब प्यास लगी तब पानी पी लिया, जब भूख लगी तब खाना खा लिया और आराम से अटवी का पथ पार कर लिया। जिसके पास पाथेय था, उसने आराम से रास्ता पार कर लिया और जिसके पास पाथेय नहीं था, उसे कष्ट उठाना पड़ा।

जिसके पास धर्म का पाथेय है, वह यहां भी आनन्द में रह सकता है और आगे भी आनन्द मना सकता है। वर्तमान जीवन हमारे सामने है और भविष्य भी हमारा चिन्तन का विषय बन सकता है। भविष्य को अच्छा बनाने के लिए आदमी को वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए। वर्तमान में कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे भविष्य अच्छा रह सके। यदि भविष्य पर ध्यान ही नहीं दिया, केवल वर्तमान को ही देखते रह गए और पापाचरण किया तो भविष्य में कठिनाई पैदा हो सकती है। उत्तराध्ययन में कहा गया है -

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ।

जो रातें बीत रही हैं, वे लौटकर नहीं आतीं। धर्म करने वाले की रात्रियां सफल होती हैं।

आचार्य महाश्रमण

वर्ष 63 | अगस्त 2015 | अंक 08

जैन भारती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका
महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

परामर्शक
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रधान संपादक
कमल कुमार दुगड़

संपादक
सुरेंद्र कुमार बोरड़

प्रकाशकीय कार्यालय
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कोलकाता - 700 001
फोन : 033-2235 7956 / 2234 3598
फैक्स : 033-2234 3666
इमेल : info@jstmahasabha.org
वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

आवरण : **अभिषेक सिंह**

मूल्य : 20/-
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 200/-रु.
त्रैवार्षिक 500/- रु.
दसवर्षीय 1500/- रु.

मुद्रक :
आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि.
158 लेनिन सरणी, कोलकाता - 700013
मोबाइल : 9903211215 / 9830747699

अनुक्रम

संबोध

संपादकीय

भगवान पार्श्वनाथ		07
आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में स्वतंत्रता दिवस के मायने		12
अशुभ कर्मोदय से प्राणी को आत्मग्लानि होती है	साध्वी जयमाला	17
कातर नयनों का पानी	डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह	19
गीतांजलि (डॉ. कलाम के प्रति)	डॉ. बुद्धिनाम मिश्र	24
वैज्ञानिक आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अनूठे उदाहरण डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम		25
महासभा संवाद		
सभा प्रतिनिधि सम्मेलन की रिपोर्ट		37
कार्यकर्ता संगोष्ठी		52
उपासक शिविर सेमिनार रिपोर्ट		54
ज्ञानशाला संवाद		56
संस्कार निर्माण शिविर		59
नेपाल सरकार द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण के सम्मान में अहिंसा यात्रा पर जारी डाक टिकट का लोकार्पण		60
समाजभूषण श्रीचंदजी गधैया		62
समाजभूषण सुगनचंदजी आंचलिया		63
सभा संवाद		65
विविध		85

भिक्खु दृष्टांत

उपकार : संसार का या मोक्ष का

संसार के उपकार और मोक्ष के उपकार पर स्वामीजी ने दृष्टांत दिया - किसी को सर्प ने काट लिया। गारुड़िक ने झाड़ा देकर उसे बचा लिया। तब वह चरणों में सिर झुकाकर बोला - 'इतने दिन तो जीवन माता-पिता का दिया हुआ था और आज से जीवन आपका दिया हुआ है।'

माता-पिता बोले - तुमने हमें पुत्र दिया है। बहनों ने कहा - तुमने हमें भाई दिया है। स्त्री प्रसन्न होकर बोली - मेरी चूड़ियां और चुनरी अमर रहेगी, यह तुम्हारा ही प्रताप है। सगे-संबंधी भी राजी होकर बोले - तुमने बहुत अच्छा काम किया। लाख रुपये देने से भी यह उपकार बड़ा है।

किंतु यह उपकार संसार का है।

अब मोक्ष का उपकार बताया जाता है -

किसी को जंगल में सर्प ने काट लिया। वहां साधु आ पहुंचे। वह बोला - मुझे सर्प ने काट लिया है इसलिए आप झाड़ा दें। तब साधु बोले - हम झाड़ा देना जानते तो हैं पर दे नहीं सकते। तब वह बोला - मुझे दवा बताओ।

साधु बोले - हम दवा जानते तो हैं पर बता नहीं सकते।

तब वह बोला - तुम ऐसे ही मुँह बाँध कर फिरते हो या तुममें कुछ करामात भी है?

तब साधु बोले - मुझमें ऐसी करामात है कि तुम यदि हमारी बात मानो तो तुम्हें किसी भी जन्म में सांप नहीं काटेगा।

तब वह बोला - वह क्या है मुझे बताओ।

तब साधु बोले - तुम विकल्प सहित अनशन कर दो कि इस उपसर्ग से बच जाऊंगा तो भोजन करूंगा अन्यथा अन्न और जल का त्याग करूंगा।

इस प्रकार उसे सविकल्प अनशन कराया, नमस्कार मंत्र सिखाया, अर्हत-सिद्ध-साधु और धर्म इन चारों शरणों से उसे सनाथ बनाया, उसकी भाव धारा को पवित्र बनाया। वह वहां से मर कर देवता हो गया, मोक्षगामी बन गया। यह मोक्ष का उपकार है।

देश और राजनीतिक दल

चार व्यक्तियों को एक गाय दान में मिली। गाय एक थी और साझेदारी चार जनों की थी। चारों ने मिलकर निर्णय लिया कि वे एक-एक दिन क्रमशः गाय का दोहन करेंगे। दोहन करने का निर्णय तो हो गया, पर उसे चारा-पानी देने की बात किसी ने नहीं सोची। पहले दिन जिस व्यक्ति ने गाय का दोहन किया, उसने चारा नहीं दिया, क्योंकि दूसरे दिन का दूध उसे नहीं मिलना था। दूसरे दिन जिसके पास गाय रही, उसने सोच लिया कि कल तो गाय को चारा मिला ही है। कल फिर मिल जाएगा, मैं क्यों पैसे खर्च करूं? यही बात तीसरे और चौथे के मन में आई। परिणाम यह हुआ कि चारों व्यक्तियों ने गाय का दोहन तो किया, पर न उसे चारा-पानी दिया और न उसे सहलाया-दुलराया। कुछ दिन तक गाय इधर-उधर मुंह मारकर गुजारा करती रही, पर ऐसे कितने दिन काम चल सकता था। वे चारों व्यक्ति दो-दो दिन भी पूरा दूध नहीं निकाल पाए, इसी बीच गाय ने दम तोड़ दिया।

जिस व्यक्ति ने गाय का दान किया था, उसके पास गाय के मरने की सूचना पहुंची। वह दुःखी हुआ। एक स्वस्थ गाय इतनी जल्दी कैसे मर गई? इस प्रश्नचिह्न ने उसको उद्वेलित कर दिया। उसने उन चारों जनों को बुलाकर स्थिति की जानकारी चाही। अब वे एक दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर सच्चाई सामने आकर रही। उस व्यक्ति ने उन चारों को धिक्कार दिया और गोहत्या का भयंकर अपराधी घोषित किया। उस दिन के बाद समाज के किसी भी व्यक्ति के मन में उनके प्रति कोई सहानुभूति नहीं रही।

भारतभूमि को एक गाय के रूप में देखा जाए तो देश की राजनीतिक पार्टियां उन स्वार्थी व्यक्तियों के समान हैं। वे देश का दोहन कर अपना घर भर रही हैं। उनको देशहित की कोई चिंता नहीं है। देश का आम आदमी भूख से तड़पकर प्राण भी छोड़ दे तो उनके खेमे में किसी प्रकार की सिहरन नहीं होती। अपने अधिकार और कुर्सी की सुरक्षा के लिए वादे बहुत किए जाते हैं, नारे बहुत दिए जाते हैं, पर इस सत्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि केवल नारों और वादों से देश की जनता का पेट नहीं भर सकता। पेट भरना तो एक छोटी-सी बात है। यहां सवाल है देश के एक-एक व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकताओं का और सम्मानपूर्ण जीवन जीने की आकांक्षाओं का। जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप वातावरण तब तक नहीं बन सकेता, जब तक सत्ता में स्वार्थी लोगों की बहुलता रहेगी। जब तक राजनीतिक लोग अपने और अपनी पार्टी के हित को सर्वोपरि मानते रहेंगे, भारत माता की हत्या होती रहेगी।

अणुव्रत यह नहीं कहता कि कोई व्यक्ति इन पार्टियों का मेम्बर बने ही नहीं। अणुव्रत की प्रेरणा है कि हर पार्टी में नीतिनिष्ठ और चरित्रसंपन्न व्यक्तियों की प्रमुखता हो, ऐसा होने से ही राजनीति के चेहरे पर लगे कलंक के धब्बे धुल सकेंगे। मेरा यह निश्चित विश्वास है कि जिस समय सभी पार्टियों के लोग स्वार्थी मनोवृत्ति के शिकंजे से मुक्त होंगे, वही समय भारत में नई चेतना और नए प्राणों का संचार कर सकेगा।

आचार्य तुलसी

योग्य बनो

पानी और अग्नि में वैर है। अग्नि जल रही है। उसमें पानी डालो, अग्नि बुझ जाएगी। यही स्वाभाविक वैर है। पता नहीं कब से वैर-विरोध चल रहा है? कुछ वैरों का तो पता चलता है कि अमुक दिन से इनमें वैर हो गया, विरोध हो गया। पानी और अग्नि में वैर कब से है? आज तक पता नहीं चल पाया। किन्तु बीच में अच्छा पात्र रख दो तो पानी गरम होकर उपयोगी बन जाएगा, नीचे अग्नि, ऊपर जल और बीच में पात्र। पात्र पानी से भरा हुआ है। सुपात्र बीच में आ गया तो न अग्नि बुझेगी न पानी खराब होगा। बल्कि गरम होकर वह उपयोगी बन जाएगा।

समुद्र कभी याचना नहीं करता कि नदियां आकर मुझे पानी दें। किंतु समुद्र में इतनी पात्रता है कि कितनी ही नदियां आकर उसमें मिल जाए, सबको वह अपने में स्थान देता है, सबका स्वागत करता है और अपने में सुरक्षित रख लेता है। वे ही नदियां किसी तालाब में आकर मिलें तो? कितना बड़ा खतरा पैदा हो जाता है।

सब लोग चाहते हैं सम्पदा मिले, धन मिले, पदार्थ मिले, यश मिले, सफलता मिले। सारी सम्पत्तियों के जितने प्रकार हैं, उन्हें सब लोग चाहते हैं। आचार्य ने एक बड़ी दूरदर्शिता के साथ एक सूत्र दिया कि कामना मत करो, पात्र बनो, योग्य बनो। अगर तुम्हारे में योग्यता है तो संपदा अपने आप आ जाएगी। अगर पात्रता नहीं है चाहे तो कामना करो, महत्वाकांक्षा करो, वह नहीं मिलेगी। आज सुपात्र की बहुत जरूरत है। बहुत आवश्यक है। नन्दी सूत्र का अध्ययन करते समय एक बहुत सुन्दर बात हमारे सामने आई। टीकाकार ने लिखा -

नोदन्वानर्थितामेति न चाम्भोभिर्नपूर्यते।
आत्मा तु पात्रतां नेयः स्वयमायान्ति संपदः।।

मेघ बरसा, पहाड़ों से नदियां निकलीं, पानी चला, गड्ढे भर गए। गड्ढों ने जितना जरूरी था, रख लिया, बीच में बाध आए तो वे भी भर गए। जितना जरूरी था उतना रख लिया और शेष पानी को ढकेल दिया। जितने जलाशय थे, सब भर गए, शेष पानी को आगे बढ़ा दिया। शेष पानी कहां गया? समुद्र में गया। समुद्र ने सबको अपने में समा लिया। कारण? अपना-अपना, पराया-पराया। समुद्र अपना था और तालाब तथा गड्ढे अपने नहीं थे। जो अपना नहीं होता, उसमें स्वार्थ होता है। जितना आवश्यक होता है, उतना रख लेता है, बाकी को धक्का दे देता है, ढकेल देता है। सबने अपना काम पूरा कर ढकेल दिया। किन्तु समुद्र ने नहीं कहा कि चले जाओ। अब तुम्हारा काम नहीं है। कारण यही कि अपना, अपना होता है, पराया, पराया होता है।

आत्मा को पात्र बनाओ, योग्यता बढ़ेगी। यह सूत्र सबके लिए है। साधु-साध्वियों के लिए भी बड़ा महत्वपूर्ण सूत्र है कि पात्र बनो। आत्मा को पात्र बनाओ, योग्यता का अर्जन करो। अगर योग्यता है तो जो मिलना है अपने आप आ जाएगा। हर पात्र भर जाएगा और पात्रता अर्जित किए बिना आकांक्षा करें तो तनाव पैदा होगा। सफलता नहीं मिलेगी। कुछ भी नहीं होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ

संपादकीय

महासभा की स्थापना के समय तय किए गए अनेक उद्देश्यों में एक यह था कि हमारा धर्मसंघ और समाज सर्वमंगल की कामना से कार्य करेगा। यह संकल्प या उद्देश्य महासभा के गौरवशाली 102 वर्षों के इतिहास में क्रमशः मुखर होता रहा है। हमने विगत वर्ष बीसवीं शताब्दी के युगनायक, क्रांतद्रष्टा और महान समाज उद्धारक आचार्य तुलसी की जन्मशताब्दी के अवसर पर अनेक ऐसे कार्य किए हैं, जिनका सीधा संबंध मानवता के हितसाधन से है। वह चाहे संस्कार निर्माण का क्षेत्र हो या शिक्षा, नैतिकता, अध्यात्म, साधना का, या व्यापक जनहित का, आपदाग्रस्त मानवता की सेवा का या समाज में अहिंसक चेतना के विकास के द्वारा सामाजिक-सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना का। महासभा ने गुरुवरों से दिशानिर्देश प्राप्त कर उक्त सभी दिशाओं में निरंतर कदम बढ़ाए हैं और उसके सार्थक परिणाम भी आए हैं।

महासभा के प्रयासों में सहभागी रही हैं देश-विदेश में फैली 550 से अधिक सभाएँ, जो महासभा के महत उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करते हुए संघ एवं समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित की हुई हैं। सभाओं ने पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त आप्तवाक्यों को अपनी कार्यप्रणाली का मूलमंत्र बनाया है –

अभय, अहिंसा, करुणा, मैत्री, सत्य-तत्त्व की जिज्ञासा।
विनयशीलता, आत्मसमर्पण, साहस, सहज, मधुर भाषा।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि हमारी अधिकांश सभाओं ने उक्त सिद्धांतों को अपनाकर ही संस्था संचालन का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया है। जिन संकल्पों के साथ सभाओं के पदाधिकारी पद का दायित्व ग्रहण करते हैं, उन्हें पूरा करने में वे कभी पीछे नहीं हटते। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल हों, वे भयभीत नहीं होते, उनका साहस, समर्पण कम नहीं होता, अपनी मधुर भाषा में ही वे बड़े से बड़े सत्य को उद्घाटित करने से डिगते नहीं। क्योंकि उनका संकल्प आने वाले भविष्य के लिए होता है, जिसके प्रति वे अत्यंत कटिबद्ध और दायित्वशील होते हैं।

तेरापंथी समाज के संबंध में प्रायः कहा जाता है कि वह एक जागृत समाज है, जिसके सदस्य अपने दायित्व को न केवल समझते हैं, बल्कि उन्हें पूरा करने हेतु प्राणपन से सचेष्ट भी रहते हैं। सभाओं के माध्यम से ही हमारे बृहत्तर समाज का विकास सुनिश्चित हुआ है और आगे हो सकता है। जिस अनुशासित ढंग से सभाएँ केंद्रीय दिशानिर्देशों का पालन करती हैं वह उनके सजग, दायित्वशील, प्रतिबद्ध और जनहित के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने के मनोभाव को प्रकट करती है।

हमने इस महीने सभाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित किया और उनके साथ मिल

बैठकर पूरे वर्ष के दौरान किए गए कार्यों की समीक्षा की, आत्मचिंतन किया कि जो कार्य गुरुवर के दिशानिर्देश के अनुसार महासभा और सभाओं को इस अवधि में पूरे करने थे, उस दिशा में हम कितने आगे बढ़े और कहाँ प्रमाद रहा। क्या हमने करणीय कार्यों के प्रति निरंतर प्रयास जारी रखा और उसके क्रम निर्धारण में हमसे कहीं कोई भूल तो नहीं हुई। क्योंकि यह आत्मविश्लेषण ही हमें बल और दिशा दोनों देता है और सुदृढ़ कदमों से आगे बढ़ने का साहस भी।

मुझे यह कहते हुए संतोष होता है कि हमारी सभाएँ इन कसौटियों पर खरी उतरी हैं। उन्होंने जिस सामंजस्य भावना के साथ कार्य किया है वह सराहनीय है। निरंतर अपने कार्यों का मूल्यांकन करते हुए पदाधिकारियों ने अपनी दृष्टि धर्मसंघ एवं समाज की सेवा करने पर टिकाए रखी। यही वजह है कि सभाएँ संसाधनों के विकास, संस्कारों के विकास, सौहार्द के विकास, अनुशासन के विकास एवं आस्था के विकास में महासभा के साथ प्रत्येक कार्य में सक्रिय सहभागिता निभाती रहीं। महासभा की दिशा और योजनाएँ स्पष्ट थीं, जिसके फलस्वरूप विगत अवधि में अनेक ऐसे कार्य संपन्न हुए, जो पहले अत्यंत कठिन प्रतीत होते थे। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी सभाएं हर स्थिति में हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर चलती रहीं। महासभा की विभिन्न विकासशील परियोजनाओं की पूर्ति में सभाओं एवं समाज का योगदान सदैव सराहनीय बना रहा है।

महासभा ने वर्ष 2014 में स्वयं को स्वावलंबी बनाने का संकल्प लिया, क्योंकि 553 सभाओं का संचालन करनेवाली महासभा ही स्वावलंबी न हो तो वह दूसरों से अपेक्षा करने का हक नहीं रखती। स्वावलंबी होकर ही महासभा अपनी सभी गतिविधियों को अबाधित रूप से संचालित कर सकती है। इस लक्ष्य से उसने सर्वप्रथम ज्ञानशाला, साहित्य संवर्द्धन, महाप्रज्ञ स्मारक स्थल आदि के लिए स्थायी कोष बनाने का निर्णय लिया। सोद्देश्य प्रयासों और समावेशी दृष्टिकोण के फलस्वरूप महासभा ने सबके सहयोग से इस महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त किया, जो महासभा के लिए गौरव की बात है, क्योंकि अब महासभा की उक्त योजनाएँ संसाधनों के अभाव में कभी रुकेंगी नहीं।

महासभा की महत्वाकांक्षी योजना अक्षय निधि कोष भी एक कालजयी प्रकल्प है, जो महासभा के सम्यक संचालन हेतु अपेक्षित संसाधनों की व्यवस्था के लिए स्थापित की गई है। इस योजना के अंतर्गत प्राप्त राशि को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से महासभा के साधारण खर्चों की पूर्ति करने में हम सक्षम होंगे। प्रतिनिधि सम्मेलन के दौरान कई सभाओं के प्रतिनिधियों ने जिस उत्साह से इस योजना से जुड़ने का आश्वासन दिया, उससे महासभा को विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य में सफल होगी।

इसी प्रकार महासभा शताब्दी वर्ष पर 100 नयी सभाओं के गठन तथा 100 नये तेरापंथ भवन निर्माण के संदर्भ में महासभा को जो सफलता हासिल हुई है, वह सभाओं एवं तेरापंथी समाज की महान सोच तथा समाज के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है।

अभी हाल ही में नेपाल में आए भीषण भूकंप के समय देश-विदेश की सभाओं, समाज के उदार तथा मानवता के प्रति जागरूक श्रावक समाज ने जिस सदाशयता के साथ मुक्तहस्त से नेपाल आपदा राहत कोष में दान दिया है, वह तेरापंथ समाज की उदात्त सोच को चरितार्थ करता है।

इसी दौरान मानवता के शुभचिंतक भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आकस्मिक निधन से मर्माहत हमारा संपूर्ण तेरापंथ समाज उनके प्रति आंतरिक श्रद्धा निवेदित करता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का तेरापंथ धर्मसंघ से गहरा संबंध था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति उनमें असीम आस्था और उनके मानवतावादी कार्यों के प्रति श्रद्धा भाव था। हमें डॉ. कलाम की ये ओजस्वी पंक्तियाँ सदैव स्मरण रहेंगी –

सितारों को न छू पाना
अफसोस की बात नहीं
अफसोस की बात है
मन में सितारों को छूने का
हौसला ही न होना।

कमल कुमार दुगड़

अहिंसा और सत्य की साधना को समाज-व्यापी बनाने का श्रेय भगवान पार्श्वनाथ को है। *भगवान पार्श्वनाथ का धर्म बिलकुल सीधा-सादा था। हिंसा, असत्य, स्तेय तथा परिग्रह - इन चार बातों को त्याग करने का वे उपदेश देते थे। इतने प्राचीन काल में अहिंसा को इतना सुसम्बद्ध रूप देने का यह पहला ही उदाहरण है।*

भगवान पार्श्वनाथ

जैन धर्म में माने गए चौबीस तीर्थंकरों में भगवान पार्श्वनाथ तेईसवें तीर्थंकर थे। कहा जाता है कि उनका जन्म बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के 3750 वर्ष बाद और भगवान महावीर से 250 वर्ष पहले हुआ था। भगवान महावीर के समय तक उनकी पंरपरा अविच्छिन्न थी। महावीर के माता-पिता पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। जैन ग्रंथों के अनुसार उनका जन्म काशी (बनारस) के राजा इक्ष्वाकवंशी काश्यप गोत्रीय राजा विश्वसेन अथवा अश्वसेन तथा रानी वामादेवी (ब्रह्मादेवी) के घर पौष कृष्ण एकादशी के दिन अनिल योग में हुआ था।

पार्श्वनाथ ऐतिहासिक पुरुष थे, इस संबंध में अनेक विद्वानों ने अपनी राय व्यक्त की है। हालांकि पहले अनेक विद्वानों ने एवं इतिहासकारों ने भगवान पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिह्न लगाया था। उनका मानना था कि भगवान महावीर जैन धर्म के संस्थापक हैं तथा भगवान पार्श्वनाथ चातुर्मास धर्म के प्रवर्तक हैं। परंतु धीरे-धीरे जैन साहित्य और जैन इतिहास के तुलनात्मक अध्ययन तथा उत्खलन में प्राप्त प्राचीन शिलालेखों, अवशेषों से भगवान पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता सिद्ध हुई है। प्रसिद्ध भारतीय विद्वान लाला कन्नोमल ने माना है कि पार्श्वनाथ का समय ईसा से 800 वर्ष पूर्व का है। डॉ. नगेंद्रनाथ बसु ने लिखा है कि पार्श्वनाथ स्वामी ईसा से 777 वर्ष पहले हुए थे। इसी प्रकार डॉ. विमलचरण लॉ, प्रो. एम. एस. रामास्वामी अय्यंगर, महर्षि शिवव्रतलाल बर्मन, डॉ. वेनीमाधव बरुआ आदि ने उन्हें ऐतिहासिक पुरुष मानते हुए उनके काल को ईसा के लगभग 800 वर्ष पूर्व का माना है। इनके अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों में डॉ. हर्मन जैकोबी, डॉ. जार्ल चारपेंटियर, डॉ. हेल्मुथ वॉन ग्लासनॉप्प, सर पैट्रिक फैगन, ई. पी. राइस, सिंक्लेयर स्टीवेंसन, डॉ. गिरनोट आदि ने विभिन्न प्रमाणों के आधार पर उन्हें ऐतिहासिक पुरुष माना है।

बौद्ध ग्रंथों में भी, विशेषकर अंगुत्तरनिकाय में निगंथों (निग्रंथ, अर्थात जिनमें कोई ग्रंथी न

हो), व्रात्य, संमण आदि का उल्लेख है, जो पार्श्वनाथ के समय तक जैनियों का अभिधान था।

उक्त तथ्यों के आधार पर माना जा सकता है कि भगवान पार्श्वनाथ ईसा से पूर्व आठवीं शताब्दी में हुए थे और एक ऐतिहासिक पुरुष थे।

भगवान पार्श्वनाथ के जीवन के संबंध में लिखे गए साहित्य में हमें उनके जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। भावदेवसूरि कृत पार्श्वचरित, वादिराजसूरि प्रणीत पार्श्वनाथचरित, सकलकीर्ति आचार्य और चंद्रकीर्ति कृत पार्श्वनाथ पुराण, जिनसेनाचार्य रचित पार्श्वाभ्युदय काव्य, गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण, वादिचंद्र और पद्मकीर्ति प्रणीत पार्श्वपुराण, हरिसत्य भट्टाचार्य लिखित पार्श्वनाथ भगवान, उदयवीर गणि, माणिक्यचंद्र तथा देवभद्रसूरि रचित पार्श्वनाथ चरित्र आदि अनेक ग्रंथों में पार्श्वनाथ के संबंध में विस्तार से उल्लेख किया गया है। हालांकि इन ग्रंथों में जीवन घटनाओं के संबंध में भिन्नताएँ भी हैं। दिगंबर एवं श्वेतांबर संप्रदायों के लेखकों में आम्नाय भेद के अनुसार भिन्नता तो है ही साथ ही दिगंबरों के भिन्न-भिन्न विद्वानों के मतों में भी भिन्नता दिखाई पड़ती है। इस संबंध में टोडरमल ने लिखा है कि ऐसी भिन्नताएँ कालदोष के कारण और संप्रदायों तथा लेखकों के परस्पर विचार-भेद के कारण आई हैं।

जैनचार्यों द्वारा रचित उक्त ग्रंथों के अतिरिक्त प्राचीनकाल में और भी ऐसे पुराण ग्रंथ उपलब्ध थे, जिनमें पार्श्वनाथ का चरित्र वर्णित था। हालांकि ऐसे ग्रंथ आज सहज उपलब्ध नहीं हैं।

यह लोक अनादिनिधन है। इसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत होगा। यह जैसा है वैसा ही रहेगा। परंतु इसमें परिवर्तन होता रहेगा। इन परिवर्तनों में एक पर्याय (स्थिति) की उत्पत्ति, उसका अस्तित्व और दूसरी का नाश होता रहता है।

विभिन्न जैन ग्रंथों में पार्श्वनाथ के पूर्व जन्मों की कथा बताई गई है, जिसमें कहा गया है कि पार्श्वनाथ पहले भव में ब्राह्मण पुत्र मरुभूति थे तथा उन्हीं के बड़े भाई कमठ ने द्वेषवश उनका प्राणान्त कर दिया था। उसके बाद वही कमठ का जीव विभिन्न योनियों में जन्म लेकर उनके साथ अपना वैर निकालता रहा, किंतु पार्श्वनाथ के जीव ने कभी उसका प्रतिकार नहीं किया और वे प्रत्येक विपत्ति समतापूर्वक सहन करते रहे।

उसी जीव का जन्म अंतिम भव के रूप में पार्श्वनाथ बनकर राजा विश्वसेन तथा रानी वामादेवी के घर हुआ। पार्श्वचरित्र में कमठ जीव के वैरभाव के वर्णन को जैन धर्म में गहरी आस्था रखनेवाले लोग यथार्थ मानते हैं। कमठ के जीव असुर ने भगवान पार्श्वनाथ पर उपसर्ग किया था और उसके अंत में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी, इसे जैन संप्रदाय में इस प्रकार प्रमाणित किया जाता है कि भगवान पार्श्वनाथ की जितनी भी प्रतिमाएँ हैं वे सर्पफण के युक्त हैं। वह फणमंडल प्रायः सात या नौ फणों का है। हालांकि सौ फणोवाली प्रतिमाएँ भी मथुरा एवं ओडीशा में मिली हैं। विभिन्न स्तोत्रों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

उनके पार्श्व नाम को लेकर दिगंबर एवं श्वेतांबर संप्रदाय के ग्रंथों में मतभेद है। श्वेतांबरों के शास्त्रों में कहा गया है कि उनका नाम पार्श्व इसलिए पड़ा कि उनकी माता ने अपने पार्श्व (बगल) में एक सर्प को देखा था। किंतु दिगंबर संप्रदाय के शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान का चमकता हुआ पार्श्व देखकर उनका नाम पार्श्व रखा गया।

कहा जाता है कि उनका विवाह राजा प्रसेनजित की पुत्री राजकुमारी प्रभावती के साथ हुआ था। किंतु इस संबंध में भी मतवैभिन्न है। कल्पसूत्र में उनके विवाह का उल्लेख नहीं है। परवर्ती रचनाओं में विवाह का उल्लेख मिलता है। यही नहीं कल्पसूत्र में उनके पूर्व भवों का उल्लेख भी नहीं कियां गया है। अधिकांश विद्वान उनके विवाहित होने का खंडन करते हैं।

अपने राज्य में उपलब्ध संसार की सभी भोग सम्पदायें विरक्त पार्श्वनाथ को आसक्त नहीं बना सकीं। तीस वर्ष की युवावस्था में वे प्रव्रजित हो गए। चार मास की तपस्या के बाद वे काशी के निकट दीक्षावन में आए। वे वन में प्रतिमायोग से दुर्द्धर तप करने लगे और धर्मध्यान में मग्न रहने लगे।

जीव नित्य है। वह अनादिकाल से इस संसार के झूठे मोह में पड़ा हुआ दुख भोग रहा है। यह जीव एक भव का अंत कर दूसरे भव में जन्म लेता है। इस तरह वह संसार में जन्म-मरण रूपी चक्र में पड़ा रहता है

कहा जाता है कि एक दिन वे देवदारु वृक्ष के नीचे सात दिन का योग लेकर धर्मध्यान में लीन बैठे थे। उसी समय कमठ का जीव शंबर नाम का असुर आकाश मार्ग से जा रहा था। उसने पार्श्वनाथ को तपस्या करते देखा। वह उनपर कुपित होकर महागर्जना तथा महावृष्टि करने लगा। इसी बीच एक सर्प का जोड़ा धरणेन्द्र और पद्मावती के रूप में ध्यान में लीन पार्श्वनाथ की रक्षा के लिए स्वतः आ गया। दोनों ने उनके मस्तक पर फण फैलाकर कमठ के उपसर्ग से उनकी रक्षा की।

हालांकि पार्श्वचरित में कहा गया है कि वे कौशांब नामक वन में कायोत्सर्ग की मुद्रा में विराजमान रहे, जहाँ नागराज धरणेंद्र ने उनकी पूजा की तथा तीन दिन तक उनपर छत्र लगाए रहा, जिसके कारण उस स्थान का नाम अहिछत्र पड़ा। यहाँ से वे राजपुर पहुँचे जहाँ के राजा ने एक चैत्य बनवा दिया, जो कुक्कटेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

चैत्र कृष्ण चतुर्दशी के दिन बनारस के अश्वत्थ वन में दिगंबर मुद्रा में विराजमान पार्श्वनाथ ने शंवरदेव के अत्याचारों से विचलित हुए बिना अपने ध्यान को इतना प्रबल बना लिया कि उन्हें उसी समय कैवल्य ज्ञान-सर्वज्ञता की प्राप्ति हो गई। वे अर्हत पद को प्राप्त कर तीर्थंकर एवं शुद्ध-बुद्ध जीवनमुक्त परमात्मा बन गए। उन्हें अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख एवं अनंत वीर्य की अपूर्व निधि प्राप्त हो गई। सुख, दुख, शोक, क्षुधा, तृषा, राग, द्वेष आदि सारी मानवीय दुर्बलताएँ समाप्त हो गईं।

कैवल्य ज्ञान प्राप्त होने के बाद उनका समवसरण भारत के विभिन्न स्थलों पर लगा, जहां उन्होंने धर्मोपदेश देकर सभी जीवों को आत्मकल्याण का मार्ग बतलाया। उन्होंने कुरु, कौशल, काशी, अवंती, पुंड्र, मालवा, अंग, बंग, कलिंग, पंचाल, मगध, विदर्भ, भद्र, दर्शार्ण आदि क्षेत्रों में धर्मोपदेश दिया।

धर्मानन्द कौसम्बी ने भगवान पार्श्व के बारे में कुछ मान्यताएं प्रस्तुत की हैं। उनके अनुसार परीक्षित का राज्य-काल बुद्ध से तीन शताब्दियों के पूर्व नहीं कहा जा सकता। परीक्षित के बाद जनमेजय गद्दी पर आया और उसने कुरु देश में महायज्ञ कर वैदिक धर्म का झण्डा फहराया। इसी समय काशी-देश में पार्श्व एक नयी संस्कृति की नींव डाल रहे थे। पार्श्व की नयी संस्कृति काशी राज्य में अच्छी तरह टिकी रही होगी, क्योंकि बुद्ध को भी अपने पहले शिष्यों को खोजने के लिए वाराणसी

ही जाना पड़ा था।

उन्होंने लगभग सत्तर वर्ष तक विहार किया। भगवान पार्श्वनाथ ने कहा कि यह लोक अनादिनिधन है। इसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत होगा। यह जैसा है वैसा ही रहेगा। परंतु इसमें परिवर्तन होता रहेगा। इन परिवर्तनों में एक पर्याय (स्थिति) की उत्पत्ति, उसका अस्तित्व और दूसरी का नाश होता रहता है। इस लोक में कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। सभी परिवर्तनशील हैं। पानी के बुलबुले की तरह वे क्षणभंगुर हैं। इसलिए इस परिवर्तनशील संसार के मोह में पड़ा रहना ठीक नहीं है। जीव नित्य है। वह अनादिकाल से इस संसार के झूठे मोह में पड़ा हुआ दुख भोग रहा है। यह जीव एक भव का अंत कर दूसरे भव में जन्म लेता है। इस तरह यद्यपि वह संसार में जन्म-मरण रूपी चक्र में पड़ा रहता है परंतु वह अपने मूल स्वभाव से अलग नहीं होता।

भगवान पार्श्वनाथ का धर्मोपदेश संसार से तप्त एवं भयभीत लोगों को शांति प्रदान करनेवाला है। सांसारिक विषयवासनाओं एवं आकांक्षाओं से ग्रस्त आत्मा को मुक्ति का मार्ग दिखानेवाला है।

अहिंसा और सत्य की साधना को समाज-व्यापी बनाने का श्रेय भगवान पार्श्व को है। भगवान पार्श्व अहिंसक परंपरा के उन्नयन द्वारा बहुत लोकप्रिय हो गए थे। इसकी जानकारी 'पुरिसादाणीय' (पुरुषादानीय) विशेषण के द्वारा मिलती है। भगवान महावीर भगवान पार्श्व के लिए इस विशेषण का सम्मानपूर्वक प्रयोग करते थे।

पार्श्व मुनि ने और भी एक बात की। उन्होंने अहिंसा को सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह - इन तीन नियमों के साथ जोड़ दिया। इस कारण पहले जो अहिंसा ऋषि-मुनियों के आचरण तक ही सीमित थी और जनता के व्यवहार में जिसका कोई स्थान न था, अब वह इन नियमों के संबंध से सामाजिक एवं व्यावहारिक हो गई।

पार्श्व मुनि ने तीसरी बात यह की कि अपने नवीन धर्म के प्रचार के लिए संघ बनाए। बौद्ध साहित्य से इस बात का पता लगता है कि बुद्ध के समय जो संघ विद्यमान थे, उन सबमें जैन साधु और साध्वियों का संघ सबसे बड़ा था।

पार्श्वनाथ के पहले ब्राह्मणों के बड़े-बड़े समूह थे, पर वे सिर्फ यज्ञ-याग का प्रचार करने के लिए ही थे। यज्ञ-याग का तिरस्कार कर उसका त्याग करके जंगलों में तपस्या करने वालों के संघ भी थे। तपस्या का एक अंग समझकर ही वे अहिंसा धर्म का पालन करते थे पर समाज में उसका उपदेश नहीं देते थे। वे लोगों से बहुत कम मिलते-जुलते थे।

बुद्ध के पहले यज्ञ-याग को धर्म मानने वाले ब्राह्मण थे और उसके बाद यज्ञ-याग से ऊब कर जंगलों में जानेवाले तपस्वी थे। बुद्ध के समय ऐसे ब्राह्मण और तपस्वी नहीं थे, ऐसी बात नहीं है, पर इन दो प्रकार के दोषों को देखने वाले तीसरे प्रकार के भी संन्यासी थे और उन लोगों में पार्श्व मुनि के शिष्यों को पहला स्थान देना चाहिए।

जैन परंपरा के अनुसार चातुर्याम धर्म के प्रथम प्रवर्तक भगवान अजितनाथ और अंतिम प्रवर्तक भगवान पार्श्व हैं। दूसरे तीर्थंकर से लेकर तेईसवें तीर्थंकर तक चातुर्याम धर्म का उपदेश चला। केवल भगवान ऋषभ और भगवान महावीर ने पांच महाव्रत धर्म का उपदेश दिया। निर्ग्रन्थ श्रमणों के संघ भगवान ऋषभ से ही रहे हैं, किंतु वे वर्तमान इतिहास की परिधि से परे हैं। इतिहास की दृष्टि से कौसम्बी की संघबद्धता संबंधी धारणा सही है।

भगवान पार्श्वनाथ का धर्मोपदेश संसार से तप्त एवं भयभीत लोगों को शांति प्रदान करनेवाला है। सांसारिक विषयवासनाओं एवं आकांक्षाओं से ग्रस्त आत्मा को मुक्ति का मार्ग दिखानेवाला है।

वस्तुतः पार्श्वनाथ ने देखा कि गहन वनों में वानप्रस्थ ऋषियों के बड़े-बड़े आश्रमों में प्रतिदिन बड़े समारोह के साथ अग्निहोत्र विधान किया जाता है। नरमेध, गोमेध आदि के नाम से जीवित प्राणियों के प्राण बलिवेदी पर चढ़ा दिए जाते हैं। स्वर्ग सुख की कामना और पितृऋण के भय के कारण परावलंबी जनता इस कार्य को अज्ञानतावश निरंतर किए जा रही है। ऋषिगण अपनी इंद्रियलिप्सा को विभिन्न रूपों में पूरा कर रहे थे। पार्श्वनाथ ने इसके विरुद्ध सत्य का सिंहनाद किया। परिणामतः उनका प्रचुर विरोध हुआ। परंतु साधारण जनता धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा के विद्रोह में खड़ी हो गई और पार्श्वनाथ की सत्याधारित सिद्धांतों में उसे जीवन का सच समझ में आने लगा।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ के मंदिर भारत में हजारों की संख्या में हैं। उनकी पहचान सर्प फण से की जाती है। अधिकांश जैन स्तुतिपरक साहित्य, भजन या स्तोत्र, तंत्र-मंत्र तथा चमत्कार से संबंधित साहित्य पार्श्वनाथ से संबंधित हैं।

जैन धर्मानुयायी उनकी निर्वाण स्थली सम्मेदशिखर स्थित पार्श्वनाथ टोंक तथा जन्म स्थली बनारस में भेलूपुर स्थित मंदिर की वंदना तथा दर्शन अपने जीवन में एक बार जरूर करना चाहता है।

पार्श्वनाथ जयंती पर काशी में एक भव्य शोभायात्रा निकलती है तथा विशाल अभिषेक तथा विशेष पूजन, अनुष्ठान भी आयोजित होता है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का देशना स्थल ग्वालियर धर्म, इतिहास, पुरातत्व, कला, संस्कृति एवं साहित्य के लिए विख्यात है। जैन धर्मावलम्बियों के लिए यह स्थल अत्यंत पूजनीय है क्योंकि जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ कई बार विहार करते हुए यहां पधारे थे और अपनी दिव्य ध्वनि से उन्होंने यहाँ उपदेश भी दिया था। इस बात का प्रमाण गोपाचल पर्वत पर उत्कीर्ण लगभग सात सौ वर्ष प्राचीन बयालीस फुट ऊंची तथा तीस फुट चौड़ी पद्मासन मुद्रा में तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है, जो मानो समवसरण और दिव्य देशना का आनन्द दे रही प्रतीत होती है।

तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी क्षमा, समता, दया, सहिष्णुता, धैर्य जैसे महान गुणों से जिनशासन पर सूर्य के समान आलोकित हैं, जहाँ उनका जीवन चरित्र सबके लिए प्रेरणादायी हैं, वही वे जिन धर्म की परंपरा प्रवाह के आधार स्तंभ भी हैं। वर्तमान परिवेश में जब समस्त विश्व में हिंसा, आतंकवाद, क्रोध और प्रतिशोध की दावाग्नि धधक रही हैं, वहां भगवान पार्श्वनाथ की उत्तम क्षमाशीलता ही विश्व को महाविनाश से बचाने की प्रेरणा देती है।

पार्श्वनाथ के कुल 10 गणधर थे। उनके प्रधान गणधर का नाम श्री स्वयम्भू था और मुख्य अर्यिका का नाम सुलोचना था। उनके मुख्य श्रोता श्री अजित थे। उनके अंतर्गत मुनियों की संख्या 16 हजार, आर्यिकाओं की संख्या 38 हजार, श्रावकों की संख्या एक लाख तथा श्राविकाओं की संख्या तीन लाख थी।

जीवन के अंतिम काल में भगवान पार्श्वनाथ बिहार राज्य में स्थित सुवर्णभद्र कूट पर्वत (श्रीसम्मेदशिखर) पर प्रतिमायोग धारण कर विराजमान हो गए और वहीं श्रावण शुक्ल सप्तमी को उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई। ■

भारत में हर वर्ष 15 अगस्त के दिन पूरे तामझाम के साथ सरकारी एवं कुछेक गैर-सरकारी संस्थाओं एवं सत्ताओं द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। यह समारोह कितना सार्थक है, यह विचारणीय प्रश्न और विवाद को आमंत्रण देने वाला है। देश की आजादी की लड़ाई के समय जिस स्वतंत्रता की कामना की गई थी, वह बहुसंख्यक देशवासियों तक कितनी पहुँची है और किस रूप में पहुँची है, उसपर तेरापंथ धर्मसंघ के दशवें अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के विचार मननीय हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में स्वतंत्रता दिवस के मायने

पंद्रह अगस्त को पूरे देश में मनाया जाने वाला स्वतंत्रता दिवस भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण दिन है। पंद्रह अगस्त को स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई थी। देश पर कब्जा जमाए बैठे अंग्रेज इस दिन भारत छोड़कर चले गए थे। हमने मान लिया कि हम स्वतंत्र हो गए। भारत को स्वतंत्र हुए कई दशक बीत गए। दशकों से इस दिन लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री तिरंगा फहराते आ रहे हैं। हर वर्ष जनता इस दिन प्रधानमंत्री को सुनती है। इस दिन नीति संबंधी महत्त्वपूर्ण घोषणाएं की जाती हैं। आगे की दिशा क्या होगी, इसका निर्धारण और खुलासा किया जाता है।

आज के दिन यदि कोई बाहर का मेहमान भारत आता है तो उसे वे स्थल दिखाए जाते हैं, जहां उच्च स्तर की तकनीक से बड़ी चीजों का उत्पादन किया जाता है, जहां इस्पात बनाए जाते हैं, जहां हवाई जहाज बनाए जाते हैं, जहां अरबों रुपयों का निवेश हुआ है, जहां से लाखों मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। उन्हें उन होटलों में ठहराया जाता है, जो स्वर्ग जैसी शान-शौकत वाले होते हैं। उन्हें एक अद्‌भुत लोक के दर्शन कराए जाते हैं और उन्हें बताया जाता है कि यह स्वतंत्र भारत की तस्वीर है। उस दिन दिल्ली के मुख्य मार्गों से भिखारियों को हटा दिया जाता है। इस बात का विशेष प्रबंध किया जाता है कि जहां तक उनकी नजर जाए, सब कुछ अच्छा दिखाई दे।

किंतु स्वतंत्रता रूपी सिक्के का यह एक ही पहलू है। दूसरा पहलू ठीक इसके विपरीत है। आज समाज में ऐसे लोग बहुसंख्यक हैं, जो स्वतंत्रता और परतंत्रता शब्द का मतलब भी नहीं जानते। उन्हें पता ही नहीं कि स्वतंत्रता किसे कहते हैं और परतंत्रता किसे कहते हैं? उनका सारा समय और सारा श्रम दो समय की रोटी के जुगाड़ में ही बीत जाता है। वह भी पूरी नहीं मिलती है। उन्हें और उनके बच्चों को कभी-कभी भूखे ही सोना पड़ता है।

ऐसे लोगों के लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ हो सकता है? उनके लिए कैसी स्वतंत्रता और कैसी परतंत्रता? सदियों से वे जैसे थे, वैसे ही आज भी हैं। दिल्ली पर कौन राज करे और कौन न करे उनको इससे क्या मतलब?

'स्वतंत्रता' एक प्रिय शब्द है। कोई भी व्यक्ति परतंत्र रहना नहीं चाहता। देश को स्वतंत्रता मिली, किंतु जो गांधीजी चाहते थे, वह स्वतंत्रता नहीं आई। राजनीतिक लोग जो चाहते थे, वह स्वतंत्रता जरूर मिल गई है। जब तक देश स्वतंत्र नहीं था, बहुत सारे लोग ऐसे लगते थे कि ये देश के लिए बलिदान करने वाले हैं, किंतु जैसे ही देश स्वतंत्र हुआ और सत्ता हाथ में आई, स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले कितने ही लोग फिसल गए। उनकी वर्षों की अतृप्त कामना जाग गई। चारित्रिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की बात भी गौण हो गई। केवल भौतिक आकांक्षा सिंहासन पर आकर बैठ गई। ऐसी स्थिति में बड़ा जटिल प्रश्न है कि स्वतंत्रता दिवस मनाने का जो एक उत्साह, जो उल्लास होना चाहिए, वह कैसे हो सकता है?

स्वतंत्रता शब्द वजनदार है। इसलिए स्वतंत्रता के ध्वज को उठाने वाले कंधे भी वजनदार होने चाहिए, हाथ भी मजबूत होने चाहिए। स्वतंत्रता के वाहक वे नहीं बन सकते, जो इसकी महत्ता को नहीं जानते, इसके मूल्य को नहीं जानते, राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को नहीं समझते, देशभक्ति की भावना जिनके मन में हिलोरें नहीं लेती, जो संवेदनहीन हैं, मानवीय गरिमा का जिन्हें ध्यान नहीं हैं, जो श्रम परांगमुख और स्वार्थी हैं।

आज आजाद भारत में यह मान्यता बन गई है कि आदमी को धन का प्रलोभन देकर कुछ भी कराया जा सकता है। यह काफी हद तक सच भी है। आज पूरे राष्ट्र के लिए यह चिंतन का विषय है। लेकिन चिंतन की आशा उनसे नहीं की जा सकती जो सत्ता के शीर्ष पर हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य यह है कि सत्ता में कैसे बने रहें।

स्वतंत्रता के बाद से ही लोगों में संग्रह की भावना बढ़ी और पूंजी का केन्द्रीकरण होने लगा। लोगों के मानस में न जाने कैसे एक बात घर कर गई कि ज्यादा से ज्यादा इकट्ठा करो। जितना ज्यादा तुम्हारे पास होगा, उतना ही सुखी बनोगे। परिणाम यह हुआ कि धन और पदार्थ के संग्रह की होड़ और आपाधापी में नैतिक मूल्य तिरोहित होते गए और वह स्थिति बन गई जिसे हम आज देख रहे हैं। परस्परावलंबन की जगह स्वार्थ हावी होने लगा। आदमी निरपेक्षवादी बनता चला गया। आदमी समस्याओं के चक्रव्यूह में घिरता चला गया।

स्वतंत्रता के साथ भौतिक विकास बढ़ा, धन बढ़ा, उद्योग व्यापार के क्षेत्र में प्रगति हुई, किंतु उसी के साथ-साथ विलासिता भी बढ़ी, अमीरी बढ़ी और इतनी बढ़ी कि अमीरी नग्न होकर सामने आ गई। स्वतंत्रता अपने साथ उच्छृंखलता, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, स्वार्थवृत्ति और अंधानुकरण की बीमारी भी लेकर आई। आज स्वतंत्रता का वह उल्लास कहां रहा, जो पंद्रह अगस्त 1947 के दिन था।

राजनीतिक आजादी के साथ-साथ मानसिक रूप से भी आजाद होना जरूरी है। गुलामी के भी अपने संस्कार होते हैं। वे संस्कार सहज ही तिरोहित नहीं होते। उनसे प्रयत्नपूर्वक स्वयं को मुक्त करना पड़ता है। उन संस्कारों से मुक्त नहीं हुए, दासत्व भाव बना रहा तो यह आजादी बहुत सार्थक सिद्ध नहीं होगी।

आजादी के साथ यदि मनुष्य का दिमाग भी आजाद होता है तो आजादी का अपना एक अलग अनुभव होता है। दिमाग परतंत्र बना हुआ है तो मिली हुई आजादी भी नकली आजादी बनी हुई है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में आज असली शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण बना हुआ है। असली आजादी वह है, जिसमें मुक्तता का सुख मिले। आजादी मिली और सुख का अनुभव नहीं है तो उस आजादी का अर्थ क्या रहा? असली आजादी का मतलब है कि हमारी सत्ता, हमारा शासन और हम सब भयमुक्त रहें। अभय आजादी का पहला सुख है। भय और भीति बनी रही तो वह गुलामी की ही स्थिति कही जाएगी।

आजादी आदमी के मन में अभय की चेतना का संचार करती है। क्या आजाद भारत के नागरिक स्वयं में अभीति का अनुभव करते हैं। उत्तर नकारात्मक होगा। इसलिए पंद्रह अगस्त को प्राप्त आजादी के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि यह असली आजादी है। असली आजादी के साथ अध्यात्म का पुट देना होगा। अध्यात्म के बिना केवल पदार्थवादी अवधारणा किसी

के मन में अभय की चेतना पैदा नहीं कर सकती।

राजनीति के कीटाणु आज समाज में भी प्रविष्ट हो चुके है। परस्पर गुटबाजी, सत्तासीन दल के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप और उखाड़ पछाड़ का खेल खेला जा रहा है। सारा समय यूं ही बीत जाता है और उपलब्धि के नाम पर कुछ भी नहीं मिलता।

सबसे बड़ी बीमारी है सत्ता की बीमारी। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो या आर्थिक क्षेत्र, उस पर कब्जा जमाने की होड़ हमेशा चलती है। सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षा इन्हीं दो क्षेत्रों में देखी जाती है। योग्यता और नेतृत्व का गुण हो तो आकांक्षा कोई बुरी बात नहीं है, किंतु जो अपना परिवार भी ठीक से नहीं चला सकते, वे जनता का नेतृत्व करने का सपना पालते हैं। परिणाम आसानी से समझा जा सकता है। योग्यता और पद - दोनों का समन्वय हो तो सार्थक काम की आशा की जा सकती है। भारत के हर नागरिक में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री पद की योग्यता हो, किंतु इस पद के लिए संघर्ष की स्थिति न बने। योग्यता और पद में संतुलन हो तो सत्ता के क्षेत्र में कोई समस्या पैदा नहीं होगी।

हिंदुस्तान कभी परतंत्र नहीं होता, यदि यहां के शासक चारित्रिक दृष्टि से दुर्बल न होते। अतिशय भोल-विलास, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष, लोभ की प्रबल मनोवृत्ति - ये सब गुलामी के कारण बने। यहां के शासकों ने ही बाहर के आक्रांताओं को आमंत्रित किया, उनकी हरसंभव सहायता की, तब कहीं जाकर बाहर की शक्तियों को हिंदुस्तान में पैर जमाने का मौका मिला।

चुनाव बड़ी अच्छी बात है, किंतु यह अक्सर दुरूह हो जाता है। धनबल और बाहुबल आज सभी क्षेत्रों में हावी होता जा रहा है। चुनावों में इन दो तरह की ताकतों का प्रदर्शन आज खुलेआम हो रहा है। यदि अध्यात्म की चेतना जाग जाए तो व्यक्ति ऐसा नहीं करेगा। किसी भी पद के बारे में सोचने से पहले वह अपनी योग्यता के बारे में सोचेगा।

जब तक अध्यात्म, चरित्र और नैतिकता का विकास नहीं होता, तब तक आजादी को असली नहीं माना जा सकता और आजादी का असली सुख भी प्राप्त नहीं किया जा सकता।

मेरा मानना है कि स्वतंत्रता के साथ अगर विसर्जन का सूत्र राष्ट्र के नागरिकों के दिमाग में जम जाता तो शायद समस्याएं इतना विस्तार न ले पातीं। किंतु उल्टा हो गया। समस्याओं का मकड़जाल इतना गहरा और पेचीदा है कि सबका समाधान करना बहुत कठिन काम है। समाधान की दिशा में प्रयत्न हुआ है, हो रहा है, किंतु ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि समस्याएं सब सुलझ गई हैं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि नहीं सुलझी हैं। दोनों बातें हमारे सामने हैं। चिंतन इस पर होना चाहिए कि समस्याएं क्यों नहीं सुलझ रही हैं?

आज लोग कहते हैं देश में गरीबी की बड़ी समस्या है, जबकि मैं देख रहा हूं अमीरी की समस्या उससे ज्यादा भयंकर रूप ले रही है। मैं स्पष्ट कहता हूं कि अमीरी की समस्या गरीबी की समस्या से बहुत ज्यादा खतरनाक है। अमीरी तभी सुरक्षित रह सकती है, जब वह गरीबी की चिंता करे। अगर गरीबी की चिंता नहीं की तो अमीरी बहुत दिन तक सुरक्षित रहने वाली नहीं है। जो अमीर हैं, संपन्न हैं वे अपने भीतर त्याग की चेतना को जागृत करें और उपभोग की सीमा करें। वे इतनी उपभोग सामग्री न जुटाएं जो किसी के लिए अभाव का कारण बने। जिस देश में लाखों लोगों को सिर छुपाने की जगह न मिल रही हो, वहां भवन को वातानुकूलित और सुसज्जित करने के लिए करोड़ों रुपये लगा दिए जाएं, वह कोई स्वतंत्र देश नहीं कहा जा सकता। वह तो स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने वाला देश होगा। जो देश इस बात की स्वतंत्रता देता है, उसका नियम, कानून, विधान दोषपूर्ण है, यह निःसंकोच कहा जा सकता है। जहां असीम भोग की स्वतंत्रता है, वहां भ्रष्टाचार का होना अनिवार्य है।

यही भारत था, जहां कभी अध्यात्म की गंगा बहती थी। दुनिया की अन्य सभ्यताएं हमारे यहां आकर ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा लेती थीं। दुनियाभर के लोग आचार

और नैतिकता का शिक्षण लेने के लिए भारत आते थे और यहां अध्यात्म का पाठ पढ़ते थे।

आचार और चरित्र की दृष्टि से हम धीरे-धीरे दरिद्र होते गए और आज स्थिति यह है कि यूरोप के देश जो कभी अध्यात्म के लिए हमारे देश में सीखने के लिए आते थे, हमारी हँसी उड़ाते हैं। भ्रष्टाचारी देशों की सूची में भारत का नाम काफी ऊपर है। हजार-दो हजार रुपयों में इस देश का बड़ा अधिकारी भी बिक जाता है।

चरित्र ही तो किसी भी राष्ट्र की मूल पूंजी होती है और इसी की सबसे ज्यादा उपेक्षा की गई। दुनिया की बड़ी-बड़ी सभ्यताएं विलीन और नष्ट हो गईं। इसका कारण यही है कि चरित्र और आचार शिथिल होता है तो कुछ भी शेष नहीं रह जाता।

आज लोग कहते हैं देश में गरीबी की बड़ी समस्या है, जबकि मैं देख रहा हूं अमीरी की समस्या उससे ज्यादा भयंकर रूप ले रही है। मैं स्पष्ट कहता हूं कि अमीरी की समस्या गरीबी की समस्या से बहुत ज्यादा खतरनाक है। अमीरी तभी सुरक्षित रह सकती है, जब वह गरीबी की चिंता करे। अगर गरीबी की चिंता नहीं की तो अमीरी बहुत दिन तक सुरक्षित रहने वाली नहीं है।

चरित्र को खोकर कोई दीर्घकाल तक अपना अस्तित्व सुरक्षित नहीं रख सकता। हिंदुस्तान कभी परतंत्र नहीं होता, यदि यहां के शासक चारित्रिक दृष्टि से दुर्बल न होते। अतिशय भोल-विलास, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष, लोभ की प्रबल मनोवृत्ति - ये सब गुलामी के कारण बने। यहां के शासकों ने ही बाहर के आक्रांताओं को आमंत्रित किया, उनकी हरसंभव सहायता की, तब कहीं जाकर बाहर की शक्तियों को हिंदुस्तान में पैर जमाने का मौका मिला।

बिना चारित्रिक सबलता के हम आजादी के पात्र नहीं हो सकते और आजादी को अक्षुण्ण भी नहीं रख सकते।

आज आजाद भारत में यह मान्यता बन गई है कि आदमी को धन का प्रलोभन देकर कुछ भी कराया जा सकता है। यह काफी हद तक सच भी है। आज पूरे राष्ट्र के लिए यह चिंतन का विषय है। लेकिन चिंतन की आशा उनसे नहीं की जा सकती जो सत्ता के शीर्ष पर हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य यह है कि सत्ता में कैसे बने रहें। देश का हर चिंतनशील नागरिक देश की स्वस्थता के लिए निरंतर दीर्घकाल तक चिंतन करे। व्यक्ति शरीर को पुष्ट रखने के लिए समय-समय पर भोजन करता है, किंतु मन की मजबूती और दृढ़ता के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया जाता। मेरा मानना है कि यदि चिंतन की इस प्रक्रिया को अपनाया जाए तो समस्या जैसी कोई बात नहीं रहेगी। यदि प्रारंभ से ही ठोस चिंतन होता तो आज हिंदुस्तान के सामने गरीबी और भुखमरी की समस्या नहीं होती। हिंसा और आतंकवाद, अलगाववाद की समस्या भी नहीं होती। लेकिन हम कार्य को मिटाना चाहते हैं, किंतु कारण को और आधार को बरकरार रखते हुए ऐसा हो नहीं सकता।

जैसे-जैसे उपभोगवादी मनोवृत्ति बढ़ रही है, वैसे-वैसे उपभोग की सामग्री बढ़ रही है। देशी और बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए नये-नये आकर्षक उत्पाद बाजार में ला रही हैं, इस दुष्चक्र में देश की आबादी का कुछ हिस्सा तो शामिल हो सकता है, किंतु अधिकांश लोगों के मन में एक उग्र प्रतिक्रिया ही पैदा होगी, जिसका विस्फोट एक दिन अनिवार्य रूप से होने वाला है। स्वतंत्रता की सुरक्षा हम त्याग के बिना नहीं कर सकते, इस बात पर बहुत गहराई से चिंतन करना है।

मुझे लगता है कि उपभोगवादी मनोवृत्ति के कारण विकास की असंतुलित अवधारणा और भौतिक पक्ष के अतिरेक के कारण कहीं ऐसा न हो कि एक दिन आदमी को भी यह कहना पड़े कि हमें यह विज्ञान और विकास कुछ भी नहीं चाहिए। हमें तो सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी की परंपरा में ही वापस पहुंचा दो।

मुझे तो आश्चर्य होता है कि आज के जो बड़े नेता हैं और देश को चलाने की जिन पर जिम्मेदारी हैं, वे गंभीरता से इस प्रश्न पर विचार नहीं करते। मुझे ऐसा लगता है जैसे इस राष्ट्र का कोई माता-पिता नहीं है।

चुनाव में जीतकर आते हैं और अपना समय पूरा कर या बीच में ही लड़-झगड़कर वापस चले जाते हैं।

राष्ट्र के हितों की निरंतर चिंता करने वाला कोई वर्ग नहीं है। आज की राजनीति तो यह है कि पहले वाले के निर्णय को कैसे और किस प्रकार बदला जाए? पहले वाले के काम में कितनी कमियां और खामियां निकाली जाएं। सत्ता में आने के बाद सबका यही नजरिया होता है और उनकी बहुत सारी ऊर्जा और शक्ति इसी काम में खप जाती है। उसके बाद कोई दूसरा आता है तो उसका भी यही काम हो जाता है। यह क्रम निरंतर जारी रहता है। कोई किसी की परंपरा का संवाहक नहीं बनता। यह एक बड़ी समस्या है और इस पर गहन चिंतन की जरूरत है।

स्वतंत्रता का मूल्य त्याग में है। स्वाधीनता और त्याग दोनों में गहरा संबंध है। जहां त्याग है, वहां स्वतंत्रता है और जहां स्वतंत्रता है, वहां त्याग अनिवार्य रूप से होना चाहिए। मैं यह मानता हूं कि भारत की स्वतंत्रता को सार्थक करना है तो त्याग की चेतना को जगाना बहुत आवश्यक है। कोई और दूसरा विकल्प नहीं है।

दशकों से उठाए जा रहे प्रमुख सवालों में से कितने सुलझे और कितने अनसुलझे रहे, यह चिंतन का विषय है। आजादी मिले इतने वर्ष हो गए। इतने लंबे समय में हम देश के सभी लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था भी सुलभ नहीं करा पाए। समाज के दबे-कुचले लोगों को रोटी तक सुलभ नहीं करा सके। इससे बड़ी असफलता हमारी और क्या हो सकती है? ■

हम ऐसा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सभी व्यक्तियों को, भंगियों तक को समान अधिकार प्राप्त हो।

– महात्मा गांधी

आर्थिक आजादी के बिना, और जब तक गरीबी न मिटे, तब तक असली आजादी हो ही नहीं सकती। भूखे आदमी से कहना कि तुम आजाद हो ... सिर्फ उसका मजाक उड़ाना है।

– जवाहरलाल नेहरू

जब तक समाज में धर्ममय अर्थशास्त्र की प्रस्थापना नहीं होती, सर्वोदय करने वाले, मानव को शोभा देने वाले अर्थशास्त्र की स्थापना नहीं होती, तब तक संसार में सच्ची स्वतंत्रता नहीं आ सकती। आज जो स्वतंत्रता है, वह तो उसका ढोंग है, उसकी परछाई है, स्वतंत्रता का भूत है। सच्चे अर्थ में मंगलदायक एवं आनन्ददायक, बिना अपवाद के सबका सर्वांगीण विकास करने वाली स्वतंत्रता अभी बहुत दूर है।

– साने गुरुजी

स्वाधीनता का अर्थ उत्तरदायित्व है। यही कारण है कि अधिकांश मनुष्य उससे डरते हैं।

– जार्ज बर्नार्ड शॉ

व्यापक रूप से भ्रष्ट जनसमाज में स्वतंत्रता चिरस्थायी नहीं हो सकती।

– एडमंड बर्क

स्वाधीनता! ओ स्वाधीनता! तेरे नाम पर क्या-क्या अपराध नहीं किए जाते हैं!

– मेरी जीन रॉलैंड

अशुभ कर्मोदय से प्राणी को आत्मग्लानि होती है

साध्वी जयमाला

संसार में प्रत्येक प्राणी के साथ कर्मों का संबंध जुड़ा हुआ है। प्रत्येक प्राणी कर्मों के कारण ही संसार में चार गतियों में परिभ्रमण करता रहता है। कभी अशुभ कर्म के उदय होने पर नरक और तिर्यंच में और शुभ कर्मोदय के उदय होने पर मनुष्य और देव गति में जन्म लेता है।

यह शाश्वत सत्य है कि कृत कर्मों का भुगतान अवश्य करना पड़ता है। देर-सबेर हो सकती है मगर जो कर्म हमने उपार्जित किए हैं वे तुरंत भी फल दे सकते हैं या एक जन्म से दूसरे जन्म में भी उत्पन्न हो सकते हैं।

जैसे भूमि में बीज डालते ही तत्काल अंकुरित नहीं होता। उस बीज को वृक्ष बनने और फलने में वर्षों लग जाते हैं, जन्मते ही बच्चा नौजवान नहीं होता, धीरे-धीरे विकास करके बड़ा होता है। इसी प्रकार शुभ और अशुभ कर्मों के फल भी परिपक्व होने पर ही उदयावस्था में आते हैं।

कई बार देखा जाता है कि जन्मते ही बच्चे को कई रोग हो जाते हैं। इसका कारण है पिछले जन्म के कर्म, जो पूर्व जन्म में किए गए थे उनके फल इस जन्म में पैदा हुए हैं। भगवान महावीर ने कहा है कि अतीत में जैसे भी कर्म किए हों, भविष्य में किसी न किसी जन्म में उनका भुगतान करना ही पड़ता है।

भगवान ऋषभनाथ के जीवन से पता चलता है कि पशुओं के मुँह पर बारह घंटे तक लगाई गई छींकी के कारण उन्हें भावी जीवन में बारह महीने भोजन-पानी नहीं मिला। भगवान महावीर ने भी पिछले अनेकों भवों में कर्मों का संचय किया था, अतः वे ही कर्म उदय में आए और उन्होंने उन उपसर्गकर्ताओं पर रोष नहीं किया अपितु उपकारी मानकर समता से सहन किया।

कर्मवाद का एक सिद्धांत है - किया हुआ कर्म फल अवश्य देता है। बिना परिपाक या विपाक हुए कोई भी कर्म फल नहीं देता। भगवान महावीर से गौतम स्वामी ने पूछा - भगवन कर्म संबंध कितने स्थानों से होता है? भगवान ने कहा - दो स्थानों से कर्म संबंध होता है। पहला स्थान राग का और दूसरा स्थान है द्वेष का। इन दो स्थानों से आत्मा के साथ कर्मों का संबंध होता है।

जीव को दो प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। एक प्रीत्यात्मक और दूसरी अप्रीत्यात्मक अनुभूति। प्रीति और अप्रीति इन दो के अतिरिक्त तीसरी कोई संवेदना नहीं होती। सारी अनुभूतियां इन दोनों में समाहित हो जाती हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ - ये सारे इन्हीं दो अनुभूतियों के विस्तार हैं। स्वतंत्र अनुभूतियाँ नहीं हैं।

भगवान महावीर ने कहा कि राग और द्वेष दोनों कर्म के बीज हैं। कर्म मोह से उत्पन्न होता है और वह जन्म-मरण का मूल है। जन्म-मरण को दुःख का मूल कहा गया है।

प्रत्येक प्राणी के कर्मों का बंध तीन प्रकार से होता है - तीव्र, मंद और मध्यम। तीव्र आसक्ति से प्रवृत्ति करता है *उसके सघन कर्मों का बंध होता है। एक आदमी जीवन*-निर्वाह के लिए अनासक्त भाव से प्रवृत्ति करता है तो कर्मों का बंधन भी हल्का होता है। तीव्र अध्यवसाय से किए गए कार्य का फल भी उसी प्रकार आत्मा के साथ चिपकते हैं। दलित कर्म शुभ प्रवृत्ति से अलग हो सकते हैं। लेकिन निकाचित कर्मों का बंधन तो तदनुरूप से भोगना ही पड़ता है। तीव्र अध्यवसाय से जो कर्म बंधते हैं उसकी परिणति उसी रूप में होती है। जैसे स्कन्धक मुनि के बारे में कहा गया है कि उन्होंने पूर्व भव में एक काचर नामक सब्जी को कहीं तोड़े बिना पूरा छिलका एक साथ उतारी थी। उसी काचर के जीव ने पंचेन्द्रिय में जन्म लेकर राजा बनकर बदला लेने के लिए स्कन्धक मुनि की चमड़ी छिलवाई।

ऐसे अनेकों उदाहरण कर्मशास्त्र में भरे पड़े हैं। प्राणी जैसा भी कार्य करता है उसका फल अवश्य मिलता है।

एक संन्यासी अपनी कुटिया में साधना करता था। उसके पास भक्त लोग अपनी समस्याओं का समाधान पाने के लिए आते रहते थे। एक दिन संन्यासी को चिंतित देखकर एक खास भक्त ने पूछा - महाराज, आप इतने चिंताग्रस्त क्यों दिखाई दे रहे हैं? चिंता तो उन्हें होती है जो क्रोध, लोभ, काम-वासना, अहंकार आदि वृत्ति से ग्रस्त होते हैं। पर आपने तो अपने मन पर नियंत्रण कर रखा है फिर चिंता क्यों?

संन्यासी ने गंभीर होकर आत्म-व्यथा सुनाई। उसने कहा कि संन्यास से पूर्व मैं एक निर्धन महाजन था। मैं अपनी छोटी बहन के साथ कुटिया में रहता था। बहन शादी के लायक थी, मगर अर्थ के अभाव में शादी नहीं कर पा रहा था। समय बीत रहा था। एक दिन एक अजनबी व्यक्ति रात्रि में विश्राम करने हमारी कुटिया में आया। हमने उसे स्थान दिया। वह व्यक्ति प्रदेश से व्यापार करके काफी धन कमाकर अपने घर जा रहा था। प्रचुर मात्रा में धन देखकर बहन का मन ललचा गया। जब वह व्यापारी निश्िंचत होकर सो गया तो लोभ के वशीभूत मेरी बहन ने व्यापारी का गला घोंटकर हत्या कर दी और सारा धन लेकर मेरे पास आ गई। मैंने भी लोभवश सारा धन ले लिया। उसके शव को गड्ढा खोदकर मिट्टी में दबा दिया।

अब मैंने उस धन से व्यापार शुरू किया। पुरुषार्थ और भाग्य ने अच्छा सहयोग दिया। पैसा अच्छा कमा लिया। बहन की शादी भी पढ़े-लिखे पैसे वालों के साथ कर दी। मैंने भी अपनी शादी कर ली। प्रसन्नता से समय बीतने लगा। भाग्य से घर का चिराग भी आ गया। पढ़ा-लिखाकर व्यवसाय में लगा दिया। अच्छी लड़की के साथ शादी भी कर दी। मगर कर्मों का चक्र ऐसा चला कि एक साथ अनेक विपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा।

बहन-बहनोई का अचानक स्वर्गवास हो गया। लड़का भी असाध्य रोग से ग्रस्त हो गया। डाक्टरों, वैद्यों, तंत्र-मंत्र के चक्कर में सारा कमाया हुआ धन पानी की तरह बहा दिया परंतु लड़का ठीक नहीं हुआ। अर्थाभाव के कारण नींद, भूख सब गायब हो गई। अहर्निश चिंता में समय बीत रहा था।

एक दिन बहुत दुखी होकर बेटे से कहा - 'बेटा! तेरी बीमारी में सारा पैसा खर्च हो गया। अब तेरा इलाज कैसे कराऊंगा।'

बेटे ने कहा - 'पिताजी अब इलाज की आवश्यकता नहीं, मैं तो कल संसार से विदा हो जाऊँगा। पिताजी मैं वही यात्री हूँ, जिसका धन आपकी बहन और आपने मुझे मारकर हड़प लिया था। मैंने पूर्वभव का बदला लेने के लिए आपके घर में पुत्र रूप में पैदा हुआ। आपकी बहन बिना सुख भोगे पति का वियोग सहा और स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हुई। तुम भी धनविहीन होकर दरिद्र हो गए। अब बेटा, धन सब कुछ खोकर दुःखी हो गए। तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल मिल गया।'

संन्यासी ने कहा कि यह सुनकर मैं स्तंभित रह गया। इसके बाद मेरे मन में वैराग्य-भावना जाग गई। संसार की अनित्यता का भान हो गया। अगला जीवन अच्छा बने इसलिए संन्यास ले लिया। ■

कहानी

कातर नयनों का पानी

डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

सुबह-सुबह तेज वर्षा हुई थी। तन-मन को जलानेवाली भयंकर गर्मी में बेहाल लोग तन मन से भींग उठे थे। वर्षा आते ही मौसम अचानक सुहावना लगने लगा था। पेड़ों पर किसलयों के मन में रोमांच जाग रहा था। वे उत्फुल्ल होकर लहलहाने लगे थे। गलियों में बच्चे रिमझिम बरसते मेघकणों के साथ अठखेलियाँ कर रहे थे। वर्षा की रफ्तार कमते ही लोग हल्की बूंदाबांदी में ही अपने रंग-बिरंगे छाते ताने घर से दफ्तर, स्कूल, कारखाने और नौकरी-धंधों के लिए निकल पड़े।

एक निजी कंपनी के मुलाजिम प्रबोध कुमार भी उन्हीं में से एक थे, जो आज अधिक ही खुश थे। वर्षा ने जहाँ शरीर को शांति दी थी, लड़के वाले के यहाँ से उनकी लड़की के रिश्ते के लिए स्वीकृति का संदेश उनके मन को आह्लाद की बूंदों से सराबोर किए हुए था।

प्रबोध कुमार की एकमात्र संतान एक लड़की थी। वह जितनी खूबसूरत थी उतनी ही संस्कारी और विनीत भी। मध्यवित्त होने के बावजूद प्रबोध कुमार ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला था और उसे पढ़ा-लिखाकर इस योग्य बनाया था कि वह अपना जीवन अच्छी तरह सम्मान के साथ जी सके। लड़की शादी के योग्य हो चुकी थी और प्रबोध कुमार एक योग्य लड़के की तलाश में थे।

पिछले दिन प्रबोध कुमार इसी संबंध में एक रिश्तेदार के यहाँ गए थे। उनको लड़का पसंद आया था। लड़के का स्वभाव-संस्कार भी अच्छा था। प्रबोध कुमार ने पत्नी से परामर्श किया और अपनी ओर से संतुष्ट होकर घर आ गए। लड़केवालों ने सोचकर बताने का भरोसा दिया था। और उसी रात को उनका संदेश आ गया कि उन्हें रिश्ता मंजूर है। पति-पत्नी दोनों ने संतोष की सांस ली। दोनों ही बहुत खुश थे। उन्हें भरोसा था कि अब बेटी अच्छे परिवार में जाएगी और उसका दांपत्य सानन्द बीतेगा।

घर आकर उन्होंने अपनी पत्नी के साथ शादी के संबंध में तरह-तरह से सोचा। अनेक योजनाएँ बनाईं। तरह-तरह के मंसूबे बांधे। बातों में रात कब निकल गई पता नहीं चला।

आज वर्षा की परवाह किए बिना वे जल्दी-जल्दी कार्यालय जाकर अपने शुभचिंतक प्रबंधक को सबकुछ बताकर अपनी खुशियाँ बांटना चाहते थे। प्रबोध कुमार जिस व्यावसायिक प्रतिष्ठान में पिछले दस वर्षों से कार्य कर रहे थे, वहाँ उनकी ईमानदारी, कार्यनिष्ठा और

सबके प्रति सद्भाव से बड़े-छोटे सभी कर्मचारी खुश रहते थे। प्रतिष्ठान के प्रबंधक का प्रबोध कुमार पर बड़ा भरोसा था। वे तिजोरी की चाभी तक उनके पास छोड़कर मीटिंग आदि में चले जाते थे। ऐसा कितनी बार हुआ था। वे जब भी लौटते तो उन्हें सारा हिसाब सही मिलता। अतः प्रबंधक का प्रबोध कुमार पर अतिरिक्त स्नेह था।

प्रबोध कुमार ने मन ही मन सोचा कि प्रबंधक महोदय से मिलकर जब यह खुशखबरी दूंगा को साथ ही शादी के समय होने वाले खर्च हेतु कुछ रुपये अग्रिम देने के लिए अनुरोध भी करूँगा।

किंतु उस दिन जब वे कार्यालय पहुँचे तो प्रबंधक महोदय किसी अत्यावश्यक कार्य से बाहर निकल रहे थे। वे बड़ी जल्दी में थे। जाते हुए उन्होंने प्रबोध कुमार को बुलाया और कहा कि आज प्रतिष्ठान में जो रुपया आए उसे संभालकर तिजोरी में रख दें और तिजोरी की चाभी अपने घर ले जाएँ, क्योंकि आज उन्हें वापस आने में देरी हो सकती है।

प्रबोध कुमार अपनी जगह पर पहुँचे और काम मे लग गए। कुछ ही देर बाद एक पार्टी ने एक लाख रुपये जमा कराए। प्रबोध कुमार ने उसे अच्छी तरह गिना और अपनी दराज में यह सोचकर रख दिया कि बाद में और जो भी रुपये आएँगे उन सभी को इकट्ठे तिजोरी में रख देंगे।

इसी बीच प्रतिष्ठान के एक अन्य कर्मचारी से एक ग्राहक का किसी बात पर झगड़ा होने लगा। बहुत अधिक शोरगुल होने पर प्रबोध कुमार उसे शांत कराने के लिए अपनी जगह से उठकर उसके पास गए और दोनों को समझा-बुझाकर शांत किया और फिर आकर अपने काम में लग गए। महीने की पहली तारीख होने के कारण प्रतिष्ठान में भीड़भाड़ अधिक थी और काम का बोझ भी ज्यादा था। वे देर रात तक काम में व्यस्त रहे और जाने के समय दराज के सारे रुपयों को जल्दी-जल्दी में तिजोरी में रखा और घर चले गए।

इसी प्रतिष्ठान में बिन्नी दास नामक एक कर्मचारी काम करता था, जो खल प्रकृति का था और दूसरे की निंदा करने या अकारण नुकसान पहुँचाने में आनंद की अनुभूति करता था। प्रबोध कुमार के प्रति प्रबंधक के स्नेह से उसे बहुत जलन होती थी। जब कभी प्रबंधक प्रबोध कुमार से प्यार से बात करते तो उसके कलेजे पर सांप लोट जाता। वह मन ही मन इतना कुढ़ जाता कि उसका सारा दिन उदासी में बीतता। वह हमेशा इस मौके की तलाश में रहता कि किस प्रकार प्रबोध कुमार को नीचा दिखाए और सबकी नजरों में गिराए।

प्रबंधक बिन्नी के स्वभाव से परिचित थे। उन्हें उसकी ईमानदारी पर भी संदेह था, लेकिन प्रतिष्ठान में अन्य कर्मचारियों के बीच उसके विशेष उठने-बैठने के कारण तथा किसी भी बात पर हंगामा खड़ा करने के तिकड़मी स्वभाव के कारण वे उससे एक दूरी बनाकर रखते थे। उन्होंने प्रबोध कुमार को कह रखा था कि बिन्नी पर कड़ी नजर रखे और उससे सावधान भी रहे। परंतु प्रबोध कुमार सीधे-साधे स्वभाव के व्यक्ति थे और किसी के प्रति दुर्भाव नहीं रखते थे। प्रबंधक के कहने पर भी वे बिन्नी के साथ जानबूझकर कभी खराब व्यवहार नहीं करते थे।

अगले दिन प्रबोध कुमार को प्रतिष्ठान पहुँचने में थोड़ी देरी हो गई। प्रबंधक महोदय उनका इंतजार कर रहे थे। उन्होंने जाते ही तिजोरी खोली और सारे रुपये निकालकर उन्हें दे दिया और कल के सारे लेनदेन का हिसाब और तिजोरी की चाभी भी सौंप दी। प्रबंधक को खुशखबरी सुनाने के लिए वे उचित अवसर की तलाश करने लगे।

प्रबंधक ने उन्हें बैठने के लिए कहा और हिसाब मिलाने लगे। जमा पर्ची और प्राप्त रुपयों की गिनती की तो उसमें एक लाख रुपये कम निकले। प्रबोध कुमार ने कई बार रुपयों को गिना, कभी दराज देखी, कभी तिजोरी देखी, परंतु रुपये नहीं मिले। उनकी घबराहट बढ़ गई। माथे पर पसीना आने लगा। कहाँ तो वे खुशखबरी देने वाले थे और कहाँ ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि वे स्वयं संदेह के घेरे में आ गए। मन में तरह-तरह के विचार

आने लगे। लड़की की शादी की बात करूँगा तो प्रबंधक को संदेह होगा कि मैंने रुपये जान बूझकर गायब किए हैं। उनका सर चकराने लगा। यह क्या हो गया? आखिर रुपया गया कहाँ? ईश्वर यह कैसी परीक्षा ले रहा है?

उनकी हालत देखकर प्रबंधक महोदय भी थोड़े चिंतित हुए। परंतु उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर रुपये कहाँ गए? प्रबोध कुमार पर संदेह करना वे उचित नहीं समझते थे। वे उसे पिछले काफी वर्षों से जानते थे। लाखों रुपये उनके भरोसे छोड़कर गए थे। कभी कोई गड़बड़ी नहीं हुई। आज यह क्या हुआ?

उन्होंने प्रबोध कुमार से कहा कि वह घबराए नहीं, शांति से सोचे कि रुपये कहीं और तो नहीं रख दिया है?

प्रबोध कुमार हर जगह रुपये ढूढ़े। पर वह नहीं मिला। शाम को वे घर गए तो उन्हें बहुत उदास देखकर पत्नी ने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने उसे सारी बातें बताईं।

सुनकर पत्नी बहुत परेशान हुई। प्रबोध कुमार के जीवन में यह पहली घटना थी। उनसे कभी कोई लापरवाही नहीं हुई। फिर आज अचानक यह कैसे हुआ। रुपये भी कम नहीं हैं। उनकी तो औकात भी नहीं है कि उसे भरा जाए। फिर भी उसने ढाढ़स बधाते हुए कहा कि कोई बात नहीं, रुपये गए हैं तो गए हैं, लड़की की शादी के लिए जो बचाकर रखे गए हैं, उन्हीं से हर्जाना भरा जाएगा। शादी के बारे में बाद में सोचा जाएगा। ऐसा कहकर उसने उन्हें सांत्वना दी और पूछा कि क्या कार्यालय में ऐसा कोई है जिसने वहाँ से रुपये गायब कर दिए हों?

तभी प्रबोध कुमार के माथे में एक विचार कौंधा। संभव है यह काम बिन्नी ने किया हो। परंतु उनका सरल हृदय किसी पर लांछन लगाना नहीं चाहता था। एक बात हल्की-हल्की स्पष्ट होने लगी कि जब कार्यालय में शोरगुल हुआ था तो वे दराज खुली छोड़कर ही चले गए थे और उस समय बिन्नी आसपास ही था। तो क्या...!

X X X

उस दिन दरअसल हुआ यह कि बिन्नी ने प्रबोध कुमार को रुपये दराज में रखते देखा था और जब शोरगुल मचा और प्रबोध कुमार अपनी कुर्सी छोड़कर चले गए तो उसने मौका देखकर दराज से रुपये का वह बंडल निकाल लिया था। उसे एक बड़ा मौका मिला था कि वह प्रबोध कुमार को प्रबंधक की नजरों में गिरा देगा और साथ ही एक अच्छी रकम भी प्राप्त कर लेगा।

X X X

दूसरे दिन जब प्रबोध कुमार कार्यालय पहुँचे तो प्रबंधक ने पूछा कि क्या रुपयों का कुछ पता चला?

प्रबोध कुमार ने उन्हें पिछले दिन की सारी घटनाएँ बताईं। प्रतिष्ठान से निकलकर रिश्तेदार के यहाँ जाने और लड़की की शादी के बारे में हुई बातचीत को भी बताया।

प्रबोध कुमार की बात से प्रबंधक को बहुत दुख हुआ, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि प्रबोध कुमार कभी रुपयों का गबन नहीं कर सकता। उन्होंने प्रबोध कुमार से पूछा कि क्या उन्हें किसी पर शक है?

उन्होंने कहा – नहीं।

प्रबंधक – जिस समय वे अपनी कुर्सी छोड़कर गए थे उस समय कोई आसपास था?

उन्होंने जानबूझकर बिन्नी का नाम नहीं लिया। वे कैसे उसपर आरोप लगाएँ? अगर उसने नहीं लिया हो तो? यह तो बड़ा अपराध होगा। नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे।

X X X

इधर बिन्नी ने प्रबोध कुमार को बदनाम करने के लिए सभी कर्मचारियों के बीच यह अफवाह फैला दी कि प्रबोध कुमार ने प्रतिष्ठान का रुपया चुरा लिया है। यह बात प्रबंधक तक भी पहुँची। वे बड़े असमंजस में पड़े रहे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उनका मन पूछ रहा था क्या प्रबोध कुमार जैसा आदमी क्या ऐसा कर सकता है? बुद्धि और मन के बीच द्वंद्व चल रहा था।

बिन्नी मन ही मन काफी खुश था कि एक तीर से दो शिकार हुए हैं। प्रबोध कुमार प्रबंधक की नजर में गिरा भी और उसे रुपये की हानि भी उठानी पड़ी।

X X X

अगले दिन प्रबोध कुमार ने अपनी लड़की के लिए

बनवाए गए गहने बेच डाले और ऊँची ब्याज दर पर रुपये उधार लेकर प्रतिष्ठान में जमा करा दिए।

कार्यालय में यह अफवाह जोर से फैला कि प्रबोध कुमार ने रुपये रख लिए थे और झूठा बहाना बनाया था। शायद यह सोचा था कि प्रबंधक तो उनपर भरोसा करता है इसलिए उनकी चोरी नहीं पकड़ी जाएगी। लोग उनके खिलाफ तरह-तरह की बातें करने लगे और उनके सामने फब्तियाँ कसने लगे।

प्रबोध कुमार बड़ी ग्लानि और संताप का जीवन जी रहे थे। उन्हें अपना जीवन तुच्छ लगने लगा और उन्होंने आत्महत्या करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

उनकी पत्नी उनकी मनोव्यथा से अवगत थी। उसके मन में तरह-तरह की आशंका उठ रही थी। कहीं कुछ अघटन न घट जाए, इसके लिए वह रात-दिन ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी। वे जब भी घर आते वह उन्हें हर तरह भरोसा दिलाती कि सत्य आज नहीं तो कल सबके सामने प्रकट होगा। आप पुनः निष्कलंक होकर सम्मानित होंगे। आप पर अंगुली उठाने वाले झूठे साबित होंगे।

X X X

इधर बिन्नी ने चोरी के उस लाख रुपये को ज्यों का त्यों रख छोड़ा था ताकि जब सब शांत हो जाए, लोग इस घटना को पूरी तरह भूल जाएँ तब वह उन्हें खर्च करेगा ताकि किसी को शक न हो।

कुछ समय बीतने के बाद जब बिन्नी को लगा कि अब सब ठीक है तो एक शाम को वह अपने कुछ खास साथियों के साथ मौज-मस्ती करने एक होटल में गया। बिना श्रम के मिले रुपये से वह मजे लूटना चाहता था।

होटल में जब सभी खा-पी रहे थे तभी अचानक कुछ लोगों में मारपीट शुरू हो गई। लोग इधर-उधर भागने लगे। इसी भागदौड़ में कुछ लोग गिरे, कुछ को गंभीर चोट लगी। होटल वाले ने पुलिस को बुला लिया। बिन्नी और उसके साथी भी अन्य लोगों के साथ पकड़े गए।

थानेदार ने पकड़े गए सभी लोगों को हवालात में बंद करने का आदेश दिया। इस अवसर पर जब नकदी पैसे और सामान आदि जमा कराए जाने लगे तो बिन्नी के पॉकेट से एक लाख रुपये के नोट निकले। उसके साथियों ने देखा तो पूछा इतने रुपये तुम्हारे पास कहाँ से आए। यह तो पूरी की पूरी गड्डी है, जिसे खोला भी नहीं गया है। उन्हें शक हुआ कि यह प्रतिष्ठान वाला रुपया ही तो नहीं है, जिसकी चोरी का इल्जाम प्रबोध कुमार पड़ लगा है?

पकड़े गए सभी लोगों के घरवालों के पास थाने से फोन गए। बिन्नी के घर में उसकी पत्नी के सिबा कोई नहीं था इसलिए उसने प्रतिष्ठान के प्रबंधक को फोन किया कि उसके पति को पुलिस पकड़कर ले गई है कृपया उसे छुड़ाइए।

प्रबंधक थाने पहुँचे। कोई गंभीर मामला न होने के कारण उनकी जमानत पर बिन्नी और उसके साथियों को छोड़ दिया गया। जमानत के समय थानेदार ने बिन्नी से जब्त की गई एक लाख रुपये की गड्डी वापस दी। रुपये देखकर प्रबंधक चौंके। उन्हें शक हुआ। उन्होंने बिन्नी से पूछा ये रुपये कहाँ से आए? बिन्नी का उत्तर संतोषजनक नहीं था। प्रबंधक ने तत्काल प्रबोध कुमार को फोन करके उन्हें थाने बुलाया। उन्होंने आकर देखा कि ये रुपये तो वही हैं जो गायब हुए थे। रुपयों पर उस कंपनी की पर्ची भी लगी थी, जहाँ से रुपये आए थे। उन्होंने प्रबंधक महोदय की ओर देखा, परंतु कुछ कहा नहीं।

प्रबंधक ने बिन्नी से कड़े शब्दों में पूछा, बताओ ये रुपये कहाँ आए? क्या ये वही रुपये हैं, जिसे तुमने प्रबोध कुमार की दराज से निकाले थे?

बिन्नी की चोरी पकड़ी गई थी। सच सामने आ गया था। उसने जो सोचा था, ठीक उसका उलटा हुआ। वह अब मन ही मन भावी दंड के बारे में चिंता कर रहा था।

प्रबंधक महोदय ने प्रबोध कुमार बिन्नी के खिलाफ थाने में रिपोर्ट लिखाने के लिए कहा।

यह सुनते ही बिन्नी जोर-जोर से रोने लगा। उसे लग गया कि इस अपराध के कारण अब प्रतिष्ठान की नौकरी भी

जाएगी और जेल की सजा भी भुगतनी पड़ेगी।

प्रबोध कुमार ने प्रबंधक महोदय से अनुरोध किया कि वे बिन्नी को माफ कर दें और उसके खिलाफ रिपोर्ट लिखवाने पर जोर न दें। उसने गलती की है, परंतु यदि उसे सजा हो गई तो उसका जीवन बर्बाद हो जाएगा।

बिन्नी यह सुनकर हतप्रभ रह गया। वह सहसा विश्वास नहीं कर सका कि यह प्रबोध कुमार है, जिसके खिलाफ उसने इतनी बड़ी साजिश रची थी। वह अपने अपराध के लिए लज्जा और पश्चाताप से गड़ा जा रहा था और प्रबोध कुमार के प्रति उनके मन में अपार कृतज्ञता का समुद्र उमड़ रहा था। वह प्रबोध कुमार के सामने आँखें उठाकर देखने की भी हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

प्रबंधक स्वयं प्रबोध कुमार के इस व्यवहार से चकित थे। जिस व्यक्ति ने उनकी इतनी बुराई की, उसके साथ ऐसे व्यवहार का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था। खैर बिन्नी के खिलाफ रिपोर्ट नहीं लिखाई गई।

X X X

अगले दिन जब बिन्नी कंपनी में आया तो प्रबंधक ने उसे अपने कमरे में बुलाया और काफी फटकार लगाने के बाद उसे नौकरी से निकाल दिया।

यह खबर आग की तरह चारों तरफ फैल गई। प्रबोध कुमार के कार्यालय पहुँचते ही सभी ने खुशी-खुशी सूचना दी कि बिन्नी को अपने किए की सजा मिली है और उसे नौकरी से निकाल दिया गया है।

यह खबर सुनते ही प्रबोध कुमार हतप्रभ रह गए। उनकी आँखों से आँसू निकल पड़े। नहीं! वे ऐसा नहीं होने देंगे। वे एक तरह से दौड़ते हुए प्रबंधक के कमरे में पहुँचे और अत्यंत विनीत भाव से प्रार्थना की कि बिन्नी को नौकरी से न निकाला जाए और उसे संभलने का एक अवसर दिया जाए। उसने जो गलती की थी उसके लिए वह पश्चाताप कर रहा है। यदि उसे नौकरी से निकाला गया तो यह न केवल उसके लिए, बल्कि स्वयं उनके लिए भी अत्यंत दुख का विषय होगा।

प्रबंधक प्रबोध कुमार के इस आचरण से खीझ उठे। किसी भी चीज की सीमा होती है। यह उदारता घातक है। उन्होंने कड़े शब्दों में कहा कि बिन्नी एक गलत आदमी है और उसके साथ यही उचित व्यवहार है।

परंतु प्रबोध कुमार ने उनके पैर पकड़ लिए। बड़े ही अनुनय के स्वरों में कहा कि मेरे कारण किसी का जीवन नष्ट नहीं होना चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो मैं आजीवन स्वयं को माफ नहीं कर पाऊँगा।

बहुत कहने पर प्रबंधक ने इस शर्त पर बिन्नी को रखने की स्वीकृति दी कि वह प्रबोध कुमार को हुई सारी हानि, परेशानी और अपमान के लिए क्षतिपूर्ति करे और भविष्य में इस तरह के आचरण न करने के लिए वचन दे।

परंतु प्रबोध कुमार ने उनसे अनुरोध किया कि यदि ऐसा होता है बिन्नी के मन में यह आएगा कि मैंने यह सब जानबूझकर उसे अपमानित करने के लिए किया है। उसकी आत्मा को दुख पहुँचेगा। अतः आप इस बार बिना किसी शर्त के उसे क्षमा कर दीजिए। यह आपका मुझपर एहसान होगा और मेरी सेवा का प्रतिदान भी।

प्रबंधक चुपचाप उनकी ओर देखते रह गए। यह कैसा प्रतिदान है!

प्रबंधक के कमरे के बाहर खड़ा बिन्नी यह सब कुछ देख और सुन रहा था। उसे सहसा विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा भी होता है! मैंने जिसका इतना बुरा चाहा उसका ऐसा व्यवहार! उसे अपने आप पर ग्लानि हो रही थी। वह किस मुँह से उनसे क्षमा मांगे।

प्रबोध कुमार ज्यों ही कमरे से बाहर निकले बिन्नी दौड़कर उनके पैरों पर गिर पड़ा। उसकी आँखों से अविरल आँसू बरस रहे थे।

प्रबोध कुमार ने उसे उठाया और बिना एक शब्द बोले स्नेह भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर कुछ समय तक वे उसकी पीठ थपथपाते रहे।

बिन्नी कातर नयनों से उनकी ओर देख रहा था। आँसू छलछला रहे थे और वाणी निःशब्द थी। ■

गीतांजलि

(डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के प्रति)

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

तुम वही हो न?

रेत पर लिखते सुबह से शाम
शंख-सीपी एक सुन्दर नाम
तुम वही हो न?
जेठ की पछवा-डँसी अमराइयों में
नीलकण्ठी कूक गूँजी एक
और फिर नंगी टहनियों पर सपन के
नर्म कोंपल का हुआ अभिषेक
फूल की नन्ही उमर के नाम
बाँटता जो रश्मियाँ बिन दाम
तुम वही हो न?
गाँव की मँड़ई तले इक बाँसुरी से
क्रांति के फूटे अनश्वर गीत
रोष में उछले सृजन के दो करों से
अन्ध कारा भी हुई भयभीत
दीप सौ-सौ जला आठो याम
छोड़ देता लहर पर गुमनाम
तुम वही हो न?
एक उजले पंख ने उड़कर मिटाया
नीलवर्णी चित्र का आकार
मोरपंखी अर्चनाओं ने समेटा
शुभ्र ज्योत्स्ना का विपुल शृंगार
हाँफते युग के लिए अभिराम
भेंटता जो शीश है निष्काम
तुम वही हो न? ■

महापुरुष

दिल में राज दफ़न रखता है
उँगली में धड़कन रखता है
पूछो मत तासीर जुनूँ की
सिर पर बाँध कफ़न रखता है।
वह मड़ई का राजकुँवर है
धारदार उसके सपने भी
दवदारु-सा पौरुष उसका
नाखतों में उसके अपने भी
दिखता भले शिला-सा शीतल
उर में तेज अगन रखता है।
वह खँडहर की मूरत, जलता
आँधी में है दीप-सरीखा
कंगन-कुंकुम बनकर उसने
शमशानों में पलना सीखा
पद-में नृत्य प्रलय का, कर में
नूतन विश्व-सृजन रखता है।
वह उठता धरती पर जैसे
अंकुर फूटा हो भूतल से
वह गिरता भी तो जैसे
आशीष बरसता गगनांचल से
सूरज-चाँद उसी के, मुट्ठी में
उनचास पवन रखता है। ■

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निधन पर जैन भारती परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निधन पर आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा है कि अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक एवं भारत के जनप्रिय राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का तेरापंथ धर्मसंघ से निकट संबंध था। उनके आकस्मिक निधन पर उनके प्रति हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है कि उनकी आत्मा ऊर्ध्वगामी हो।

वैज्ञानिक-आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अनूठे उदाहरण डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक अवुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम स्थित धनुषकोडी गाँव में एक मध्यमवर्ग के मुस्लिम परिवार में हुआ था। इनके पिता जैनुलाब्दीन कम पढ़े-लिखे गरीब नाविक थे। कलाम का बचपन बड़ा संघर्षपूर्ण रहा। वे प्रतिदिन सुबह चार बजे उठकर गणित का ट्यूशन पढ़ने जाया करते थे। वे एक अद्वितीय गणित शिक्षक थे। वे निःशुल्क ट्यूशन पढ़ाते थे किंतु उनका एक नियम था कि वे एक साल में केवल पाँच विद्यार्थी को ही पढ़ाएंगे। अपने सभी छात्रों पर उन्होंने एक और शर्त लगा रखी थी कि सभी छात्र स्नान करके सुबह पाँच बजे उनकी कक्षा में उपस्थित हो जाएँ। कलाम उनकी शर्तों पर खरे उतरते और शिक्षक की अपेक्षानुसार ठीक समय पर ट्यूशन पढ़ने पहुँच जाते। वहाँ से 5 बजे लौटने के बाद वे अपने पिता के साथ नमाज पढ़ते, फिर घर से तीन किलोमीटर दूर स्थित धनुषकोड़ी रेलवे स्टेशन से अखबार लाते और पैदल घूम-घूम कर बेचते। 8 बजे तक वे अखबार बेचकर घर लौटते। उसके बाद तैयार होकर वे स्कूल जाते। स्कूल से लौटने के बाद शाम को वे अखबार के पैसों की वसूली के लिए निकल जाते। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है - "*मैं यह बहुत गर्वोक्तिपूर्वक तो नहीं कह सकता कि मेरा जीवन किसी के लिए आदर्श बन सकता है; लेकिन जिस तरह मेरी नियति ने आकार ग्रहण किया, उससे किसी ऐसे गरीब बच्चे को सांत्वना अवश्य मिलेगी, जो किसी छोटी-सी जगह पर सुविधाहीन सामाजिक दशाओं में रह रहा हो। शायद यह ऐसे बच्चों*

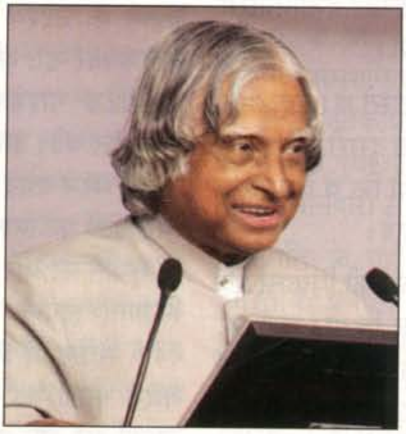

को उनके पिछड़ेपन और निराशा की भावनाओं से विमुक्त होने में अवश्य सहायता करेगी।"

प्राइमरी स्कूल के बाद कलाम ने श्वार्ट्ज हाईस्कूल, रामनाथपुरम में प्रवेश लिया। वहाँ की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने 1950 में सेंट जोसेफ कॉलेज, त्रिची में प्रवेश लिया, जहाँ से भौतिकी और गणित विषयों के साथ बी.एससी. की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम. आई. टी.), चेन्नई में दाखिला लिया और वहाँ एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग विषय का चयन किया और एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी में डिप्लोमा हासिल किया।

शिक्षा प्राप्ति के बाद उनके सामने दो रास्ते थे। एक ओर विदेश जाकर पैसे का अंबार लगाना तो दूसरी ओर देश-सेवा करें। कलाम की हार्दिक इच्छा थी कि वे वायु सेना में भर्ती हों। किन्तु यह इच्छा पूरी नहीं हुई।

उन्होंने बे-मन से रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद DTD & P (Air) का चुनाव किया। वहाँ पर उन्होंन 1958 में तकनीकी केन्द्र (सिविल विमानन) में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर वहाँ पहले ही साल में एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी विमान की डिजाइन तैयार करके अपने स्वर्णिम सफर की शुरुआत की।

डॉ. कलाम के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वे 1962 में **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन** से जुड़े। यहाँ पर उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया। उन्होंने अपने निर्देशन में उन्नत संयोजित पदार्थों का विकास आरम्भ किया। इसके बाद उन्होंने त्रिवेंद्रम में स्पेस साइंस एण्ड टेक्नोजॉजी सेंटर (एस. एस. टी. सी.) में 'फाइबर रिइनफोर्स्ड प्लास्टिक' की स्थापना की।

इसके साथ ही उन्होंने यहाँ पर आम आदमी से लेकर सेना की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं की शुरुआत की।

उन्हीं दिनों इसरो में स्वदेशी क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से 'उपग्रह प्रक्षेपण यान कार्यक्रम' की शुरुआत हुई। कलाम की योग्यताओं को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें इस योजना का प्रोजेक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य था उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने के लिए एक भरोसेमंद प्रणाली का विकास एवं संचालन। कलाम ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा के बल पर इस योजना को भलीभाँति अंजाम तक पहुँचाया तथा जुलाई 1980 में 'रोहिणी' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित करके भारत को 'अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब' के सदस्य के रूप में स्थापित कर दिया।

डॉ. कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वी. एस. अरुणाचलम के मार्गदर्शन में 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' की शुरुआत की। इस योजना के अंतर्गत **'त्रिशूल'** (नीची उड़ान भरने वाले हेलीकॉप्टरों, विमानों तथा विमानभेदी मिसाइलों को निशाना बनाने में सक्षम), **'पृथ्वी'** (जमीन से जमीन पर मार करने वाली, 150 किमी. तक अचूक निशाना लगाने वाली हल्की मिसाइल), **'आकाश'** (15 सेकेंड में 25 किमी तक जमीन से हवा में मार करने वाली यह सुपरसोनिक मिसाइल एक साथ चार लक्ष्यों पर वार करने में सक्षम है), **'नाग'** (हवा से जमीन पर अचूक मार करने वाली टैंक भेदी मिसाइल), **'अग्नि'** (बेहद उच्च तापमान पर भी 'कूल' रहने वाली 5000 किमी. तक मार करने वाली मिसाइल) एवं **'ब्रह्मोस'** (रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित मिसाइल, ध्वनि से भी तेज चलने तथा धरती, आसमान

और समुद्र में मार करने में सक्षम) मिसाइलें विकसित हुईं।

इन मिसाइलों के सफल प्रेक्षण ने भारत को उन देशों की कतार में ला खड़ा किया, जो उन्नत प्रौद्योगिकी एवं शस्त्र प्रणाली से सम्पन्न हैं। रक्षा क्षेत्र में विकास की यह गति इसी प्रकार बनी रहे, इसके लिए डॉ. कलाम ने डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन अर्थात डी.आर.डी.ओ. का विस्तार करते हुए आर.सी.आई. नामक एक उन्नत अनुसंधान केन्द्र की स्थापना भी की।

डॉ. कलाम ने जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक **रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार** तथा डी.आर.डी.ओ. के सचिव के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उन्होंने भारत को 'सुपर पावर' बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की। उन्होंने स्ट्रेटेजिक मिसाइल्स सिस्टम का उपयोग आग्नेयास्त्रों के रूप में किया। उन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रूप में जाना जाने लगा।

डॉ. कलाम नवम्बर 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार बने। इस दौरान उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्रदान किया गया। उन्होंने भारत के विकास स्तर को विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए विशिष्ट सोच प्रदान की तथा अनेक वैज्ञानिक प्रणालियों तथा रणनीतियों को कुशलतापूर्वक संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नवम्बर 2001 में प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार का पद छोड़ने के बाद उन्होंने अन्ना विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उन्होंने अपनी सोच को अमल में लाने के लिए इस देश के बच्चों और युवाओं को जागरूक करने का बीड़ा लिया। इस हेतु उन्होंने निश्चय किया कि वे एक लाख विद्यार्थियों से मिलेंगे और उन्हें देश सेवा के लिए प्रेरित करने का कार्य करेंगे।

डॉ. कलाम 25 जुलाई 2002 को **भारत के ग्यारहवें**

राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे। वह अपने देश भारत को एक विकसित एवं महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उनके पास देश को इस स्थान तक ले जाने के लिए एक स्पष्ट और प्रभावी कार्य योजना थी। उनकी पुस्तक **'इण्डिया 2020'** में उनका देश के विकास का समग्र दृष्टिकोण देखा जा सकता है। वे अपनी इस संकल्पना को उद्घाटित करते हुए कहते हैं कि इसके लिए भारत को कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, ऊर्जा, शिक्षा व स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, परमाणु, अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान देना होगा।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को जनता का राष्ट्रपति कहकर सम्मानित किया जाता था। वे देश के अब तक के सबसे लोकप्रिय राष्ट्रपति सिद्ध हुए हैं। वे भारत के उन लाखों युवाओं के आदर्श हैं जो उन्हीं की तरह मेहनत और ईमानदारी से सफलता पाना चाहते हैं।

राष्ट्रपति के पद से मुक्त होने के बाद डॉ. कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलौंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर के मानद फैलो एवं विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अन्तरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों से जुड़े हुए थे। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और अन्ना विश्वविद्यालय में सूचना

प्रौद्योगिकी और अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान हैदराबाद में सूचना प्रौद्योगिकी पर अध्यापन भी किया।

डॉ. कलाम भारत को महाशक्ति बनने तथा अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और परमाणु हथियारों के क्षेत्र में भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहे थे। उन्होंने भारत के विकास स्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने हेतु एक विशिष्ट सोच प्रदान की।

सामाजिक क्षेत्र में डॉ. कलाम का अवदान बहुत अधिक था। वे शिक्षा के विकास हेतु बहुत सक्रिय थे। स्कूलों एवं कॉलेजों के बच्चों के साथ उनका आत्मीय लगाव था। मई 2012 में, कलाम ने भारत के युवाओं के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया, जो देश से भष्टाचार को मिटाने के लिए एक बड़े आन्दोलन के रूप में था।

डॉ. कलाम ने अपने विचारों को जिन प्रमुख पुस्तकों में समाहित किया है, उनमें – *इंडिया 2020, ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम, माई जर्नी, इग्नाइटिड माइंड्स - अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया* शामलि हैं। इसके अतिरिक्त *विंग्स ऑफ फायर* भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु लिखी है। इनकी पुस्तक *गाइडिंग सोल्स डायलॉग्स ऑफ द पर्पज ऑफ लाइफ* आत्मिक विचारों को उद्घाटित करती है। इनके अतिरिक्त विभिन्न विषयों पर अन्य अनेक पुस्तकों का प्रणयन भी किया है।

भारत सरकार द्वारा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को 1997 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया। इसके पूर्व उन्हें पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990), नेशनल डिजाइन अवार्ड (1980), एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से डॉ. वीरेन राय स्पम अवार्ड (1986), राष्ट्रीय नेहरू पुरस्कार (1990), विशिष्ट शोधार्थी, वीर सावरकर पुरस्कार, रामानुजन पुरस्कार, किंग चार्ल्स 2 मेडल, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, वॉन कार्मन विंग्स अंतरराष्ट्रीय अवार्ड, हूवर मेडल, इंस्टिट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर्स (आईईईई) मानद सदस्यता, डॉक्टर ऑफ लॉज से अलंकृत किया जा चुका है।

डॉ. कलाम भारत के एक ऐसे विशिष्ट वैज्ञानिक थे, जिन्हें देश एवं विदेशों के 40 से अधिक विश्वविद्यालयों और संस्थानों से डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्राप्त हो चुकी है, जिनमें एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी एवं वूल्वरहैंप्टन यूनिवर्सिटी, यूके, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, भारत आदि प्रमुख हैं। इन्हें 2003 व 2006 में एमटीवी यूथ आइकन ऑफ द इयर के लिए नामांकित किया गया।

27 जुलाई 2015 की शाम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलौंग में एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हें जोरदार दिल का दौरा पड़ा और ये बेहोश होकर गिर पड़े। लगभग 6.30 बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पतालों में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई।

डॉ. अब्दुल कलाम की समूची जिन्दगी सफलता की एक किंवदन्ती है। लेकिन शून्य से शिखर तक पहुँचने के बाद भी डॉ. कलाम में अहंकार जैसी कोई चीज दूर-दूर तक नहीं छू गयी। अपने व्यक्तिगत जीवन में वे पूरी तरह अनुशासन का पालन करते थे। वे कुरान और भगवद् गीता दोनों का अध्ययन करते थे। हिन्दू संस्कृति में उनका गहरा विश्वास था।

सादा जीवन तथा उच्च विचार के प्रतीक डॉ. कलाम अपनी उन्नत प्रतिभा के कारण सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों की नजर में महान आदर्श के रूप में स्वीकार्य रहे हैं। भारत की वर्तमान पीढ़ी ही नहीं अपितु आने वाली अनेक पीढ़ियाँ उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करती रहेंगी।

कलाम साहब के आकस्मिक निधन ने सारे विश्व को हतप्रभ कर दिया। उनकी सादगी, उनका व्यवहार और उनका देश के प्रति समर्पण अतुलनीय है।

भारत सरकार ने उनके निधन पर उनके सम्मान में सात दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और देश के सभी बड़े नेताओं ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

डॉ. कलाम का संपूर्ण जीवन एक प्रेरणाप्रद कहानी के समान रहा है। उनकी बलवती कामना थी कि देश का हर नागरिक अनुशासित आचरण करे, इससे जागरूक नागरिकों का निर्माण होगा। किसी देश के लोग जितने अच्छे होते हैं वह देश उतना ही अच्छा होता है। किसी देश की संरचना में वहाँ की जनता के जीवन-मूल्य, नैतिकता और आचरण प्रकट होते हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण कारक होते हैं जो निर्धारित करते हैं कि देश प्रगति के पथ पर चलेगा या फिर ठहराव के दौर से गुजरेगा।

वे विद्यार्थियों से बातें करते हुए कहते थे कि हमें अपने दैनिक जीवन में ईमानदारी, निष्ठा और सहनशीलता जैसे मूल्यों का पालन करना है। इससे हमारी राजनीति राष्ट्रनीति में बदल जाएगी। हमें सामाजिक स्तर पर यह सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा कि हम अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं?

उनका मानना था कि सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही प्रारंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में मात्र तीन प्रकार के लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं, वे हैं - माता, पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक। यदि ये तीनों बच्चों को सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई इनको डिगा पाए। अतः हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है, जो सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को खत्म कर सके। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि आप सब यह संकल्प लें कि आप सदैव ईमानदार एवं भ्रष्टाचार मुक्त जीवन का निर्वाह करेंगे और दूसरों के

समक्ष एक पारदर्शी जीवन जीने का आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

उन्होंने कहा था कि एक छात्र के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है - उसकी अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता का भाव। ये गुण आपको निस्संदेह एक आदर्श नागरिक बनने में मदद करेंगे।

तेरापंथ धर्मसंघ के साथ अविच्छिन्न संबंध

तेरापंथ धर्मसंघ के साथ भी डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का गहरा रिश्ता था। वे सर्वप्रथम 1999 में दिल्ली में आचार्य महाप्रज्ञ से मिलने गए। अपनी पहली मुलाकात में महान दार्शनिक संत एवं अहिंसा के संदेशवाहक आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें अध्यात्म साधना केन्द्र, महरौली में भारत को शक्ति के साथ अध्यात्म संपन्न राष्ट्र बनाने की जिम्मेदारी सौंप दी। उसके साथ ही एक ऐसा ऐतिहासिक और अभिनव उपक्रम शुरू हुआ, जिसने डॉ. कलाम की जीवन की दिशा ही बदल दी। विज्ञान के शिखर पुरुष डॉ. कलाम और अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ - दोनों ही महामानव भारत को एक आध्यात्मिक - वैज्ञानिक राष्ट्र बनाने के लिए जुट पड़े। उन्होंने अहिंसा के संदेश और व्यवहार को जनव्यापी बनाने एवं हिंसा की संहारक शक्ति को कम करने का विशिष्ट अभियान प्रारंभ किया।

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति डॉ. कलाम की बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ के परिपार्श्व में ऐसे कार्यक्रम और जीवन मूल्य प्राप्त हुए जिनमें संपूर्ण

समानताएं थीं। आचार्य महाप्रज्ञ धर्मगुरु होने के बावजूद विज्ञान के घोर हिमायती थे। डॉ. कलाम वैज्ञानिक होते हुए भी धर्म सही मायने में जीते थे।

दोनों शिखर पुरुष धर्म को अध्यात्म से जोड़ना चाहते थे। दोनों प्रयोगधर्मा थे। डॉ. कलाम जहां राष्ट्रपति भवन को प्रयोगशाला में तब्दील कर वे घंटों-घंटों नए-नए प्रयोग व अनुसंधान करते थे, वहीं आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को केवल विचार के स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर लाकर उसके प्रयोग प्रस्तुत किए। प्रेक्षाध्यान एक ऐसा अवदान है जो अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का प्रतीक है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से अध्यात्म को नवजीवन प्राप्त हुआ है।

समृद्ध एवं शक्ति संपन्न राष्ट्र के स्वप्न को लेकर डॉ. कलाम वर्ष में 2-3 बार आचार्य महाप्रज्ञ से आध्यात्मिक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन लेने पहुंचते थे। इसी ृंखला में वे गुजरात के सूरत और अहमदाबाद एवं महाराष्ट्र के मुंबई महानगरी में इन्हीं विशिष्ट कार्यक्रमों एवं उद्देश्यों को लेकर यात्राएं कीं।

15 अक्टूबर, 2003 को राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने अपना जन्मदिन सूरत में मनाया और इस दिन आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आध्यात्मिक नेताओं और विद्वानों ने राष्ट्रपति कलाम के 2020 के समृद्ध भारत के सपने और उससे जुड़े पांच सूत्रीय कार्यक्रमों पर गंभीर एवं गहन चर्चाएं की थीं। इसकी निष्पत्ति यूनिटी ऑफ माइंड (दिमागों की एकता) के रूप में हुई यानी सांप्रदायिक सौहार्द, आपसी भाईचारा, प्रेम एवं सद्भावना का एक अनूठा वातावरण बना और 'फाउंडेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजियन एंड इनलाइटेंड सिटीजनशिप' के रूप में एक संगठित कार्यक्रम की शुरुआत भी हुई। गुजरात के सांप्रदायिक दंगों के बाद उत्पन्न आपसी कटुता, घृणा, नफरत, द्वेष के वातावरण में फ्यूरेक द्वारा सद्भावना और सांप्रदायिक एकता के निर्माण हेतु किए गए प्रयासों के सार्थक परिणाम आए।

दिनांक 14 फरवरी 2003 को उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में मुंबई में महाप्रज्ञ सभागार में *शिक्षा में नैतिक मूल्य* विषयक सेमिनार का उद्घाटन किया। लगातार दो दिनों तक वे वहां उपस्थित रहे। प्रतिष्ठित समाचार-पत्रों ने अध्यात्म और विज्ञान का शिखर सम्मेलन नाम से समाचार प्रकाशित किए। इसी प्रकार उदयपुर में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर उन्होंने दीक्षांत भाषण दिया, जो अत्यंत प्रेरक और अविस्मरणीय रहा।

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति उनकी ऐसी दृढ़ निष्ठा थी कि अपना जन्मदिन मनाने उनके पास गए। आचार्य महाप्रज्ञ की पहल पर 14 अक्तूबर, 2003 को सूरत में आयोजित सभी धर्मों के प्रधानों की एक गोष्ठी में वे पधारे, जहाँ फाउंडेशन ऑफ रिलिजियस एंड एनलाइटेंड सिटिजनशिप (फ्यूरेक) का गठन हुआ। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रयासों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि यदि उनकी तरह सभी धर्मों के प्रधान सोचने लगें तो देश अनेक जटिलताओं से सहज ही मुक्त हो जाए।

डॉ. कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ के साथ मिलकर **द *फैमिली एंड द नेशन*** नामक पुस्तक लिखी। भारतीय गणतंत्र में यह संभवतः पहली घटना है जब एक राष्ट्रपति ने एक धर्म गुरु के साथ मिलकर कोई ग्रंथ लिखा हो।

शांतिपूर्ण एवं समृद्ध समाज के विकास का उनका सपना इतना मर्मग्राही था कि वे इस विषय पर निरंतर सोचते रहते थे। गीता के महत्वपूर्ण ज्ञान – **आत्मानां विद्धि** अर्थात 'स्वयं को जानो' को उन्होंने आत्मसात किया था और सदैव कहा करते थे कि हमारे देश की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, कलात्मक और बौद्धिक

उपलब्धियाँ ही हमारी सभ्यता की पहचान है।

विश्व शांति के लिए तीर्थयात्रा

डॉ. कलाम का मानना था कि बीसवीं शताब्दी में जो विकास हुआ है, उसने मानव जीवन की स्थितियों में सुधार किया है, परंतु हमारे दैनिक जीवन में द्वंद्व और संघर्ष बना हुआ है। एक शांतिपूर्ण व संपन्न समाज अब भी स्वप्न ही है। हम ऐसे समाज का निर्माण कैसे करेंगे? उत्तम राष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण घटक अनेकता वाले विश्व में मानसिक एकता का मार्ग प्रशस्त करना है। हमारे देश में और अन्यत्र किए गए प्रयोगों से पता चलता है कि यह संभव है। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने विश्व शांति के लिए मानो एक तीर्थयात्रा की थी। उन्होंने समाज में आपसी एकता पर आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ कई अवसरों पर चर्चा और लंबी बातचीत की थी, जो अत्यंत मार्मिक और हृदयग्राही है। प्रस्तुत है बातचीत के अंश।

आचार्य : मैंने अध्यात्म का मार्ग अपनाया। आपने अपना जीवन अपनी तरह से बनाया। आप अपना अनुभव किस प्रकार व्यक्त करते हैं?

कलाम : शक्ति और प्रतिष्ठा संघर्ष से मिलते हैं। मुझे अपनी 16 सितंबर, 2004 की दक्षिण अफ्रीका में डरबन की यात्रा स्मरण हो आई है। रेलगाड़ी पीटरमार्टिजबर्ग पर रुकी। यह वही स्टेशन था, जहाँ गांधीजी 7 जून, 1893 को रंगभेद के दानव के शिकार हुए थे। उनको उनकी त्वचा के रंग के कारण प्रथम श्रेणी के डिब्बे से निकाल दिया गया था।

आचार्य : यह 300 ई. पू. में कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा का पुनर्जन्म था।

कलाम : सौभाग्य से यह क्रम अटूट है। आचार्यजी, आप अहिंसा के सिद्धांत को एक मिशन के रूप में प्रचारित कर रहे हैं। जब मैं पीटरमार्टिजबर्ग स्टेशन पर

खड़ा था, दो दृश्य मेरे मानस-पटल पर उभर रहे थे। एक रॉबेन आइलैंड का था, जहाँ नेल्सन मंडेला को बंदी बनाकर रखा गया था। दूसरा दृश्य उनके घर का था।

आचार्य : मुझे बताएँ, जब आप रॉबेन आइलैंड में थे, तब आपको क्या अनुभूति हुई?

कलाम : रॉबेन आइलैंड में व्यक्तियों की स्वतंत्रता को शृंखलाबद्ध कर दिया गया था। वहाँ मेरी भेंट अहमद कथराडा से हुई। वह नेल्सन मंडेला के साथ बंदी थे। मुझे वह छोटी कोठरी देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, जिसमें छह फीट लंबे नेल्सन मंडेला को 26 वर्षों तक बंदी बनाकर रखा गया था। उनको तेज धूप में पास के पहाड़ पर खनन के लिए ले जाया जाता था। इससे उनकी आँखें खराब हो गईं। निरंतर यातनाएँ दिए जाने के बावजूद उन्होंने विश्व को अपने अदम्य साहस का परिचय दिया। इसी दौरान उन्होंने छोटे-छोटे पत्रों के रूप में प्रतिदिन स्वाधीनता की पांडुलिपि की रचना की, जब जेलर सोने चला जाता था। यह छोटे पत्रों में लिखी गई पांडुलिपि अंततः मंडेला की प्रसिद्ध पुस्तक 'ए लांग वॉक टू फ्रीडम' बनी।

आचार्य : दूसरी घटना क्या थी?

कलाम : जब मैं नेल्सन मंडेला के घर गया, उनकी प्रफुल्लता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। जब मैं उनके घर से लौट रहा था, तो वह मुझे विदा करने के लिए ओसारे तक आए। चलते समय उन्होंने अपनी छड़ी छोड़ दी और मेरा सहारा ले लिया। चलते-चलते मैंने उनसे पूछा, 'डॉक्टर मंडेला, कृपया मुझे दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन के प्रवर्तकों के बारे में बताइए।' उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, 'अवश्य, दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद-विरोधी आंदोलन के एक महानतम प्रवर्तक मोहनदास करमचंद गांधी थे। भारत ने हमें मोहनदास करमचंद गांधी दिए। दो दशक बाद हमने आपको महात्मा गांधी लौटाए। महात्मा गांधी अहिंसा के दिव्य-संदेशवाहक थे।'

आचार्य : मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका गए और महात्मा गांधी बनकर भारत लौटे। यह सचमुच नेल्सन मंडेला का सुंदर व सच्चा कथन है। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि नेल्सन मंडेला में विलक्षण क्या है?

कलाम : नेल्सन मंडेला जब दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बने, तो जिन लोगों ने नस्लभेद चलाया था, जिन्होंने उन्हें यातनाएँ दीं और 26 साल तक जेल में रखा, उन सबको दक्षिण अफ्रीका में समानता के अधिकार वाले नागरिकों की तरह विचरण करने और रहने की स्वतंत्रता दी। नेल्सन मंडेला की इस भावना की महानता को कवि तिरुवल्लुवर ने भी बड़े सुंदर ढंग से व्यक्त किया है -

'जो आपके साथ बुराई करते हैं, उनके लिए सबसे अच्छा दंड है, बदले में अच्छाई करना।' समाज में समरसता और शांति स्थापित करने के लिए नेताओं में यह विशेषता होना आवश्यक है।

आचार्य : क्या आपको भारत में भी कोई ऐसा ही अनुभव हुआ?

कलाम : अपनी शांति तीर्थ यात्रा के दौरान मैं बिहार अपापपुरी गया था। यह एक पाप रहित उपनगर है। जिस स्थान पर भगवान महावीर ने प्रवचन दिए थे, वहाँ श्वेत संगमरमर का एक सुंदर मंदिर है। मैं जल-मंदिर भी गया, जहाँ भगवान महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया था। वहाँ झील में खिले कमल देखकर मुझे तिरुवल्लुर की कुछ और पंक्तियाँ स्मरण हो आईं- 'जलाशय की गहराई अथवा स्वच्छता की स्थिति चाहे जैसी हो, कमल उगता है और सूर्य की ओर शान से देखते हुए ही खिलता है।' इसी प्रकार मानव जीवन का उद्देश्यपूर्ण उच्च जीवन-यापन में रूपांतरण तभी होता है, जब कोई महान उद्देश्य व्यक्ति के मन में समाविष्ट होता है।

आचार्य : क्या आपको आशीर्वाद मिला? आपको क्या संदेश मिला?

कलाम : मैं विनम्रतापूर्वक आपको बताना चाहूँगा। भगवान महावीर ने शिक्षा दी

कि मानव अपनी मुक्ति स्व-प्रयास से पाता है। यह तीन रत्नों के माध्यम से मिलती है - सम्यक श्रद्धा, ज्ञान व चरित्र।

भगवान महावीर ने जातिप्रथा के भेदभाव का बहिष्कार किया। उन्होंने हर तरह की असहिष्णुता व भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई।

विचार, वाणी व कर्म की शुचिता से रहित कर्मकांड का भी उन्होंने प्रतिरोध करते हुए उसे अस्वीकार किया। इस उक्ति में मैं शक्ति के रूप में ज्ञान और मुक्ति के लिए ज्ञान का एकीकृत रूप देखता हूँ।

आचार्य : जैन दर्शन और आचार वस्तुतः अहिंसा के सिद्धांत के पर्यायवाची हैं, जो समग्र जैन परंपरा में एक स्वर्णिम सूत्र की तरह अनुस्यूत हैं। अहिंसा जैन धर्म का एकमात्र केंद्र-बिंदु है। आपने बिहार में क्या पाया?

कलाम : बिहार पावन भूमि है। मैं मुंगेर में बिहार योग विद्यालय गया। आदि शंकराचार्य से प्रेरित होकर यह विद्यालय योग्य-परियोजनाओं तथा प्रख्यात अस्पतालों वाली चिकित्सा अनुसंधान संस्थाओं का निर्देशन करता है। मैं खानकाह रहमानी गया। इस पवित्र स्थल की स्थापना सौ वर्ष से अधिक समय पहले प्रमुख सूफी संत हजरत मौलाना मुहम्मद अली ने की थी। दरगाह में कुछ युवाओं के साथ चर्चा के दौरान मैं हजरत पैगंबर के संदेश का सहभागी बना -

जब भी बोलो, सच बोलो।

जो वादा किया है, वह पूरा करो।

अपने कर्त्तव्य का पालन करो।

प्रहार करने से अथवा

जो अविधिक या बुरा है, उसे लेने से अपने हाथ को रोको।

आचार्य : हम इस मार्ग का अनुसरण करें और उत्तम जीवन जीएँ। आप बोध गया भी गए होंगे?

कलाम : मैं महाबोधि मंदिर गया, जहाँ भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान मिला था। मैं पटना में तख्त श्री हरमंदिर साहब गया, जो गुरु गोविंद सिंहजी का जन्मस्थान है। इन सब स्थानों पर मैंने पाया कि महान आत्माओं ने अच्छे जीवन के दर्शन का प्रचार किया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि इन केंद्रों ने एक समरसतापूर्ण बहुधर्मी वातावरण बनाया, जिसमें लोग शांतिपूर्वक आनंद से रह सकें। जब मैं इन महत्त्वपूर्ण स्थानों पर गया, तो मुझे अनुभूति हुई कि मनों की एकता के लिए कार्य आरंभ करने के निमित्त बिहार ही सर्वोत्तम भूमि है।

आचार्य : कलाम, आपने वास्तव में तीर्थयात्रा ही की। मैंने आपके व्याख्यानों में आपके तवांग के अनुभवों के बारे में सुना है। हम उस पर चर्चा करें।

कलाम : जी हाँ, मुझे दो महान अनुभव हुए।

2003 में मैं तवांग के एक बौद्ध मठ में गया, जो अरुणाचल प्रदेश में है। मेरे मन में जिज्ञासा थी कि तवांग व उसके आसपास के ग्रामों में ऐसी क्या विशेषता है, जिसके कारण यहाँ के लोग और भिक्षु इतने शांत रहते हैं। अवसर आने पर मैंने प्रमुख भिक्षु से पूछा कि सबके चेहरों पर शांति व प्रसन्नता झलकने का रहस्य क्या है? उन्होंने कहा, 'आज के संसार में हमारे सामने समस्या अविश्वास व अप्रसन्नता की है, जो हिंसा में परिवर्तित हो जाती है।'

आचार्य : आदरणीय भिक्षु ने आपको ठीक ही बताया। जब आप अपने मन से 'अहंकार' और 'ममकार' का भाव मिटा देते हैं, तो अहं समाप्त हो जाता है। जब आप अहं से मुक्त हो जाते हैं, तो सहचरों के प्रति घृणा भाव समाप्त हो जाता है। मन से घृणा के निकल जाने पर विचार और कर्म में हिंसा नहीं रहती। हिंसा न होने पर मानव मन में शांति का प्रस्फुटन होता है। तब समाज में शांति ही पुष्पित-पल्लवित होती है।

कलाम : मैं शांतिपूर्ण जीवन के सुंदर समीकरण को समझ रहा हूँ, परंतु सामान्य व्यक्तियों के लिए 'अहंकार' और 'ममकार' के जातिगत स्वभाव से मुक्त होना सरल नहीं।

आचार्य : यह शिक्षा से संभव है। बचपन में स्कूली शिक्षा से और महान आचार्यों के सान्निध्य से। दूसरा अनुभव क्या था?

कलाम : मैं रिला के एक प्राचीन ईसाई मठ में गया। यह बुल्गारिया की पहाड़ियों में है। यह वहाँ का सबसे बड़ा धार्मिक व सांस्कृतिक पुनरुत्थान केंद्र है। इसके पुस्तकालय में 16 हजार पुस्तकें हैं, जिनमें 134 पांडुलिपियाँ हैं। ये पंद्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक के समय की हैं। इस पवित्र स्थली ने मध्यकालीन बुल्गारिया के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्नीसवीं शताब्दी में एक बड़े अग्निकांड में यह मठ ध्वस्त हो गया था। इस भवन-समूह का पुनर्निर्माण किया गया और अब यह एक बड़े दुर्ग से घिरा है। उस दैवी वातावरण में और अस्सी से नब्बे वर्ष के पादरियों के मध्य होने के कारण मेरे मन में प्रार्थना करने की इच्छा जगी। मैं मंच के निकट गया और आदरणीय बिशप से सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी की प्रार्थना का अंश दोहराने की अनुमति माँगी। इस प्रार्थना को मठ में उपस्थित सभी लोगों ने दोहराया-

हे प्रभु, मुझे अपनी शांति का एक माध्यम बनाओ,
जहाँ घृणा है, वहाँ मैं प्रेम के बीज बोऊँ,
जहाँ आघात है, वहाँ क्षमा,
जहाँ अविश्वास है, वहाँ आस्था,
जहाँ निराशा है, वहाँ आशा,
जहाँ अंधकार है, वहाँ प्रकाश,
जहाँ उदासी है, वहाँ हर्ष।
क्योंकि देने में ही हम पाते हैं।
.. क्षमा करने में ही हमें क्षमा मिलती है,
.. और मृत्यु में ही हम अमर जीवन के लिए जन्म लेते हैं।

आचार्य : कलाम, आपका मन सुंदर घटनाओं व

आध्यात्मिक विचारों से प्रशिक्षित हुआ है। मैं मंगलकामना करता हूँ कि आप अपने विश्व-शांति के प्रचार के मिशन में सफल हों। प्रेम का यह सुंदर, दिव्य संदेश आपके जीवन को आलोकित करे।

इस बातचीत के बाद डॉ. कलाम ने राष्ट्र के लिए आचार संहिता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वच्छ हरित पर्यावरण, त्रिशाखीय मॉडल के अनुरूप समाज के विकास, मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा प्रबुद्ध नागरिकों के निर्माण, धर्म के अध्यात्म में रूपांतरण तथा सर्वोपरि निर्धनता व निरक्षरता रहित राष्ट्र के निर्माण के लिए कार्य करना होगा। यह सब संभव है यदि सारा राष्ट्र 'निष्ठा से काम करके निष्ठा से सफल होने' का व्रत ले ले। इसका आरंभ कैसे हो? राष्ट्रीय आचार का विकास कैसे हो? इसके लिए हम निम्न प्रक्रिया प्रस्तावित करते हैं -

धारणीय आर्थिक समृद्धि व शांति के लिए किसी राष्ट्र को अपने प्रत्येक कार्यों में आचार का पालन करना होता है।

यदि किसी राष्ट्र को आचारवान होना है, तो समाज को आचार व मूल्य पद्धति का विकास करना होगा।

यदि समाज को आचार व मूल्य पद्धति बनानी है, तो परिवारों को आचार व मूल्य पद्धति का विकास करना होगा।

यदि परिवारों को आचार व मूल्य पद्धति अपनानी है, तो माता-पिता को आचारवान होना होगा।

माता-पिता में आचार महान अध्ययन, मूल्य आधारित शिक्षा व स्वच्छ पर्यावरण के निर्माण से आते हैं, जिनसे हृदय में सदाचारिता उपजती है।

हृदय, चरित्र, राष्ट्र और विश्व में परस्पर एक सुंदर संबंध है। किसी समाज में हमें उसके सभी घटकों में सदाचारिता उत्पन्न करनी होगी। पूरे समाज को सदाचारी बनाने के लिए हमें परिवार, शिक्षा, सेवा, कैरियर, व्यवसाय, उद्योग, नागरिक प्रशासन, राजनीति, सरकार, कानून-व्यवस्था व न्याय में सदाचारिता लानी होगी।

प्रत्येक व्यक्ति के मन में शांति व राष्ट्र की समृद्धि के लिए इस प्रार्थना के साथ हम प्रस्तुत पुस्तक का समापन करते हैं-

जहाँ हृदय में सदाचारिता है,
वहाँ चरित्र में सुंदरता है।
जहाँ चरित्र में सुंदरता है,
वहाँ परिवार में समरसता है।
जहाँ परिवार में समरसता है,
वहाँ राष्ट्र में व्यवस्था है।
जहाँ राष्ट्र में व्यवस्था है,
वहाँ विश्व में शांति है।

आचार्य महाप्रज्ञ के साथ उनकी आत्मीयता इतनी गहरी थी कि जव वर्ष 2010 में जब आचार्य महाप्रज्ञ का सरदारशहर में महाप्रयाण हुआ तो वे उनकी अंत्येष्टि के समय सरदारशहर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

तेरापंथ के साथ उनका संबंध यहीं समाप्त नहीं हुआ। धर्मसंघ के एकादशवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण से भी वे समय-समय पर मिलते रहे। उनके प्रति भी उनकी गहरी निष्ठा थी। वे केलवा और दिल्ली में उनसे मिलने गए और धर्म, अध्यात्म सहित मानवता के हित से संबंधित विभिन्न विषयों पर बातचीत की और राष्ट्र में अहिंसा, सदाचार एवं नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए संगठित भाव से कार्य करने पर बल दिया।

राष्ट्र, समाज और मानवता के शुभचिंतक अध्यात्मसंपन्न डॉ. कलाम को जैन भारती परिवार का शत-शत नमन। ■

भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के आकस्मिक निधन पर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा दिए गए आध्यात्मिक संदेश एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा परिवार की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए एक शोक-संदेश प्रेषित किया गया, जिसे उनके जन्म स्थान रामेश्वरम में उनकी अंत्येष्टि के अवसर पर महासभा के प्रतिनिधि के द्वारा उनके परिवार को सौंपा गया।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के उद्‌गार

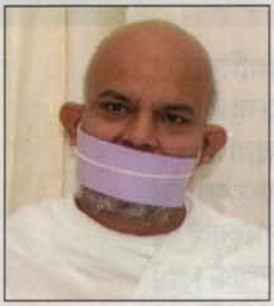

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विज्ञान जगत के व्यक्ति थे, पर उसके साथ उनमें कुछ आध्यात्मिकता भी परिलक्षित होती थी। तेरापंथ धर्मसंघ के साथ भी उनका संपर्क था। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ उनका निकट संपर्क था। वे सन 1999 में दिल्ली में आचार्य महाप्रज्ञ जी के पास एक वैज्ञानिक के रूप में आए थे। गुरुदेव ने उन्हें 'शांति की मिसाइल' के निर्माण की बात कही थी, जिसका वे यदा-कदा उल्लेख किया करते थे। भारत के राष्ट्रपति के रूप में वे प्रेक्षा विश्वभारती (गुजरात), मुंबई, सूरत और दिल्ली में गुरुदेव महाप्रज्ञ जी के पास आए थे। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के समय वे सरदारशहर भी आए थे और उसके बाद केलवा तथा दिल्ली में उनका मेरे पास भी आना हुआ था। यों उनसे एक निकटता का संपर्क रहा। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ उन्होंने एक पुस्तक लिखी – 'द फेमिली एंड द नेशन'। मिसाइल मैन एवं राष्ट्रपति के रूप में उनकी एक पहचान बनी। वे देश के एक महान व्यक्तित्व थे, गुणसंपन्न व्यक्तित्व थे। अंतिम समय में भी वे कितने सक्रिय थे। अब वे नहीं रहे। हम मंगलकामना करते हैं कि उनकी आत्मा अपना आध्यात्मिक विकास करे और जनता उनके गुणों से प्रेरणा प्राप्त करे।

महासभा द्वारा श्रद्धांजलि

MESSAGE

DR. A. P. J Abdul Kalam was a towering personality of the highest order. He was a self - made person who rose from a humble beginning to become a great scientist of international repute. He served the nation through his research and accomplishments. He was a great person who was unanimously elected the President of India. He did full justice to the great responsibility which he discharged admirably and left deep impressions of his qualities on the country and humanity.

He took up the role of messenger of peace and harmony and came in close contact with our late Acharya Mahaprajna and was greatly inspired by his thoughts and mission of Ahimsa Yatra. Dr. Kalam and Acharya Mahaprajna jointly authored the book "The Family And The Nation" which provides a roadmap for spiritual and overall integrated development of India. Dr. Kalam was in close contact with our Acharya Mahashraman also and he endorsed the spiritual and non-violence movement.

Jain Shwetamber Terapanthi Mahasabha and the entire Terapanthi Community pay rich tribute to the great statesman. Dr. Kalam's invaluable contribution will be remembered for long and he will remain immortal. May his soul rest in peace.

Kamal Kumar Dugar
President

Vinod Baid
General Secretary

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)
3, पोर्तुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700001, दूरभाष : 033-22357956 / 22343598, फैक्स : 22343666

महासभा संवाद

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज की सेवा और मानवता के कल्याण हेतु विभिन्न सेवामूलक एवं संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन करती है। इसके अंतर्गत देश के विभिन्न अंचलों में स्थित तेरापंथी संभाओं के साथ नियमित संवाद के अतिरिक्त, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उन्नयन हेतु भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का संचालन, संगठन यात्राएँ, आध्यात्मिक विकास हेतु क्रियाकलाप, संस्कार निर्माण हेतु ज्ञानशालाओं के संचालन में सहयोग तथा अन्य प्रकल्पों का परिचालन शामिल है। प्रस्तुत है अगस्त, 2015 के महीने के दौरान महासभा की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट।

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन

परम पावन आचार्य श्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में 14 अगस्त से 16 अगस्त, 2015 तक विराटनगर (नेपाल) में त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन आयोजित हुआ। विदेश की धरती पर आयोजित पहले अंतरराष्ट्रीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में 200 सभाओं के लगभग 705 प्रतिनिधि संभागी बने। दिनांक 13 अगस्त, 2015 को प्रातः 11 बजकर 11 मिनट पर पूज्यश्री से मंगलपाठ सुनकर प्रतिभागियों का पंजीकरण प्रारंभ हुआ और उसके बाद प्रथम दिन के प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा सत्र के दौरान आचार्यप्रवर का पावन पाथेय, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी एवं मुनिश्री विश्रुतकुमारजी के उद्बोधन तथा प्रशिक्षण सत्र के दौरान मुनिश्री कुमारश्रमणजी द्वारा संघीय विकास के सूत्र विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त हुए।

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों को आचार्यप्रवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ, जिसमें सभी के प्रति मैत्री भाव बनाए रखने, सभाओं में न्यायपूर्ण तरीके से समस्याओं का समाधान करने, आपसी मतभेद को समाप्त करने, परस्पर मनभेद को उत्पन्न नहीं होने देने, आपसी दुराग्रह को समाप्त करने और सदैव सबके प्रति सौहार्द बनाए रखने की प्रेरणा दी गई थी।

आचार्यप्रवर ने कहा कि सेवा का हर जगह अपना अलग महत्व है। जहाँ सेवा की भावना होती है वहाँ अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है। अतः सेवा भावना बनी रहे, मूल्यवत्ता बनी रहे, इस पर सभी को ध्यान देना चाहिए।

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में आचार्य श्री महाश्रमण जी का पावन पाथेय

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में आचार्यप्रवर ने आर्हत वाङ्मय के निम्नलिखित श्लोक को उद्धृत करते हुए महासभा के पदाधिकारियों, भारत एवं नेपाल के विभिन्न भागों से उपस्थित सभाओं के प्रतिनिधियों को जीवन-व्यवहार, कर्तव्य-अकर्तव्य, संस्था एवं समाज, संस्कार, व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्र एवं देश सेवा आदि विभिन्न पहलुओं पर अपना प्रतिबोध प्रदान किया :

अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चई।।

प्रस्तुत श्लोक में बताया गया कि आत्मा की सदा रक्षा करनी चाहिए। रक्षा का अपना महत्त्व होता है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सरकार अलग से रक्षा मंत्रालय गठित करती है। उस मंत्रालय को देखने वाला एक रक्षामंत्री होता है। देश की सुरक्षा के लिए सेना की व्यवस्था होती है, बॉर्डर पर सैनिक तैनात किए जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि सुरक्षा की दृष्टि से प्रति क्षण कितनी जागरूकता रखी जाती है। देश की सुरक्षा महत्त्वपूर्ण मुद्दा है, समाज की सुरक्षा भी महत्त्वपूर्ण मुद्दा है और शरीर की सुरक्षा भी महत्त्वपूर्ण मुद्दा है, पर एक दृष्टि से इनसे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मुद्दा है अपनी आत्मा की सुरक्षा।

प्रश्न होगा कि आत्मा की सुरक्षा किससे करनी है? उत्तर होगा - आत्मा की सुरक्षा करनी है पापकर्मों के बंधन से। रक्षा कैसे करें? इसके उत्तर में कहा गया - इन्द्रियों को सुसमाहित करो, उनका संयम करो तो पाप कर्मों से बच सकोगे। चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय - ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। इनके अतिरिक्त हाथ-पांव आदि पांच कर्मेन्द्रियां भी हैं। इन ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को सुसमाहित करो तो आत्मा की सुरक्षा हो सकेगी, आत्मा को पापकर्मों से बचाया जा सकेगा और अधिक विश्लेषण में जाएं तो मन का भी संयम करें, भावशुद्धि की साधना करें, सब प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव रखें। **'मेत्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणई'** - सब जीवों के साथ मेरा मैत्रीभाव है, किसी के साथ मेरा वैर नहीं है। मैत्रीभावना, प्रमोदभावना, कारुण्यभावना और माध्यस्थ भावना - ये चारों भावनाएं साधना की दृष्टि से और व्यवहार की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। आचार-विचार को उन्नत बनाने की दृष्टि से भी इनका बड़ा महत्त्व है। साधु तो आत्मरक्षा की साधना करे ही, उसका तो जीवन ही मानो साधना के लिए समर्पित होता है अथवा होना

चाहिए, श्रावक भी यथासंभव आत्मरक्षा की साधना करे। श्रावक साधु जितनी साधना न कर सके, तो कुछ अंशों में तो करे। उसे जितना संभव हो सके, पापकर्मों के बंध से स्वयं को बचाना चाहिए।

अनेक व्यक्ति साथ में साधना करते हैं तो संघ का, समाज का रूप बन जाता है। साधुओं का भी अपना समाज होता है, अपनी संस्था होती है और अपना समुदाय होता है। हमें जैन शासन में साधना करने का अवसर प्राप्त है। यह जैन शासन भगवान महावीर से संबद्ध शासन है। इस बार हमने भगवान महावीर से जुड़े हुए बिहार प्रांत की भूमि पर कुछ विहरण किया। हमारे काफी साधु-साध्वियों को पहली बार बिहार प्रान्त में विचरण करने का अवसर मिला है और आगे भी पुनः मिलना संभावित है। वहां हमारे श्रद्धा के और भी कितने ही क्षेत्र हैं, जहां चतुर्मास के बाद जाने का मैं अपना निर्णय बता चुका हूँ। इस यात्रा में बिहार प्रान्त अनेक बार स्पृष्ट होने वाला है।

भगवान महावीर से जुड़ा हुआ जैन शासन और उस जैन शासन में हम लोग जिस परंपरा में, संप्रदाय में साधना कर रहे हैं, वह तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य भिक्षु से जुड़ा हुआ धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु इस संप्रदाय के प्रथम आचार्य रहे हैं। उन्होंने इस संगठन को व्यवस्था प्रदान की। उनकी परंपरा में अतीत में हमारे कुल दस आचार्य हुए हैं, जिन्होंने तेरापंथ धर्मशासन की सेवा की है, उसे आगे से आगे बढ़ाया है। हमें निकट अतीत में साक्षात रूप में गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञजी का नेतृत्व और अधिशासतृत्व प्राप्त हुआ है। वे हमारे नाथ थे, शासन के सरताज थे, हमारे गुरु थे, धर्माचार्य थे, धर्मोपदेशक थे। उनके चरणों में रहने का, हममें से कितनों को सुअवसर प्राप्त हुआ है।

जहां समाज होता है, वहां व्यवस्था की भी अपेक्षा होती है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा कोई नई संस्था नहीं है। यह परमपूज्य कालूगणी के आचार्यकाल में प्रादुर्भूत हुई संस्था है। शताधिक वर्षों का आयुष्य प्राप्त कर चुकी है और आगे भी लंबे समय तक पुनीत कार्य करती रहे, ऐसी हमारी मंगलकामना है। धर्मसंघ से संबद्ध अनेक संस्थाएं हैं, पर मेरी दृष्टि में सबसे प्रमुख संस्था महासभा है। यह तेरापंथ समाज की प्रतिनिधि संस्था है। 'महासभा' बिल्कुल सही नाम है, इसके नाम के साथ 'महा' जुड़ा होने से स्पष्ट रूप से ध्वनित होता है कि यह महान या बड़ी सभा/संस्था है। अब तो विदेशों से भी इसका संबंध जुड़ रहा है, इससे इसका स्वरूप और ज्यादा विकसित हो सकेगा।

समाज की सुरक्षा करना, समाज को विकास की दिशा में आगे बढ़ाने पर ध्यान देना, समाज के हितों और आने वाली समस्याओं पर तथा समाज के व्यक्तियों पर भी अपेक्षानुसार ध्यान देना, इस प्रकार महासभा पर कितने-कितने दायित्व हैं। इस संस्था में आने वाले पदाधिकारी इसके लिए कितना समय देते हैं। उनके अपने पारिवारिक और व्यावसायिक कार्य होते होंगे, अर्थार्जन के उपक्रम चलते होंगे। इन कार्यों में संलग्न और व्यस्त होते हुए भी महासभा को वे कितना समय दे रहे हैं, यह विशिष्ट बात है। शारीरिक श्रम ही नहीं, उन्हें कितने मानसिक श्रम का भी नियोजन करना पड़ता होगा। वृद्धावस्था प्रायः निवृत्तावस्था होती है। ऐसी अवस्था में तो फिर भी आसानी से अपना समय समाज और संस्था को दिया जा सकता है, किंतु ऐसे कार्यकर्ता, जो युवावस्था में हैं, जो अपने परिवार को, अपने व्यवसाय को भी संभाल रहे हैं, वे अपना समय समाज की बड़ी और प्रतिनिधि संस्था में लगा रहे हैं तो यह अपने आप में विशिष्ट और महत्त्व की बात हो जाती है।

आज कितनी-कितनी गतिविधियां महासभा द्वारा संचालित हो रही हैं। देश भर में कितनी-कितनी सभाएं हैं, उनके अपने कितने-कितने भवन हैं, कितना बड़ा नेटवर्क है। तेरापंथी सभाएं भी अपने-अपने क्षेत्रों में मेरी दृष्टि में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्था होती हैं। वे कितना दायित्व वहन करती हैं। अपने आचार्य और अनुशास्ता के प्रति उनसे जुड़े व्यक्तियों के मन में कितना सम्मान और समर्पण का भाव देखने को मिलता है। साधु-साध्वियों और समणश्रेणी की सेवा में अपना कितना श्रम और समय लगाते हैं। ज्ञानशाला आदि के संचालन में तेरापंथी सभाओं का कितना योगदान रहता है।

महासभा और सभाएं आपस में जुड़ी हुई हैं। उनमें मां-बेटियों जैसा संबंध है। सभाओं के मंत्री, पदाधिकारी, कार्यकारिणी के सदस्य अपने दायित्व के प्रति सजग रहें। सब क्षेत्रों में अच्छी व्यवस्था रहे। न्याय रहना चाहिए और उसके साथ-साथ मैत्रीभाव भी रहना चाहिए। कोई समस्या आए तो न्यायपूर्ण तरीके से अपने स्तर पर उसका समाधान हो। समाधान न हो सके तो महासभा के समक्ष अपनी बात रखें। वहां से कुछ समाधान न हो तो हमारे पास अपनी बात रख सकते हैं। हम सब एक ही संघ से जुड़े हैं तो हमारे कुछ हित भी समान हैं। शरीर के एक हाथ की अंगुली में दर्द है तो वह दर्द पूरे शरीर को प्रभावित कर सकता है। इसी प्रकार समाज और संगठन एक होता है तो उनमें से एक की समस्या दूसरे की

समस्या बन सकती है। इसलिए जहां अपेक्षा हो, वहां एक-दूसरे की समस्या के समाधान का प्रयास होना चाहिए। अनावश्यक बीच में पड़ना तो ठीक नहीं, किंतु जहां अपेक्षा हो, वहां एक-दूसरे का सहयोग करने का, एक-दूसरे की समस्या के समाधान का समुचित प्रयास होना चाहिए।

जहां समुदाय है, संगठन है, वहां सबके अपने-अपने विचार हो सकते हैं, होते भी हैं। कहा गया है -

मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना, कुंडे कुंडे नवं पयः।
जातौ-जातौ नवाचाराः, नवा वाणी मुखे-मुखे।।

मति सबकी अलग-अलग हो सकती है, यह कोई बुरी बात नहीं है। मैं तो मतभेद को बुद्धिमत्ता का प्रमाण मानता हूँ। यह विचारों की स्फुरणा का प्रतीक है। बुद्धि होगी, तर्क होगा, प्रतिभा होगी तभी तो मतभेद होगा। निर्बुद्धि भला क्या मतभेद करेगा? पर मतभेद जब मनभेद का रूप ले लेता है तो बात विचारणीय हो जाती है। मतभेद हो जाए तो फिर यह देखना चाहिए कि किसके विचार में कितनी बलवत्ता है, किसके विचार ज्यादा समीचीन हैं। कभी-कभी गलतफहमी से भी मनभेद हो सकता है। पूरी बात सुनी नहीं, समझी नहीं और निष्कर्ष निकाल लिया। ऐसी स्थिति में एक साथ बैठेंगे, बात करेंगे, मन को खोलेंगे, तब अनेक मतभेद तो गलतफहमी दूर होते ही दूर हो जाएंगे, लेकिन किसी गलतफहमी के बिना मतभेद हो तो एक-दूसरे के विचारों को सुनने का प्रयास करें, अपने आग्रह को छोड़कर समाज के हित की दृष्टि से चिंतन करें तो मतभेद दूर हो सकता है। कदाचित मतभेद न भी मिटे तो भी मनभेद की स्थिति नहीं आनी चाहिए। ठीक है आज विचार नहीं मिले तो आगे कभी मिल सकते हैं, लेकिन मनभेद दूरी को बढ़ा सकता है। यह समाज का भी भी बहुत नुकसान कर सकता है। इसलिए मनभेद न हो, ऐसा सबका प्रयास होना चाहिए। विचार न भी मिलें, लेकिन हम एक ही संघ के सदस्य हैं, एक समाज के हैं, इसलिए व्यक्तिगत मतभेद समाज और संस्था के हित में बाधक नहीं बनने चाहिए। संघ का हित अपने हित से बड़ा है। मतभेदों के कारण समाज और संस्था का अहित नहीं होना चाहिए। दुराग्रह भी नहीं होना चाहिए। बात समझ में आ जाए तो फिर आदमी को दुराग्रह तो करना ही नहीं चाहिए,

अपने आग्रह को भी छोड़ देना चाहिए। तुम्हारी बात सही है, इसलिए अब मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ और अपनी बात को वापस लेता हूँ, अब हम मिलकर काम करेंगे - इस प्रकार आपसी मनोमालिन्य को मिटाकर परस्परता की भावना से दोनों पक्षों को संस्था के कार्य में लग जाना चाहिए। विचारभेद, मतभेद, चिंतनभेद को यथार्थ के धरातल पर बैठकर मिटाने का यथोचित प्रयास

करना चाहिए। विचारभेद न भी मिटे तो मैत्रीभाव और सौहार्द बना रहना चाहिए।

हमारे साधु-साध्वियां और समणश्रेणी के सदस्य जगह-जगह पर जाते हैं। साधु-साध्वियां लम्बी पदयात्रा कर असम, बंगाल, बिहार, ओड़िसा और दक्षिण के प्रान्तों में जाते हैं। समाज कल्याण के लिए, धर्मसंघ के लिए वे कितना परिश्रम करते हैं। श्रावक समाज उनकी सेवा और व्यवस्था पर ध्यान देता है। श्रावक समाज का सहयोग न मिले तो सुदूर प्रांतों की यात्रा संभव कैसे हो सकती है? सभाएं विशेष रूप से इसमें अपना दायित्व निभाती हैं। आज सभाओं का प्रतिनिधि सम्मेलन प्रारंभ हो रहा है। तेरापंथी सभाओं का यह प्रतिनिधि सम्मेलन मिलने-जुलने का भी अच्छा अवसर है, कुछ प्रशिक्षण भी मिल सकता है, अनुशास्ता और चारित्रात्माओं के दर्शनों का लाभ भी मिल जाता है। तेरापंथी सभाओं को समुचित रूप में प्राप्त होता रहे। तेरापंथी सभाओं का भी यह फर्ज है कि उन्हें महासभा का समुचित सम्मान रखना चाहिए। उनमें यह भावना रहे - महासभा कोई बात कह रही है, उसका हमें सम्मान रखना है। उसके निर्देश को हमें सम्मान देना है। महासभा द्वारा निर्देशित कोई बात न जंचे तो दुबारा उसका चिंतन लेने का प्रयास करना चाहिए कि यह बात ऐसे हो जाए तो उपयुक्त रहेगा। फिर भी बात न बने तो हमारे पास अपेक्षानुसार अपनी बात रखी जा सकती है। महासभा कोई व्यक्ति नहीं, संस्था है। व्यक्ति तो बदलते रहते हैं, पांच वर्ष के बाद तो सरकार भी दूसरी आ सकती है। लेकिन सरकारें बदल जाने से देश तो नहीं बदल जाता? सरकारें बदल सकती हैं, पर देश तो वही रहता है। इसी प्रकार व्यक्ति बदल जाते हैं, किंतु संस्था तो वही रहती है। व्यक्ति का महत्त्व है, पर संस्था का महत्त्व उससे भी ज्यादा है। इसलिए समाज हित के लिए व्यक्तिगत हित को गौण कर देना चाहिए। संस्कृत में कहा गया -

"त्यजदेकं कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थ सकलं त्यजेत्।।

कुल के हित के लिए एक के हित को छोड़ देना चाहिए। गांव के हित के लिए कुल के हित को गौण कर देना चाहिए। जनपद के हित के लिए गांव के हित को छोड़ देना चाहिए और आत्मा के हित के लिए तो संसार को छोड़कर साधु बन जाना चाहिए। इस प्रकार संस्था और समाज बड़े होते हैं, व्यक्ति उनसे बड़ा नहीं हो सकता। बड़े हित के लिए छोटे हित को गौण कर देना चाहिए। सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में चिंतन-मंथन के साथ अपेक्षानुसार शिक्षण-प्रशिक्षण भी मिले, अच्छे विचार सामने आएं, कुछ धार्मिक और आध्यात्मिकतापूर्ण बातें सामने आएं। यह सम्मेलन अच्छे तरीके से निष्पत्ति के साथ संपन्न हो, हमारी मंगलकामना।"

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विशिष्ट धर्मसंघ है और इसकी विशिष्टता के अनेक कारण हैं। यहाँ सभी साधु-साध्वियां एक आचार्य के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। धर्म, गुरु का मार्गदर्शन बड़ा उपयोगी होता है। संघ हमारे लिए बहुत बड़ा आश्वासन होता है, यह शीतघर के समान होता है। संघ माता-पिता के समान होता है। गुरुदर्शन से समस्याओं का समाधान मिलता है, क्योंकि हमारे आचार्य के पास अंतर्दृष्टि होती है।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कहा कि जागृत समाज वह होता है जिसके सदस्य अपने दायित्व को समझते हैं, जिन्हें अपने दायित्व का बोध होता है तथा जो अपने दायित्व का अनुभव करते हैं। समाज में संस्था का अपना अलग महत्व होता है। संस्था के माध्यम से समाज का विकास होता है। संस्था के बिना व्यक्ति समाज का विकास नहीं कर सकता। संस्था में काम करनेवाले व्यक्ति को लगे कि उसके द्वारा किए गए कार्यों में कोई कमी नहीं है, वह परिपूर्ण है। जो व्यक्ति दूसरे को सहयोग देते हैं, श्रेय देते हैं वे सफल होते हैं। सफलता के राज को उद्घाटित करते हुए उन्होंने कहा कि आज के समय में स्मार्ट होना सफल व्यक्तित्व की पहचान है। स्मार्ट होने का मतलब है काम को अच्छे ढंग से करना। स्मार्ट की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि -

S - Simplicity - सादगी

M - Morality - नैतिकता

A - Accountablity - प्रतिबद्धता

R - Responsibility - जिम्मेदारी

T - Transparency - पारदर्शिता

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने उपस्थित प्रतिनिधियों को नशामुक्ति की दिशा में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने हर स्थिति में आत्मानुशासन बनाए रखने की प्रेरणा दी और कहा कि हर व्यक्ति अपनी व्यस्त दिनचर्या में से थोड़ा समय निकालकर आत्मचिंतन करे। संस्थाओं में कार्य के लिए वार्षिक कार्यक्रम निर्धारित होते हैं। वर्ष की समाप्ति पर यह समीक्षा करनी होती है कि कौन-कौन से काम हो गए और कौन-कौन से काम अवशेष रह गए। जो अवशेष रह गए हैं उसमें ऐसे कितने काम हैं जो किए जा सकते थे लेकिन नहीं किए गए या अब भी जो काम किए जा सकते हैं लेकिन उसे करने की मानसिकता नहीं है और उसका कारण क्या है? अगर इन साधारण प्रश्नों पर गहराई से गौर किया जाए तो व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। वह अपनी क्षमताओं को समझ सकता है। अपनी कार्यशैली को समझ सकता है। करणीय कार्यों की सूची पर नजर डालने से यह समझ में आ जाता है कि जो काम किए गए वे कितने आवश्यक थे और कितने कार्य ऐसे थे जिसके बिना काम चल सकता था और अब जो कार्य अवशेष रह गए हैं उन कामों को कैसे निष्पादित करना है उनका क्या क्रम हो? किसे प्राथमिकता देनी है, इन सब बातों का जो निष्कर्ष

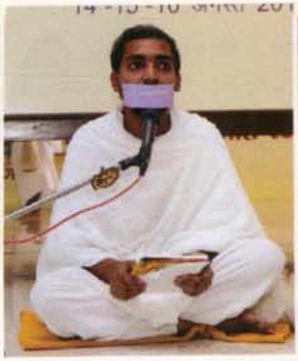
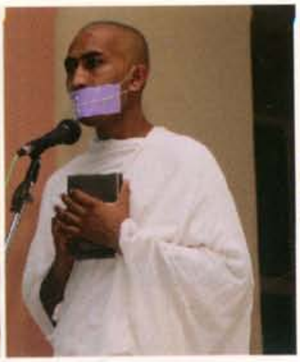

निकलता है वह भावी कार्यक्रमों की आधारशिला बनता है। उन्होंने भगवान महावीर उस सूत्र को दुहराया, जिसमें कहा गया है कि मैंने जो कुछ किया उसमें प्रमादवश कुछ गलती हो गई, स्खलना हो गई लेकिन अब मैं उसे नहीं दोहराऊँगा। यह सूत्र श्रावक समाज के लिए चिंतन-मंथन का सूत्र है। जब भी हमें लगता है कि प्रमाद हुआ है तो यह हमें आगे बढ़ने से रोक देता है। हमारे लिए सामंजस्य के साथ रहना भी जरूरी होता है। क्योंकि सामुदायिक जीवन में कुछ कहना-सुनना हो ही सकता है। इसके बिना काम नहीं चल सकता। केवल कहा ही कहा जाए तो धागा टूट जाता है और केवल सहा ही सहा जाए तो धागा छूट जाता है। धागा का न तो छूटना ठीक है और न ही धागा का टूटना ठीक है। जो लोग काम करते हैं उन्हें स्वयं अपने काम का मूल्यांकन भी करना चाहिए। सभा संस्थाओं द्वारा उपशाखाओं का उनके कार्यों के अनुसार मूल्यांकन किया जाता है परंतु व्यक्ति को स्वयं के द्वारा किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना चाहिए। उन्होंने परिस्थितियों के प्रबंधन के प्रयास पर बल दिया।

महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक **मुनिश्री विश्रुतकुमारजी** ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक सुव्यवस्थित धर्मसंघ है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि यह एक अद्वितीय धर्मसंघ है। पूरी दुनिया में ऐसा धर्मसंघ मिलना मुश्किल है। इस धर्मसंघ में आचार्य भिक्षु से लेकर आचार्य महाश्रमण तक की आचार्य परंपरा गौरवशाली रही है। यह धर्मसंघ कल्पतरु और कल्पवृक्ष के समान है। महासभा द्वारा आयोजित इस तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में आए हुए प्रतिनिधियों को पूज्यप्रवर से एक खुराक प्राप्त होती है। प्रतिनिधिगण अपने क्षेत्र में जाकर पूज्यप्रवर से प्राप्त पाथेय को श्रावक समाज से बाँटें तथा महासभा द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी से श्रावक समाज को अवगत कराएं।

उन्होंने कहा कि महासभा की सामाजिक और धार्मिक गतिविधियाँ सभाओं द्वारा संचालित होती हैं। ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी तथा साधु-साध्वियों के रास्ते की सेवा आदि में सभाओं की विशेष भूमिका रहती है।

मुनिश्री ने कहा कि जो लोग सभा में किसी पद पर आते हैं तो वे क्यों आते हैं? इसके बारे में उन्हें सोचना चाहिए। उनका एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि वे धर्मसंघ की सेवा करें। वे यह सोचें कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँ जिससे मेरे व्यक्तित्व पर कोई प्रश्न चिह्न लगे। उन्होंने कहा कि श्रावक समाज की सार-संभाल एक टीम बनाकर करनी चाहिए। नये लोग जो जुड़ें उनकी सार-संभाल करनी चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान **महावीर मुनि** द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

संघीय विकास के सूत्र विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए **मुनिश्री कुमारश्रमणजी** ने कहा कि आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति विकास करना चाहता है लेकिन न तो दिशा है और न ही कोई योजना। उन्होंने कहा कि विकास दो तरह के होते हैं - भौतिक विकास और आध्यात्मिक विकास। मुनिश्री ने कहा कि केवल

भौतिक विकास सभा संस्था का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से दोनों का विकास होना चाहिए। उन्होंने इन दोनों सूत्रों के अंतर्गत संसाधनों का विकास, संस्कारों का विकास, सौहार्द का विकास, अनुशासन का विकास एवं आस्था का विकास - इन सबके बारे में विस्तार से व्याख्या की।

मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने अपने उद्बोधन में साधु और श्रावक के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि जहाँ साधु संयोग से मुक्त होता है वहीं श्रावक संयोग से युक्त होता है। साधु अकिंचन होता है तो गृहस्थ किंचन होता है। साधु भिक्षु होता है तो श्रावक गृहस्थ होता है। जो समाज के साथ जुड़ा हुआ है, जो लौकिक व्यवहार से जुड़ा हुआ है वह श्रावक कहलाता है। मुनिश्री ने कई उदाहरणों के द्वारा साधु और श्रावक के बीच अंतर को स्पष्ट किया।

जिज्ञासा समाधान सत्र के अंतर्गत मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ का संविधान बनाया। साधुओं के लिए एवं श्रावक समाज के लिए। मुनिश्री ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करने के उपरांत कहा कि श्रावक समाज का साधु-संतों के प्रति श्रद्धा और समर्पण सदैव बढ़ना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि श्रावक समाज खान-पान की शुद्धि पर ध्यान दें, वे अपने संस्कारों को नहीं छोड़ें, प्रतिदिन कम से कम एक सामायिक अवश्य करे।

मुनिश्री प्रिंस कुमार ने कविता पाठ करते हुए सभा प्रतिनिधियों को प्रेरित किया।

प्रारंभ में त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महासभा के अध्यक्ष **श्री कमल कुमार दुगड़** ने सम्मेलन के शुभारंभ की उद्घोषणा एवं श्रावक निष्ठापत्र का वाचन किया। सभा प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था है, जिसका 102 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। मानवीय चेतना को जगाने के लिए जो कार्य शुरू हुआ वह आज भी

निरंतर गतिमान है। उन्होंने महासभा द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, आयोजनों आदि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित धर्मसंघ है और हमें गर्व है कि हम इस धर्मसंघ के सदस्य हैं। महासभा देशभर में फैली लगभग 553 सभाओं के माध्यम से विभिन्न परियोजनाओं को क्रियान्वित करने हेतु सतत प्रयत्नशील है। महासभा ने वर्तमान अपेक्षाओं को समझते हुए कुछ योजनाओं को अपने हाथ में लिया है जिसे हम सबको मिलकर सफल बनाना है।

शताब्दी अक्षय निधि कोष के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि देश व विश्वव्यापी तेरापंथी समाज की व्यवस्थाओं को दीर्घकाल तक सुदृढ़ रूप देने हेतु एवं प्रत्येक तेरापंथी सदस्य को महासभा के द्वारा सामाजिक व्यवस्थाओं में जोड़ने के लिए आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह वर्ष और महासभा के नई शताब्दी में चरण न्यास के क्षणों में महासभा द्वारा शताब्दी अक्षय निधि कोष की स्थापना का चिन्तन किया गया, जिससे प्रत्येक सदस्य के मन में गौरव की अनुभूति हो कि मेरा भी सामाजिक व्यवस्थाओं में योगदान है। इस योजना को क्रियान्वित करते हुए इसमें तेरापंथी समाज के प्रत्येक सदस्य को रु. 11,000/- की राशि के सहयोग के साथ इस संस्था के आर्थिक सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करने का आह्वान किया गया। 'शताब्दी अक्षय निधि कोष' की स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि कोष की मूल राशि को

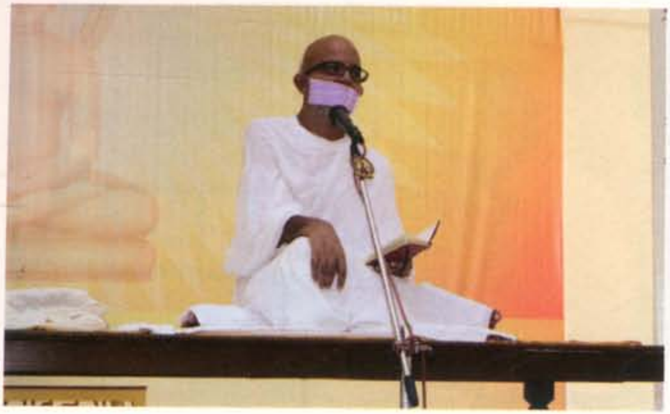

अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से संस्था की जरूरतों के साथ-साथ सामाजिक अपेक्षाओं की संपूर्ति की जाए। शताब्दी अक्षय निधि कोष के अनुदानदाताओं का नाम एवं विवरण महासभा में अमिट रूप से अंकित रहे इस हेतु एक ग्रन्थ का प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

अनुदानदाताओं का महासभा द्वारा अनुदान अनुमोदना पत्र द्वारा सम्मानित करने की योजना है। इसके अतिरिक्त जैन विश्व भारती परिसर में एक इलेक्ट्रोनिक कियोस्क का भी निर्माण किया जाएगा, जिसके बटन को दबाकर कोई भी व्यक्ति अनुदानदाताओं की सूची में अपना नाम या अपने पूर्वजों का नाम देख सकेंगे। यह समाज की भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का महान स्रोत बनेगा। इसके साथ ही अनुदानदाता का व्यक्तिगत सम्मान करने का भी प्रावधान रखा गया है। इससे साधार्मिक संपर्क अभियान बढ़ेगा।

उन्होंने पूज्यप्रवर के इंगितानुसार आचार्य तुलसी युग के अनमोल रत्न एवं तेरापंथ समाज की दो महान विभूतियों - **स्व. श्री श्रीचंदजी गधैया एवं श्री सुगनचंदजी आंचलिया** को तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च सम्मान '**समाज भूषण**' अलंकरण प्रदान करने की घोषणा की, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपने परिश्रम, समर्पण, त्याग, तपस्या, कष्ट सहन, बलिदान से संस्थाओं के माध्यम से धर्मसंघ, समाज को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और सेवा एवं समर्पण की अनोखी मिसाल कायम की थी।

100 नई तेरापंथी सभाओं के गठन तथा 100 तेरापंथ भवन निर्माण के संदर्भ में श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष और महासभा के दूसरी नई शताब्दी में प्रवेश के अवसर पर अगले दो वर्षों में **100 नई तेरापंथी सभाओं के गठन** का निश्चय किया गया है। इसका मूल उद्देश्य आध्यात्मिक, सामाजिक और मानवीय सेवा से संबंधित गतिविधियों का संचालन तथा पूर्ववर्ती आचार्यों की गतिशील परम्परा के साथ-साथ आचार्यश्री महाश्रमण जी के अवदानों को व्यवस्थित रूप से समाज तक पहुँचाना और समाज की सुदृढ़ व्यवस्था तथा आध्यात्मिक विकास को और अधिक शक्तिशाली बनाना है। हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि इन 17 महीनों में अब तक 37 नई सभाओं का गठन हो चुका है।

उन्होंने बताया कि आज पूरे भारतवर्ष में सभाओं की संख्या केवल 553 के करीब है जबकि 1587 स्थानों पर तेरापंथी परिवार निवास करते हैं। अतः भारत के हर प्रदेश एवं सुदूर क्षेत्रों में, जहाँ कम से कम 13 तेरापंथी परिवार प्रवासित हों, ऐसे स्थानों पर 100 तेरापंथ भवनों के निर्माण की योजना बनाई गई है, जिसमें महासभा आर्थिक सहयोग करेगी। इसके लिए निर्धारित अर्हताओं की पूर्ति सभाओं से अपेक्षित है। इसके अंतर्गत सभा की स्वयं की जमीन हो तथा भवन के शिलान्यासकर्ता द्वारा 11 लाख रुपये के अनुदान की स्वीकृति हो तथा सभा को आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अंतर्गत छूट का प्रमाण पत्र प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि महासभा ने इस योजना के क्रियान्वयन हेतु समाज के उदारमना परिवारों से सम्पर्क कर एक-एक करोड़ की राशि के अनुदान हेतु 30 अनुदानदाताओं से अनुरोध किया, जिसके फलस्वरूप अब तक 19 परिवारों से सहयोग हेतु स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है एवं कुछ अनुदानदाताओं ने राशि भी महासभा को प्रेषित कर दी है। इस योजना में अब तक लगभग 57 नए भवन बनाने हेतु आवेदन प्राप्त हुए हैं तथा 5 भवन को राशि प्रेषित भी की जा चुकी है तथा एक और भवन को शीघ्र ही राशि प्रेषित किया जाना है।

नेपाल भूकंप आपदा राहत कोष के संदर्भ में महासभा अध्यक्ष ने कहा कि परम पूज्य आचार्यप्रवर की अनुकम्पा से नेपाल में भूकंप पीड़ित मानवता को सहायता पहुंचाने की दृष्टि से महासभा द्वारा लगभग 70-80 लाख रुपये मूल्य की राहत सामग्री प्रेषित की गई। यह सामग्री भाई श्री तुलसी दुगड़ के संपर्क एवं प्रयास के कारण लगभग 35 लाख में प्राप्त हुई। नेपाल भूकम्प राहत कोष में अब तक रु. 2,84,25,008/- की राशि के अनुदान की घोषणा हो चुकी है, जिसमें लगभग 2.45 करोड़ की राशि प्राप्त हो चुकी है। अवशिष्ट राशि का नियोजन संघीय केन्द्रीय स्तर पर हुए निर्णय के अनुसार जय तुलसी फाउण्डेशन को हस्तांतरित किया जाएगा एवं जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा प्रधानमंत्री राहत कोष में संघीय अनुदान का नियोजन कर किया जाएगा।

श्री कमल कुमार दुगड़ ने उपस्थित जनसमुदाय को महासभा द्वारा संचालित गतिविधियों, जैसे ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, साहित्य, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल के सुव्यवस्थित संचालन हेतु स्थायी कोष के निर्माण आदि की जानकारी दी।

सभाओं के सम्यक संचालन के संदर्भ में उन्होंने कहा कि सभा में पद कोई अलंकार की वस्तु नहीं है, बल्कि एक चुनौती है। सभा के सम्यक संचालन में सर्वप्रथम यह देखा जाता है कि सभा की नैतिकता क्या है? क्योंकि वैधानिक प्रक्रिया में समय लग सकता है, नैतिक प्रक्रिया

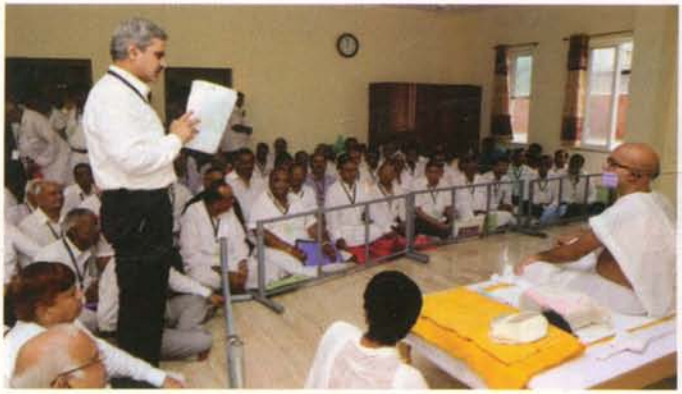

में नहीं। सभाओं में चुनाव 2 वर्ष के अंतराल पर जून-जुलाई में हो जाना चाहिए। वित्तीय व्यवस्थाओं में पारदर्शिता रहनी चाहिए। वर्ष में कम से कम 4 बैठकें अवश्य होनी चाहिए। मिनिट्स बुक आदि पूरी कम्पलीट रहनी चाहिए। उन्होंने सभाओं के सम्यक संचालन हेतु तीन 'एम' (अर्थात मोरल पावर, मैनेजमेंट पावर और मैन पावर) का विस्तृत उल्लेख करते हुए इसे कार्यान्वित करने हेतु आह्वान किया।

दिनांक 15.08.2015 को दोपहर लगभग 12 बजे से चयनित सभाओं का परिचय एवं प्रस्तुति सत्र आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित किया गया, जिसमें महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने श्रेष्ठ एवं विशिष्ट सभाओं के चयन की प्रक्रिया की अवगति श्रीचरणों में निवेदन की एवं तत्पश्चात चयनित सभाओं में से 11 सभाओं के पदाधिकारियों ने संक्षेप में अपनी सभा के विशिष्ट कार्यों की जानकारी श्रीचरणों में निवेदित की। लगभग 40 मिनट के इस सत्र में अनेक सभाओं के विशिष्ट कार्य दूसरी सभाओं के लिए प्रेरणा के हेतु बने।

श्रेष्ठ सभा चयन प्रक्रिया के अंतर्गत दिनांक 15 अगस्त, 2015 को दोपहर के साक्षात्कार सत्र में चयनित सभाओं के पदाधिकारियों से साक्षात्कार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रेष्ठ सभा हेतु चयनित सभाओं - - साउथ कलकत्ता, मुम्बई, चेन्नई, हैदराबाद, सूरत का चयन समिति के सदस्यों द्वारा संबंधित सभाओं के

वार्षिक विवरण पत्र के विभिन्न बिंदुओं पर साक्षात्कार लिए जाने के उपरान्त श्रेष्ठ सभा के रूप में हैदराबाद एवं सूरत सभा का चयन किया गया। विशिष्ट सभा हेतु चयनित सभाओं - साउथ हावड़ा, उदयपुर, उधना, गंगाशहर, नोखा, कटक, दुबई (टिटिलागढ़ सभा इस साक्षात्कार में उपस्थित नहीं हो सकी) का साक्षात्कार लिया गया और दक्षिण हावड़ा सभा को विशिष्ट सभा के रूप में चयनित किया गया, जिसकी घोषणा रात्रिकालीन सत्र में की गई। एक अन्य विशिष्ट सभा का चयन स्थगित रखा गया क्योंकि टिटिलागढ़ सभा इस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सकी। साक्षात्कार सत्र का संचालन महासभा के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ ने किया।

श्रेष्ठ विशिष्ट सभा की घोषणा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने बताया कि इस वर्ष निर्णायक मंडल द्वारा हैदराबाद एवं सूरत सभा को संयुक्त रूप से श्रेष्ठ सभा के रूप में चयनित किया गया है। **प्रथम विशिष्ट सभा** के अंतर्गत दक्षिण हावड़ा सभा को चयनित किया गया है एवं साक्षात्कार में एक छोटी सभा के प्रतिनिधि की अनुपस्थिति के कारण एक अन्य विशिष्ट सभा का चयन किया जाना बाकी है।

इसके पूर्व महासभा के महामंत्री व प्रतिनिधि सम्मेलन के संयोजक **श्री विनोद बैद** ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की और कहा कि महासभा का प्रतिनिधि सम्मेलन एक विशेष उपक्रम है, जिसमें वर्ष भर में किए कार्यों की समीक्षा तथा आनेवाले कार्यक्रमों के बारे में चिंतन किया जाता है। इसके अलावा देशभर की सभाओं के पदाधिकारियों, श्रावकों को मौका मिलता है कि वे एक-दूसरे से परिचित हों तथा आपस में किए गए कार्यों की चर्चा करें और महासभा की गतिविधियों, प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने-अपने क्षेत्रों में उसे संचालित करने का पूरा प्रयास करें। अगस्त में प्रतिनिधि सम्मेलन आयोजित करने का एक कारण यह भी है कि जून-जुलाई में चुनाव सम्पन्न होने के बाद नये अध्यक्ष अपनी टीम के साथ उपस्थित होकर जानकारी प्राप्त करें।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विराटनगर के अध्यक्ष **श्री दिनेश गोलछा** एवं आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, विराटनगर के अध्यक्ष **श्री मालचन्द सुराणा** ने पूज्य प्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित प्रथम अंतरराष्ट्रीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में देश भर से समागत सभा प्रतिनिधियों का स्वागत किया और तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन को सफल बनाने हेतु सभी प्रतिनिधियों से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की।महासभा के प्रधान न्यासी **श्री बिमल कुमार नाहटा** ने कहा कि महासभा की वर्तमान टीम के कार्यकाल का दूसरा प्रतिनिधि सम्मेलन विदेश की धरती नेपाल में आयोजित हो रहा है। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों से महासभा की गतिविधियों, विशेषकर शताब्दी अक्षय निधि कोष के बारे में जानकारी देते हुए इससे जुड़ने हेतु आह्वान किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक **श्री निर्मल नौलखा** ने महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञान और आचरण का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान को दो भागों में बांटा जा सकता है - एक लौकिक विद्या और दूसरा सम्यक ज्ञान। इसी प्रकार आचरण को भी हम दो भागों में बांट सकते हैं - 1. सार्वजनिक आचरण - अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय आदि को अपनाना; 2. संघीय आचरण, जिसके अंतर्गत ज्ञानशाला का संचालन तथा उपासक श्रेणी को रखा जा सकता है। ज्ञानशाला के द्वारा बच्चों में सद्संस्कारों का बीजारोपण करना है। वर्तमान में लगभग 2700 से ज्यादा शिक्षिकाएं अवैतनिक रूप से अपनी सेवाएं दे रही हैं। उन्होंने उपस्थित सभाओं के प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि जहाँ पर ज्ञानशालाएँ नहीं चल रही हैं वहाँ पर यथाशीघ्र ज्ञानशाला का शुभारंभ करें और सलक्ष्य इस कार्य को गति देने का प्रयास करें।

उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक **श्री डालिमचन्द नौलखा** ने उपासक श्रेणी के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि उपासक श्रेणी धर्मसंघ को सुरक्षा प्रदान करनेवाली अत्यंत महत्वपूर्ण और विशुद्ध आध्यात्मिक प्रवृत्ति है। इसका दायित्व प्रारंभ से ही महासभा को प्राप्त है और महासभा कुशलतापूर्वक इसका निर्वहन कर रही है। उपासकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अध्ययनशील व्यक्ति का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह धर्मसंघ के यथार्थ स्वरूप को भली-भाँति समझे और सम्यक जानकारी प्राप्त करे। आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने का मजबूत आधार है - उपासक श्रेणी। उन्होंने महासभा द्वारा संचालित इस प्रवृत्ति के निरंतर हो रहे विकास का उल्लेख किया।

सहभागिता योजना के राष्ट्रीय प्रभारी **श्री किशनलाल डागलिया** ने सहभागिता योजना की जानकारी देते हुए कहा कि सहभागिता का अर्थ है - सहयोग। इस योजना में तन, मन और धन से सहयोग करना चाहिए। इसका मूल लक्ष्य आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का धर्मसंघ से जुड़ाव प्रमुख है। उन्होंने कहा कि अभी भी काफी सभाएं इस योजना के अंतर्गत लगभग निष्क्रिय हैं। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि 31 दिसम्बर, 2015 तक हमें इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहिए। उन्होंने आचार्यश्री के प्रबोधनों का उल्लेख करते हुए कहा कि बड़े हित के सामने छोटे हित को छोड़ देना चाहिए।

अहिंसा यात्रा के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि दिनांक 9 नवंबर, 2014 से अहिंसा यात्रा की शुरुआत हुई और अभी यह निरंतर प्रवर्द्धमान है। आचार्यश्री महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्य निर्धारित किए हैं - सद्भावना का संप्रसार, नैतिकता का प्रचार-प्रसार एवं नशामुक्ति का अभियान। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से आह्वान किया कि प्रत्येक सभा के कम से कम 10 कार्यकर्ता अहिंसा यात्रा में सम्मिलित होकर रास्ते की सेवा कार्य में अपना योगदान दें। इस हेतु सभाएं पूर्व में सूचना देकर तिथि का निर्धारण कर सकते हैं।

महासभा के कोषाध्यक्ष एवं जैन भारती के संपादक **श्री सुरेन्द्र बोरड़** ने जैन भारती के संदर्भ में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि महासभा तेरापंथ समाज में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं लोकोत्तर जीवन निर्माण की दिशा में सदैव सक्रिय रही है और समाज में साहित्य को समृद्ध करने के प्रति सदैव सजग रही है। जैन भारती को तेरापंथ समाज की पहली पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है।

महासभा द्वारा प्रकाशित जैन भारती तेरापंथ समाज की प्रमुख पत्रिका है जिसमें मुख्यत: जैन दर्शन से संबंधित उच्च कोटि की सामग्री तथा भारतीय जैन दर्शन के आलोक में तेरापंथ धर्मसंघ के दार्शनिक, आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण प्रकाशित किए जाते हैं। इसके साथ ही इसमें साहित्यिक रचनाओं एवं मानव मूल्यों से संबंधित आलेख भी निरंतर प्रकाशित किए जाते हैं। महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ वर्तमान में जैन भारती के प्रधान संपादक का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं एवं उनके नवोन्मेषी नेतृत्व में पत्रिका की पठनीय सामग्री में निरंतर विकास हो रहा है।

मार्च 2015 से जैन भारती का प्रकाशन महासभा प्रधान कार्यालय, कोलकाता से किया जा रहा है, जिसमें महासभा का मुखपत्र अभ्युदय को भी समाहित कर लिया गया है।

अभ्युदय परिपत्र सभी तेरापंथी सभाओं एवं तेरापंथी समाज के साथ संवाद का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। यह समाज के अभ्युदय का प्रतीक है। इसका मूल प्रयोजन इस गौरवशाली समाज को और भी समुन्नत और सशक्त बनाना है। बदलते युग और परिप्रेक्ष्य के आलोक में अभ्युदय ने आकार-प्रकार, स्वरूप और प्रकृति में भी निरंतर विकासात्मक सोच के साथ परिवर्तन किया है। फलतः उसकी भूमिका का अनवरत विकास हुआ है।

महासभा अपने स्तर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों से सभाओं एवं श्रावक समाज को निरंतर अवगत कराते हुए अपनी आगामी कार्ययोजनाओं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करती रहती है। साथ ही समाज में सभाओं के अंतर्गत जो भी कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं उनकी जानकारी अभ्युदय में प्रकाशित की जाती है ताकि दूसरी सभाओं के लिए भी वह प्रेरणा का हेतु बने।

जैन भारती की ग्राहक संख्या के संदर्भ में उन्होंने कहा कि वर्तमान में इसकी ग्राहक संख्या संतोषप्रद नहीं है। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से आह्वान किया कि इसके ग्राहकों की संख्या एक साल के अंदर कम से कम 10000 तक पहुँचाने हेतु सहयोग करें ताकि इसे तेरापंथ समाज के प्रत्येक परिवार तक पहुँचाया जा सके। जैन भारती की ग्राहक संख्या बढ़ाने के क्रम में हैदराबाद सभा के अध्यक्ष श्री प्रकाश बरड़िया ने आगामी 2 महीने में 1100 नये सदस्य बनाने का आश्वासन दिया। कोषाध्यक्ष महोदय ने उन्हें साधुवाद देते हुए अन्य सभा प्रतिनिधियों से भी आह्वान किया कि वे इस दिशा में सक्रिय सहयोग करें।

जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दूगड़ की अनुपस्थिति में फाउण्डेशन के न्यासी एवं महासभा के महामंत्री **श्री विनोद बैद** ने फाउंडेशन की

गतिविधियों, आर्थिक सहायता प्राप्त परिवारों की संख्या आदि के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि फाउण्डेशन समाज के जरूरतमंद परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति के अंतर्गत मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त कर जीवन में ससम्मान जीविकोपार्जन करने, गंभीर बीमारी से पीड़ित व्यक्तियों को चिकित्सा सहयोग प्रदान करने, प्राकृतिक आपदा एवं आपातकालीन परिस्थितियों से आक्रान्त व्यक्तियों को तत्काल सेवा सहयोग प्रदान करने तथा नैतिक मूल्यों के विकास एवं स्वस्थ समाज संरचना के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। उन्होंने प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि उनके क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, संपोषण के लिए यदि कोई जरूरतमंद परिवार है तो उसकी जानकारी जय तुलसी फाउण्डेशन को दें ताकि उनके संपोषण की आवश्यक व्यवस्था की जा सके। उन्होंने महासभा द्वारा नेपाल आपदा राहत कोष के अंतर्गत एकत्रित अवशिष्ट राशि जय तुलसी फाउण्डेशन को प्रदान किए जाने की घोषणा हेतु महासभा के प्रति आभार प्रकट किया।

महासभा के महामंत्री **श्री विनोद बैद** ने सभा संविधान के संदर्भ में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सभा का संविधान इस तरह से बने कि वह जिस उद्देश्य से बनी है वह पूरा हो। सभा को चाहिए कि वह महासभा से जुड़ी रहे। यदि कोई सभा एफिलियेटेड नहीं है तो उसे तुरंत एफिलियेशन करवा लेना चाहिए। छोटे-छोटे गांवों में जिसका रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ है और न ही कोई संविधान है तो वह सभा सुनिश्चित करे कि उसे महासभा द्वारा निर्धारित संविधान मान्य है। साथ ही स्थानीय रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटीज एक्ट में अवश्य ही पंजीकरण करवा लिया जाना चाहिए। सभाओं का यह नैतिक दायित्व है कि वह सभाओं का संचालन महासभा द्वारा सभाओं के लिए निर्धारित संविधान के अनुसार करे। यदि सभाओं के संविधान में किसी संशोधन की आवश्यकता हो तो वह पहले महासभा को सूचित करे ताकि महासभा उसके

लिए आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान कर सके।

समस्या समाधान के संदर्भ में श्री बैद ने बताया कि ऐसे तो वर्तमान में बहुत ही कम सभाओं में किसी विषय विशेष पर विवाद है, पर जिन-जिन सभाओं में विवाद था भी उसे संबंधित सभा से संपर्क कर अथवा पर्यवेक्षक भेजकर वहाँ की स्थिति का आकलन करने के उपरान्त उसे समाहित कर दिया गया है। जिन एक-दो सभाओं में विवाद है वहाँ भी शीघ्र ही उसे समाहित कर दिया जाएगा। उन्होंने सभाओं के प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि यदि किसी सभा में कोई समस्या उत्पन्न हो जाती है तो वे सीधे आचार्यप्रवर के पास न जाकर पहले स्थानीय स्तर पर उसे सुलझाने का प्रयास करें। यदि स्थानीय स्तर पर उस मामले का निपटारा न हो तो महासभा से संपर्क करें और उसके बाद ही आचार्य प्रवर को निवेदन करें।

त्रिदिवसीय कार्यक्रमों के विभिन्न सत्रों का संयोजन महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद, उपाध्यक्ष श्री तरुण सेठिया एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ ने कुशलतापूर्वक किया। इसके साथ ही सम्मेलन के प्रारंभ में पंजीकरण प्रक्रिया का दायित्व महासभा के उपाध्यक्ष श्री अनुप कुमार बोथरा ने निभाया। आवासीय व्यवस्थाओं का दायित्व उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया एवं मुंबई से कार्यसमिति के सदस्य एवं उनके सहयोगी ने निभाया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रमों के विभिन्न सत्रों में आभार ज्ञापन महासभा के उपाध्यक्ष श्री पी. ज्ञानचन्द आंचलिया, न्यासी श्री ज्योति कुमार बेगानी एवं उपाध्यक्ष श्री अनूप कुमार बोथरा ने किया। ■

कार्यकर्ता संगोष्ठी

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन-2015 की पूर्व संध्या पर दिनांक 13.08.2015 को विराटनगर में रात्रि 8 बजे अतिथि सदन के हॉल में कार्यकर्ता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में महासभा के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों के साथ-साथ अनेक सभाओं के पदाधिकारियों एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों की अच्छी संख्या में उपस्थिति थी।

उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि हर टीम कुछ न कुछ संकल्प के साथ आती है। संकल्प आने वाले भविष्य के लिए होता है। संकल्प को साकार करने हेतु उसकी नींव डाली जाती है। उन्होंने कहा कि सन् 2014 में दायित्व ग्रहण के पश्चात यह चिंतन किया गया कि महासभा को स्वावलंबी कैसे बनाया जाए? महासभा जो 553 सभाओं का संचालन करती है, वह स्वावलंबी बने। समाज एवं सभाओं के सहयोग से महासभा की सभी गतिविधियों को स्वावलंबी बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि महासभा का कोष इतना सुदृढ़ हो कि महासभा को अर्थ के लिए इधर-उधर भागना न पड़े। उन्होंने हर गतिविधि - ज्ञानशाला संचालन, महाप्रज्ञ स्मारक स्थल, साहित्य संवर्द्धन, उपासक श्रेणी के लिए स्थायी कोष बनाए जाने का उल्लेख किया। उन्होंने जानकारी दी कि ज्ञानशाला संचालन स्थायी कोष के लिए बुद्धमल दुगड़ परिवार के सौजन्य से एक करोड़ रुपये की राशि के साथ **श्री भंवरलाल बुद्धमल दुगड़ ज्ञानशाला संचालन स्थायी कोष** का निर्माण किया गया है। इसी प्रकार साहित्य संवर्द्धन स्थायी कोष के लिए बुद्धमल दुगड़ परिवार के सौजन्य से पच्चीस लाख रुपये की राशि के साथ **'श्री बुद्धमल दुगड़ साहित्य संवर्द्धन स्थायी कोष'** का निर्माण किया गया है।

इसके अतिरिक्त उपासक श्रेणी के सुव्यवस्थित संचालन हेतु एक करोड़ इक्यावन लाख रुपये की राशि के साथ **उपासक श्रेणी संवर्द्धन स्थायी कोष** का निर्माण प्रस्तावित है। इस हेतु इस श्रेणी के शिविर व्यवस्था प्रभारी श्री विनोद बांठिया से विचार-विमर्श चल रहा है।

महासभा के दैनिक खर्च हेतु **अक्षय निधि कोष** की स्थापना के बारे में उन्होंने विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इस योजना के अंतर्गत अब तक लगभग 5.34 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है एवं लगभग 4 करोड़ रुपये की राशि महासभा को प्राप्त हो चुकी है। कई सभाओं के प्रतिनिधियों ने अध्यक्ष महोदय के आह्वान पर अधिकाधिक सदस्यों को इस योजना से जोड़ने का आश्वासन दिया।

100 नयी सभा भवनों के गठन के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए अध्यक्ष महोदय ने बताया कि महासभा

शताब्दी वर्ष से अब तक 37 सभाओं का गठन हो चुका है।

100 नये तेरापंथ भवन निर्माण का कार्य बहुत ही बड़ा कार्य है। अब तक लगभग 57 सभाओं से आवेदन प्राप्त हुए हैं परंतु वैधानिक प्रक्रिया के तहत जिन सभाओं के पास आयकर अधिनियम की धारा 80जी का प्रमाण पत्र है उन्हें ही तेरापंथ भवन निर्माण हेतु अनुदान राशि प्रेषित की जा सकती है। अब तक 5 सभाओं को भवन हेतु राशि प्रेषित की जा चुकी है।

अहिंसा यात्रा के संबंध में उन्होंने बताया कि इसकी व्यवस्था का दायित्व महासभा को प्रदान किया गया है। उन्होंने उपस्थित सदस्यों से अहिंसा यात्रा में जुड़ने हेतु आह्वान किया। अहिंसा यात्रा में अतुलनीय सेवा एवं सक्रिय सहयोग हेतु श्री किशनलाल डागलिया की प्रशंसा की। इसके अलावा इस यात्रा में श्री अनूप कुमार बोथरा, श्री तरुण सेठिया, श्री विनोद बैद एवं श्री सुरेन्द्र बोरड़ के कार्यों के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

नेपाल आपदा राहत कोष के संबंध में कहा कि इस आपदा राहत हेतु सभी सभा संस्थाओं ने मुक्तहस्त से दान दिया। अब तक इसमें 2.75 करोड़ रु. की स्वीकृति प्राप्त हुई है, जिसमें से लगभग रु. 2.35 करोड़ रु. प्राप्त हो चुके हैं। इस आपदा राहत कोष के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि विकास परिषद से प्राप्त निर्देश के अनुसार आपदा राहत कोष के अंतर्गत प्राप्त राशि जय तुलसी फाउण्डेशन को हस्तांतरित किया जाएगा। इस विषय को महासभा की विगत कार्यसमिति की मीटिंग में प्रस्तुत किया गया। यह तय किया गया कि जय तुलसी फाउण्डेशन अपने यहाँ आपदा राहत कोष का गठन करे और इस राशि का उपयोग भविष्य में होनेवाली आपदा के समय किया जाए।

जैन भारती एवं अभ्युदय के प्रकाशन के संदर्भ में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि महासभा द्वारा एक सर्वांगीण पत्रिका के रूप में जैन भारती का प्रकाशन मार्च 2015 से किया जा रहा है, जिसमें जैन भारती और अभ्युदय दोनों को समाहित किया गया है। इसके प्रथम भाग में जैन भारती और द्वितीय भाग में अभ्युदय से सम्बन्धित विषय शामिल हैं। नए कलेवर में प्रकाशित जैन भारती के संदर्भ में कई लोगों के पत्र आए हैं जो हर्ष का विषय है। वर्तमान में जैन भारती के लगभग 3700 सदस्य हैं। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि इसकी ग्राहक संख्या को बढ़ाने में सहयोग करें। अध्यक्ष महोदय ने ग्राहक अभियान में उल्लेखनीय सहयोग हेतु सूरत सभा की सराहना की। उनके आह्वान पर हैदराबाद सभा ने 200 सदस्य बनाने का आश्वासन प्रदान किया।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने भी महासभा की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित सदस्यों से इसमें सहभागिता हेतु आह्वान किया।

हैदराबाद, जयपुर, उत्तर हावड़ा, सूरत एवं काठमांडू सभा के प्रतिनिधियों की जिज्ञासाओं को महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं महामंत्री श्री विनोद बैद द्वारा समाहित किया गया। ■

उपासक शिविर - सेमिनार : रिपोर्ट

परमपूज्य गुरुदेव के सान्निध्य एवं महासभा के तत्वावधान में विराटनगर में गत 4 से 14 अगस्त, 2015 तक दो चरणों में उपासक प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन हुआ। प्रथम चरण 4 से 12 अगस्त था। इसमें नये उपासक बनने वालों को व सहयोगी से प्रवक्ता उपासक बनने के इच्छुक भाई-बहनों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम चरण में भाग लेने वाले भाई-बहनों की कुल संख्या 72 थी। द्वितीय चरण (12 से 14 अगस्त) 'अहिंसा दर्शन' विषय पर सेमिनार के रूप में आयोजित हुआ। इसमें संभागी बहन-भाइयों की कुल संख्या 80 थी।

4 अगस्त को प्रवेश परीक्षा ली गई। प्रवेश परीक्षा में चयनित भाई-बहन ही शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। इससे पूर्व कोलकाता में प्रवेश परीक्षा आयोजित हुई एवं चयनित भाई-बहनों को शिविर में सीधा प्रवेश दिया गया। 5 अगस्त को पूज्यप्रवर ने शिविर संभागियों को उपसंपदाएं ग्रहण करवाईं व निष्ठा व मनोयोग के साथ शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

शिविर में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न विषयों पर सघन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। भाइयों व बहनों के लिए अलग-अलग स्थानों पर प्रशिक्षण का क्रम चला। भाइयों को मुनिश्री कमलकुमारजी, दिनेशकुमारजी, राजकुमारजी, कुमारश्रमणजी, योगेशकुमारजी, हिमकुमारजी व बहनों को साध्वीश्री जिनप्रभाजी, शारदाश्रीजी, लब्धिप्रभाजी, प्रांजलयशाजी, राजुलप्रभाजी ने प्रशिक्षण दिया। इसी के साथ उपासक प्राध्यापक द्वय डालिमचंद नौलखा, निर्मल नौलखा व सुरेन्द्र सेठिया ने प्रशिक्षण में सहयोग किया।

पूज्यप्रवर ने अपने प्रतिदिन के मुख्य प्रवचन में विभिन्न संदर्भों में कई बार उपासक श्रेणी का उल्लेख किया व प्रेरणा दी। इस बार गुरुदेव ने उपासक श्रेणी पर विशेष कृपा व आशीर्वाद की वर्षा की, जो उपासक श्रेणी के लिए उत्साहवर्द्धक रही। पूज्यप्रवर ने उपासक श्रेणी को धर्मसंघ के लिए बहुत उपयोगी बताते हुए फरमाया कि पर्युषण पर्व की आराधना में सहयोगी बनना एक महत्वपूर्ण कार्य है। उपासक बारह महीने यथासंभव धर्माराधना में संलग्न रहें। अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों की आयोजना व संचालन में अपना योगदान देते रहें। अपनी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उपासक नियमित स्वाध्यायशील रहें। वक्तव्यशैली में निखार का अभ्यास करते रहें। पूज्यप्रवर ने उपासकों को ज्ञानवृद्धि व आचरण शुद्धि की प्रेरणा प्रदान की।

दिनांक 12 अगस्त को आयोजित समापन कार्यक्रम में उपासक उपासिकाओं द्वारा समूह-गीत की प्रस्तुति दी गई। व्यवस्था प्रभारी श्री विनोद बांठिया ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए सबके प्रति आभार व्यक्त किया। उपासक संयोजक डालिमचंद नौलखा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की व संगीत ट्रैक पर मधुर गीत का संगान किया।

श्रद्धास्पद मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमार जी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी आदि साधु-साध्वियों के

मार्गदर्शन में उपासक शिविर की सफल समायोजना हुई।

उपासक श्रेणी परिचय एवं प्रगति विवरण 2014-15 : प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महासभा द्वारा उपासक श्रेणी की गतिविधियों से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदन का प्रकाशन किया गया। इस पुस्तिका में उपासक बनने की प्रक्रिया, अर्हता, उपयोगिता, आचार संहिता आदि का संक्षिप्त विवरण, उपासक-उपासिकाओं के नाम, संपर्क सूत्र, क्षेत्रों की पर्युषण यात्रा, क्षेत्रों से प्राप्त प्रतिक्रिया आदि का विवरण प्रकाशित किया गया है। इस प्रगति विवरणिका का संकलन-संपादन उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा ने किया है।

सेमिनार : दिनांक 12, 13 व 14 अगस्त को सभी उपासक-उपासिकाओं के लिए 'अहिंसा दर्शन' के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर सेमिनार आयोजित हुआ। इस सेमिनार में कुल 80 उपासक-उपासिकाओं ने भाग लिया। 'अहिंसा दर्शन' के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर जिन साधु-साध्वियों के वक्तव्य हुए उनके नाम इस प्रकार हैं -

मुनिश्री दिनेशकुमारजी, योगेशकुमारजी, मननकुमारजी, हिमकुमारजी, अशोककुमारजी, आलोककुमारजी, जितेन्द्रकुमारजी, अक्षयप्रकाशजी।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, जिनप्रभाजी, आरोग्ययशाजी, तन्मयप्रभाजी, प्रांजलयशाजी, राजुलप्रभाजी, चैतन्यप्रभाजी, श्रुतयशाजी, कार्तिकयशाजी, पुष्यप्रभाजी।

इसी के साथ डा. सोहनराज तातेड़, श्री डालिमचंद नौलखा, निर्मल नौलखा व अन्य 32 उपासक-उपासिकाओं ने विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किए। श्री बजरंग जैन ने सेमिनार के मुख्य संयोजकीय दायित्व का निर्वहन किया। ■

सूचना

महासभा के गौरवशाली प्रकाशन जैन भारती ने नैतिक आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका के रूप में पाठकों के बीच निरंतर लोकप्रियता अर्जित की है। अब तक हम जैन भारती को न्यूनतम मूल्य पर पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करते रहे हैं, किंतु कागज, मुद्रण, प्रेषण और अन्य लागतों में निरंतर हो रही वृद्धि को ध्यान में रखते हुए इसके मूल्य में वृद्धि अपरिहार्य हो गई है। अत: अक्टूबर, 2015 से जैन भारती का मूल्य एवं सदस्यता शुल्क निम्नप्रकार से होगा -

- **प्रति अंक – 50 रुपये**
- **वार्षिक सदस्यता शुल्क – 500 रुपये**
- **त्रैवार्षिक सदस्यता शुल्क – 1250 रुपये**
- **आजीवन सदस्यता शुल्क – 3000 रुपये**

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

ज्ञानशाला संवाद

राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन

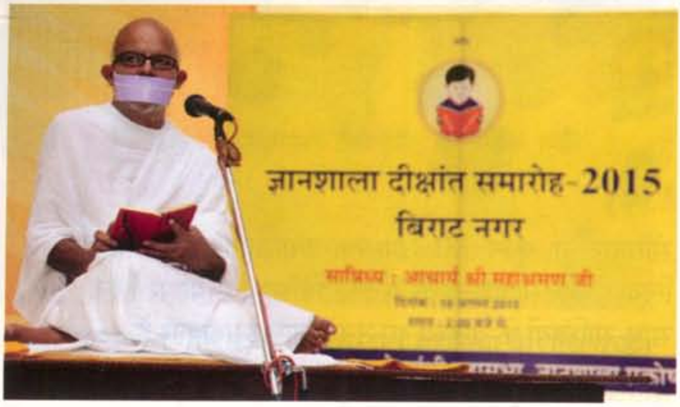

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत त्रिदिवसीय तृतीय ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक सम्मेलन विराटनगर, नेपाल में दिनांक 18-19-20 अगस्त, 2015 को आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में देशभर के 250 प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

दिनांक 18.08.2015 को श्रद्धेय आचार्य प्रवर के मंगल आशीर्वाद से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। आचार्य प्रवर ने ज्ञानशाला की पूर्व भूमिका व वर्तमान में इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए चल रहे अच्छे क्रम की सराहना की। आचार्य प्रवर ने कहा कि अच्छे संस्कारी बच्चे होना स्वयं, परिवार व देश के लिए भी अच्छी बात है। अवकाश के समय अधिक ज्ञानशालाएं चलें व शिविरों का आयोजन होता रहे। जैन धर्म के मूल सिद्धांतों व तेरापंथ के सिद्धांतों की पूर्ण जानकारी बच्चों को मिलती रहे। ज्ञानशाला प्रशिक्षक उपासक श्रेणी से भी जुड़ सकते हैं, वे अपनी यात्राओं में एक-दूसरे का सहयोग कर सकते हैं। सेवा के कई प्रकार हो सकते हैं। कोई पैसों से आर्थिक सहयोग करता है तो कोई समय का दान कर सेवा करते हैं तो कोई चिंतन प्रदान कर सेवा करते हैं। ज्ञानशाला में जुड़े प्रशिक्षक, कार्यकर्ता अपने समय व चिंतन से धर्मसंघ की एक प्रकार से सेवा ही कर रहे हैं। श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपने श्रीमुख से ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा द्वारा ज्ञानशाला के कार्यों में एक लंबे समय से निरंतर दी जा रही सेवाओं का भी उल्लेख किया और कहा कि बच्चों में शुभ संस्कार जागे, उनका भविष्य सुनहरा है। बालपीढ़ी भी अपने स्कूल के समय को ध्यान में रखकर पर्युषण की आराधना करें। अपनी अर्हताओं का विकास करें।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित उद्घाटन सत्र में क्षेत्र अनुसार सहभागी प्रशिक्षकों ने अपना परिचय दिया। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कहा कि ज्ञानशाला का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। मंगल भावना यह है कि ज्ञानशाला का उपक्रम और अधिक अच्छे रूप से चले।

मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी ने बालपीढ़ी को शिक्षित करने के इस उपक्रम में गुरुदेव श्री तुलसी की भूमिका की जानकारी दी।

ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा ने ज्ञानशाला उपक्रम की प्रगति की जानकारी दी। श्री डालमचंद नौलखा व निर्मल नौलखा ने भी ज्ञानशाला की महत्ता व प्रशिक्षकों के संगठन का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संयोजन सम्मेलन के संयोजक श्री महेन्द्र कोचर ने किया। प्रारंभ में विराटनगर ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों ने गीतिका का संगान किया।

द्वितीय सत्र में ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा द्वारा 'ज्ञानशाला : एक प्रारूप व परिपत्र' के माध्यम से ज्ञानशाला संचालन, नीति-नियमों, आवेदनों व परीक्षाओं के संचालन व ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के साथ होने वाले संपर्क आदि का प्रशिक्षण दिया। संभागियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों व जिज्ञासाओं का भी समाधान तुरंत दिया गया।

राष्ट्रीय प्रबंध मंडल के सदस्य परीक्षा संयोजक श्री सुरेन्द्र लूणियां ने परीक्षा आवेदन पत्र भरने के विषय में तथा फॉर्म नं. 3/3ए की महत्ता व किस तरह फॉर्म व्यवस्थित रूप से भरे जाएँ इसकी जानकारी दी।

रात्रिकालीन सत्र में समणी शारदाप्रज्ञाजी ने अपने निर्धारित विषय 'कैसे बढ़े अभिभावकों में जागृति' पर बहुत ही सरल, गहन व मार्मिक प्रशिक्षण दिया।

ज्ञानशाला संभागी प्रशिक्षकों द्वारा प्रातः एक सुंदर रैली निकाली गई। रैली में विराटनगर ज्ञानशाला के बच्चे व

प्रशिक्षक भी सम्मिलित थे। रैली में ज्ञानशाला के उद्घोष व नारों से विराटनगर के बाजारों में एक सुंदर दृश्य देखने को मिला। रैली अंत में महावीर समवसरण में कार्यक्रम में समाहित हुई।

श्री सोहनराज चौपड़ा ने ज्ञानशाला उपक्रम की गति-प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि इस समय देशभर में 411 ज्ञानशालाओं में 15918 ज्ञानार्थी व 2749 सेवारत प्रशिक्षक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी व वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण के मार्गदर्शन का विशेष उल्लेख किया। साथ ही श्रद्धेय मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी व मुनिश्री उदितकुमारजी व मुनिश्री हिमांशु कुमारजी के मार्गदर्शन में ज्ञानशालाओं के उत्तरोत्तर विकास की चर्चा की। श्री चौपड़ा ने बच्चों में संस्कारों के बीज वपन हेतु ज्ञानशाला में भेजने का श्रावक समाज से अनुरोध किया।

विराटनगर तेरापंथी सभा द्वारा प्रशिक्षक सम्मेलन में समागत केन्द्रीय पदाधिकारियों व ज्ञानशाला समिति सदस्यों व आंचलिक संयोजकों व संभागियों का ज्ञानशाला क्षेत्र अनुसार मोमेन्टो प्रदान कर स्वागत किया गया।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में दोपहर 2 बजे ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा संचालित 'ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम" के अंतर्गत त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में वर्ष

2013 में उत्तीर्ण होने वाले 150 प्रशिक्षकों में से उपस्थित 61 स्नातकोत्तीर्ण प्रशिक्षकों को महासभा द्वारा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के आर्थिक सहयोग के प्रायोजक "श्री भंवरलाल बुधमल दूगड़ ज्ञानशाला संचालन स्थायी कोष" से पदवी व मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक ने प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण व्यवस्था, त्रिदिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम व इसके साथ ही लग रहे त्रिदिवसीय शिविरों की जानकारी दी। इन शिविरों में प्रशिक्षण दे रहे श्री डालमजी एवं निर्मलजी नौलखा द्वारा दी जा रही सेवाओं का भी उल्लेख किया।

तृतीय सत्र - राष्ट्रीय प्रबंध समिति सदस्य श्री गौतमजी डागा ने प्राध्यापक प्रकल्प (Masters Trainers Cource) की जानकारी दी। चेन्नई से समागत भगिनीद्वय श्रीमती अनीता व बबीता चौपड़ा ने अपने निर्धारित विषय How to improve relation with child (parenting) पर रोचक ढंग से प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया। संभागियों द्वारा पूछी गयी जिज्ञासाओं का भी समाधान दिया।

चतुर्थ सत्र - रात्रिकालीन इस सत्र में समणी निर्मलप्रज्ञाजी द्वारा अपने निर्धारित विषय 'प्रशिक्षकों का कैसे बढ़े कौशल' पर प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने प्रशिक्षकों के स्वयं के अध्यापन व उनके द्वारा ज्ञानशाला में बच्चों को पढ़ाने के तौर-तरीकों व अपनी व्यवहार कुशलता पर प्रशिक्षण दिया।

खुला सत्र - रात्रिकालीन इस खुले सत्र में संभागियों को ज्यादा से ज्यादा समय दिया गया। उन्होंने अपने विचारों, जिज्ञासाओं व समस्याओं की प्रस्तुति दी, जिसे नोट किया गया। यथासंभव उन्हें समाहित भी किया गया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा फीडबैक फॉर्म के माध्यम से भी सुझावों को प्राप्त किया गया।

समापन सत्र में बड़ी संख्या में प्रशिक्षकों ने इस सम्मेलन की व्यवस्थाओं, दीक्षांत समारोह, सभी प्रशिक्षण सत्रों के बारे में विचार व्यक्त किए।

सम्मेलन संयोजक श्री महेन्द्र कोचर ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने साध्वीप्रमुखाजी व अन्य साधु-साध्वीवृंद, समणी वर्ग के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त की। नेपाल की सभी सभा संस्थाओं, प्रवास व्यवस्था समिति के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्य व्यवस्थाओं में नेपाल के आंचलिक संयोजक श्री संजय दुगड़ व उनकी टीम, अन्य ज्ञानशाला आंचलिक संयोजकों व संभागियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया। श्री लक्ष्मीपत गोलछा, दिल्ली के श्री महेन्द्र श्यामसुखा, श्री अशोक बैद आदि कार्यकर्ताओं के प्रति भी आभार ज्ञापित किया। ■

संस्कार निर्माण शिविर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जसोल

साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में जसोल सभा द्वारा ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का समायोजन किया गया, जिसमें लगभग 125 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में योगाभ्यास, बच्चों में एकाग्रता बढ़ाने के लिए कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास-प्रेक्षा आदि प्रयोग, महाप्राण ध्वनि, अर्हम ध्वनि का विशेष अभ्यास करवाया गया, जिसमें प्रशिक्षिका पुजा मालू, कोमल डोसी, नेहा डोसी, प्रेक्षा सालेचा, मोनिका संकलेचा, तारा कोठारी आदि का सहयोग रहा। अंतिम सत्र में शिविरार्थियों को कंठस्थ ज्ञान, जनरल नॉलेज एवं मेमोरी पावर के खेल खेलवाए गए।

साध्वीश्री कनकरेखाजी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्कार निर्माण, विनम्रता, प्रामाणिकता, सहनशीलता ही हमारे जीवन में मूल तत्व हैं, जिनके प्रति आरंभ से ही बल देने की जरूरत है। ज्ञानशाला का उपक्रम इसी उद्देश्य से शुरू किया गया था।

साध्वीश्री संवरविभाजी ने सदसंस्कारों के कुछ टिप्स बतायें। अर्हम वंदना में अनेक बच्चों ने अपनी भावना प्रस्तुत की। इस अवसर पर बाड़मेर से समागत लीला छाजेड़ ने बच्चों के उत्साहवर्धन के लिए राशि भेंट की। संस्कार निर्माण शिविर में आगत शिविरार्थियों को प्रोत्साहित किया गया। विशेष रूप से श्री महेन्द्र लुंकड़, श्री मदन बुरड़, जयश्री देवी भंसाली, श्रीमती पुष्पा देवी बुरड़ आदि का सहयोग रहा। कुशल संचालन श्रीमती पूजा मालू ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गांधीनगर, बैंगलोर

तेरापंथ भवन, गाँधीनगर में तेरापंथ सभा, बैंगलोर के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला द्वारा दो दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 285 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया व 50 से अधिक प्रशिक्षिकाओं ने अपना समय दिया। सर्वप्रथम स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण के पश्चात साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने बच्चों में नैतिक व आध्यात्मिक गुणों के विकास की प्रेरणा दी।

साध्वीश्री विनयप्रभा व साध्वीश्री प्रतीकप्रभा ने कहानी व प्रश्नोत्तरी द्वारा बच्चों को ज्ञान करवाया। साध्वीश्री सरलप्रभाजी ने भी शिविर में अपने विचार रखे। श्री कुणाल जैन द्वारा स्क्रीन पर बालकों को जानकारी दी गई। संस्कार निर्माण शिविर के अवसर पर तेरापंथ अध्यक्ष श्री बद्रीलाल पितलिया, मंत्री श्री प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती निर्मला सोलंकी, आंचलिक संयोजिका श्रीमती शशी नाहर, क्षेत्रीय संयोजिका श्रीमती नीता गादिया, सह-संयोजिका श्रीमती लता गादिया, श्रीमती मंजु दक आदि उपस्थित थीं। ज्ञानशाला संयोजक प्रेमजी कोठारी प्रेरणादायक संगीत प्रस्तुत किया। सभा के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

इस शिविर के प्रायोजक श्री कन्हैयालाल खटेड़ थे। शिविर की संयोजिका सरस्वती बाफना, लता गांधी व सुनीता भटेवरा ने कार्यक्रम को बहुत ही अच्छे ढंग से संचालित किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक शिविर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, कांटाबांजी, ओडीशा के तत्वावधान में ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक, उपासक संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा के सान्निध्य में 3.7.2015 से 5.7.2015 तक त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें श्री नौलखा ने ज्ञानशाला संचालन, तेरापंथ दर्शन, जैन तत्त्व विद्या, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान पर प्रशिक्षण दिया। में एक दिन रात्रिकालीन आध्यात्मिक संगीत का भी कार्यक्रम रहा। ■

नेपाल सरकार द्वारा पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण के सम्मान में अहिंसा यात्रा पर जारी डाकटिकट का लोकार्पण

आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा नेपाल में की गई अहिंसा यात्रा के प्रति अपरिसीम सम्मान और श्रद्धा निवेदित करते हुए नेपाल सरकार द्वारा अहिंसा यात्रा पर नेपाली 25 रुपये की डाकटिकट जारी की है, जिसका लोकार्पण आचार्यवर की मंगल सन्निधि में दिनांक 16 अगस्त, 2015 को नेपाल सरकार के सूचना तथा संचार मंत्री श्री मिनेन्द्र रिजाल ने डाकटिकट और संस्मरणात्मक आलेखयुक्त आवरण पर मुहर छाप लगाकर किया। तेरापंथ धर्मसंघ के 250 से अधिक वर्षों के इतिहास में यह प्रथम अवसर था, जब भारत के सिवाय किसी देश ने इस तरह का सम्मान अर्पित किया हो।

इस टाकटिकट पर अहिंसा यात्रा का लोगो (प्रतीक चिह्न) प्रकाशित है, इसके साथ हिन्दी/नेपाली तथा अंग्रेजी भाषा में अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति अंकित है। डाकटिकट के साथ एक संस्मरणात्मक आवरण का प्रकाशन भी किया गया है, जिस पर भगवान महावीर, आचार्यश्री महाश्रमण, पशुपतिनाथ मंदिर तथा स्वयंभूनाथ मंदिर के चित्र प्रकाशित है।

16 अगस्त, 2015 को नेपाल सरकार द्वारा जारी नेपाली पच्चीय रुपये मूल्यवर्ग की इस डाकटिकट की पांच लाख प्रतियां प्रकाशित की गई हैं, जिसका आकार : 42.5 मिमी x 31.05 मिमी, आकृति - लंबवत है और उसे सुरक्षा स्टांप पेपर विशेष गमिंग के साथ 5 रंग फासफोर मुद्रण सहित प्रकाशित किया गया है।

मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज अहिंसा यात्रा पर डाक टिकट और संस्मरणात्मक आलेखयुक्त आवरण हम लोग प्रकाशित कर पाए। मेरा यह सौभाग्य है कि यह सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। इसके माध्यम से नेपाल सरकार ने आप जैसे तपस्वी के चरणों में अपनी एक छोटी-सी भेंट अर्पित की है। अभी नेपाल को अहिंसा की जरूरत सर्वाधिक

है। संविधान निर्माण के लिए हमें सबके सद्भाव की जरूरत है। संविधान निर्माण के इस कार्य के लिए हमें आचार्यश्री से ऊर्जा और आशीर्वाद मिलता रहे, यही प्रार्थना है।

लोकार्पण कार्यक्रम में हुलाक (डाक) सेवा विभाग के महानिदेशक श्री द्रोण पोखरेल ने अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता जैसे मूल्यों को संस्थागत रूप देने वाले आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन करते हुए कहा कि सुसंस्कृत मानव जीवन के लिए कार्य करने वाली अहिंसा यात्रा पर प्रथम हुलाक टिकट को प्रकाशित कर प्रसन्नता हो रही है। मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य लेकर यह टिकट प्रकाशित की गई है। मानवीय मूल्यों की स्थापना आज की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति संबंधी लोगो से युक्त अहिंसा यात्रा का संस्मरणात्मक टिकट जारी कर सकारात्मक संदेश प्रसारित कर सभ्य समाज की स्थापना के लिए पहल की गई है।

हुलाक सेवा विभाग के उपसचिव श्री निरंजन रिजाल ने कहा कि अहिंसा, सद्भावना और नशामुक्ति का संदेश लेकर आने वाली अहिंसा यात्रा का प्रसार करने में सहयोगी बनकर नेपाल का हुलाक सेवा विभाग गौरव का अनुभव कर रहा है। काठमांडू प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री लोकमान्य गोलछा तथा विराटनगर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मालचन्द सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यवर ने कहा कि टिकट का उपयोग करने वालों को अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा मिले तो यह उनके लिए कल्याण की बात हो सकती है।

देश में संविधान का होना तो बहुत जरूरी है। हमारी मंगलकामना है कि नेपाल में किसी प्रकार की समस्या न रहे, यहां की राजनीति स्वस्थ रहे, नेपाल की जनता में आध्यात्मिकता, नैतिकता और शांति रहे। नेपाल और भारत पड़ोसी हैं। दोनों देशों में पारस्परिक मैत्री भावना, सद्भावना बनी रहे तथा दोनों देश अपेक्षानुसार एक-दूसरे की समस्याओं के आध्यात्मिक समाधायक बने रहें। ■

नेपाली भाषा में आचार्य श्री महाश्रमण का जीवन परिचय

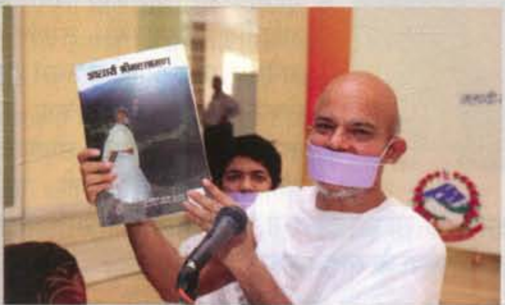

काठमांडू प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा नेपाली भाषा में प्रकाशित पूज्यप्रवर की परिचय पुस्तिका आचार्यवर को उपहृत की गई। इस पुस्तिका में आचार्य श्री महाश्रमण की नेपाल में की गई अहिंसा यात्रा से संबंधित विभिन्न समाचारों, उपलब्धियों आदि को बड़े मनभावन रूप में प्रस्तुत किया गया। चित्रों में प्रस्तुत झलकियाँ पूरी नेपाल यात्रा को मनोरम दृश्यों में बाँध देती हैं। नेपाल के श्रावक समाज की यह एक बड़ी उपलब्धि है।

'समाजभूषण' अलंकरण

'समाजभूषण' अलंकरण तेरापंथी श्रावक समाज का सर्वोच्च सम्मान है, जिसे जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा आचार्यों की दृष्टि के अनुरूप उनके आध्यात्मिक आशीर्वाद से द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज की श्रीवृद्धि में विशिष्ट योगदान करने वाले विरल विशेषताओं और क्षमताओं से युक्त व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है। महासभा की स्थापना की गौरवशाली शताब्दी की परिपूर्णता पर आचार्य श्री महाश्रमण के इंगित की आराधना करते हुए यह निर्णय लिया गया कि विगत शताब्दी में तेरापंथ समाज के जिन अनेक महान विभूतियों ने अपनी श्रद्धायुक्त सेवाओं से धर्मसंघ और समाज को गौरवान्वित किया है उनमें से दो अतिविशिष्ट व्यक्तियों को इस वर्ष समाजभूषण अलंकरण से अलंकृत कर उनका जीवन परिचय उद्घाटित किया जाए। इसी

समाजभूषण श्रीचंदजी गधैया

श्रीचन्दजी गधैया सरदारशहर निवासी सुप्रसिद्ध श्रावक जेठमलजी गधैया के पुत्र थे। उनका जन्म वि. सं. 1919 पौष शुक्ला 6 को हुआ। लगभग 16 वर्ष की अवस्था में वे व्यापारार्थ कलकत्ता चले गए और अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय से व्यावसायिक जगत में सफलता का वरण किया। उन्हें आचार्यश्री मघवागणी से आचार्य श्री कालूगणी तक के चारों आचार्यों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आप एक समयज्ञ, अनुभवी और दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे नाड़ी विशेषज्ञ भी थे। वे लगभग 68 वर्षों तक सरदारशहर में होनेवाले विभिन्न संघीय कार्यों तथा आचार्यों के चातुर्मासों, मर्यादा महोत्सवों और शेषकाल में पदार्पणों के समय दर्शन-उपासना में आगंतुक हजारों व्यक्तियों के व्यवस्था कार्यों, दिवंगत साधु-साध्वियों के दाहकर्म एवं कासीद व्यवस्था आदि से संबंधित समस्त अर्थ भार का दायित्व स्वयं वहन करते थे। पूज्यप्रवरों एवं चारित्रात्माओं की सेवा उपासना में वे निरंतर समर्पित भाव से सक्रिय रहते। आचार्य डालगणी की उनपर विशेष कृपा थी। वे पूज्य कालूगणी के भी कृपापात्र थे।

जब कभी तेरापंथ धर्मसंघ के सम्मुख कोई चुनौती प्रस्तुत हुई तो उन्होंने उसके निराकरण में अपनी कार्यकुशलता और क्षमता का परिचय दिया एवं सफलता हासिल की। संवत 1979 में पूज्य श्री कालूगणी के बीकानेर चातुर्मास के समय अन्य संप्रदाय के लोगों ने विरोध का बवंडर खड़ा कर दिया और बड़ी मात्रा में निंदात्मक पैम्फलेट तथा पुस्तकें छपवाई। श्रीचन्दजी ने इस प्रकरण में पूरी जागरूकता और सक्रियता का परिचय देते हुए सरकार के सम्मुख स्थिति को रखा, जिसके फलस्वरूप दोषी व्यक्तियों को दण्डित किया गया और निंदात्मक सामग्री को सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया एवं आदेश जारी किया गया कि तेरापंथ विरोधी साहित्य डाक के द्वारा भेजना निषिद्ध कर दिया जाए।

इसी प्रकार उत्तरप्रदेश, दिल्ली और बड़ौदा आदि में प्रस्तुत बाल-दीक्षा विरोधी बिल का सफल विरोध करने में भी श्रीचन्दजी ने अपने साथियों के साथ सक्रिय भूमिका निभाई।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के वे संस्थापक सदस्यों में थे। श्रीचन्दजी में कार्यकर्ताओं को जुटाने और प्रशिक्षित करने की अद्वितीय क्षमता थी। तेरापंथ के अनेक समाजनायकों ने उनसे प्रेरणा लेकर कार्य प्रारंभ किया था। केसरीचंद जी कोठारी, छोगमलजी चौपड़ा, वृद्धिचंद जी गोठी, रावतमल जी सेठिया आदि ने शासन-सेवा का प्रारंभिक पाठ श्रीचंदजी गधैया के साथ रहकर ही पढ़ा था।

महासभा की स्थापना के समय एक अच्छी अंग्रेजी जानने वाले सहयोगी कार्यकर्ता की विशेष अपेक्षा थी। इस हेतु श्री केसरीचंदजी कोठारी का नाम उपस्थित हुआ, किंतु अपनी

आर्थिक कठिनाई के कारण उन्होंने इस कार्य में सहयोग करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। इस अवसर पर श्रीचंदजी के पुत्र श्री गणेशदासजी ने उन्हें आग्रहपूर्वक एक ब्लैंक चेक हस्ताक्षर करके दिया और उन्हें जब चाहें धीरे-धीरे रकम लौटाने की छूट भी दे दी। इसके आधार पर श्री केसरीचंदजी ने अपनी देनदारी का भुगतान कर दिया और महासभा के कार्य में सक्रियतापूर्वक संलग्न हो गए।

श्रीचंदजी दीक्षार्थियों को दीक्षा हेतु आज्ञा दिलाने में निरन्तर प्रयासरत रहते। साधर्मिक बंधुओं के प्रति उनके मन में अपार आत्मीय भाव था। समाज के साधारण से साधारण व्यक्ति को भी वे बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

श्रीचंदजी की दिनचर्या धर्मप्रधान थी। सामायिक, जप तथा ध्यान में वे निर्धारित समय का निरंतर नियोजन करते रहे। उनके अनेक प्रत्याख्यान आगार-रहित थे। उन्हें अपने चरित्र-बल और संकल्प-बल पर दृढ़ विश्वास था।

आचार्य डालगणी की उनपर विशेष कृपा थी जिसके परिणामस्वरूप उनके पुत्र वृद्धिचन्दजी की रुग्णता के अवसर पर और कालांतर में छोटे पुत्र उदयचंदजी के देहावसान पर सरदारशहर पधारकर डालगणी ने उनको दर्शन दिए। वे पूज्य कालूगणी के भी कृपापात्र थे। संवत् 1975 से पूज्य कालूगणी के शय्यातर का लाभ उन्हें प्राप्त हुआ। तब से साधु-साध्वियों तथा आचार्यों के चातुर्मास दीर्घकाल तक उन्हीं के स्थान पर होते रहे। संवत् 1981 के शीतकाल में श्रीचंदजी गधैया कालूगणी के दर्शनार्थ बीदासर गए और अपनी वृद्धावस्था को देखते हुए वह महोत्सव सरदारशहर को प्रदान करने का निवेदन किया। उनकी प्रार्थना के फलस्वरूप कालूगणी ने वह मर्यादा महोत्सव सरदारशहर को प्रदान किया।

श्रीचंदजी गधैया ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत, रात्रि के समय चतुर्विध आहार का आगार रहित त्याग, अष्टमी तथा चतुर्दशी को उपवास और पौषध करना, पारण के अतिरिक्त प्रतिदिन 'पोरसी' करना, मार्ग की सेवा करते समय किसी प्रकार के वाहन पर बैठने का त्याग, आजीवन सचित जल पीने तथा लिलोती का त्याग आदि किया था।

उनके व्यावसायिक प्रतिष्ठान श्रीचन्द गणेशदास ने 67 वर्षों तक महासभा के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएं प्रदान की।

संघ एवं समाज के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्रीचंदजी गधैया ने 67 वर्ष की अवस्था परलोक गमन किया। ■

समाजभूषण सुगनचंद जी आंचलिया

गंगाशहर निवासी **सुगनचन्दजी आंचलिया** का जन्म विक्रम संवत 1972, आश्विन शुक्ला 12 को हुआ था। उनके पिताजी का नाम प्रतापमलजी और माताजी का नाम लक्ष्मी देवी था। सुसंस्कृत वातावरण में आंचलियाजी के बचपन का सुन्दर निर्माण हुआ। बचपन से ही उनका व्यवहार घर में सभी के साथ मधुरतापूर्ण था। विद्यालय के छात्रों के साथ भी उनका मित्रता भरा अपनत्व औरों के लिए एक आदर्श था। सुगनचन्द जी में अल्पायु से ही विद्या के प्रति अनुराग था। उनकी बुद्धि प्रखर थी। उनका शुद्ध, सात्विक, सरल और सहज व्यवहार उनके उज्ज्वल चरित्र का प्रमाण था। उन्होंने युवावस्था में ही आचार्य तुलसी के समक्ष अब्रह्मचर्य का परित्याग कर दिया था।

आंचलियाजी का जीवन धर्मसंघ और संघपति के प्रति समर्पण की जीवंत परिभाषा था। गुरु के हर संकेत पर वे बलिदान होने को प्रस्तुत रहते। शासन की सेवा उनके रग-रग में रमी थी। आचार्य श्री तुलसी की पंजाब, बम्बई, और बंगाल क्षेत्र की सुदूर पदयात्राओं की समुचित व्यवस्था के लिए उनका दायित्वपूर्ण योगदान, समय का नियोजन और कर्तव्यनिष्ठा तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के पृष्ठों में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी।

आचार्य श्री तुलसी की पंजाब, बम्बई, और बंगाल क्षेत्र की सुदूर पदयात्राओं की समुचित व्यवस्था के लिए उनका दायित्वपूर्ण योगदान, समय का नियोजन और कर्तव्यनिष्ठा तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के पृष्ठों में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी। सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्रजी के शब्दों में आचार्य तुलसी के वे जमनालाल बजाज थे।

आंचलियाजी आदर्श साहित्य संघ के जन्मकाल संवत् 2003 से

ही उससे जुड़े हुए थे। उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा और श्रमनिष्ठा से इस संस्था की प्राण-प्रतिष्ठा की और जीवन के अंतिम क्षणों तक उसके मंत्री रहे। इसी आधार पर कुछ व्यक्ति उन्हें आदर्श साहित्य संघ के पिता के रूप में सम्बोधित करते थे।

आंचलियाजी सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे। वे कर्मनिष्ठ थे किन्तु नाम की भावना से सदैव दूर भागते। अध्यक्ष के रूप में उनका चयन हो जाता तो भी वे आगे कुर्सी या उच्चासन पर बैठकर कभी अध्यक्षता नहीं स्वीकारते।

वे अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के चार वर्षों तक अध्यक्ष रहे। वे कभी किसी पद के लिए उम्मीदवार नहीं बने किन्तु सदैव औरों ने ही उन्हें आग्रहपूर्वक दायित्व के लिए चयनित किया। वे श्रद्धा और आस्था के अप्रतिम रूप थे। उनकी अनन्त श्रद्धा ने आचार्यश्री का प्रगाढ़ विश्वास पाया। साधु-साध्वियों की अन्तरंग गोष्ठियों में शामिल होने की उन्हें विशेष अनुमति थी।

उनके अपने कानून के ज्ञान बल पर उन्होंने बड़े-बड़े मुकदमे ईमानदारी के साथ लड़े एवं सदा अपराजेय रहे। अपनी विजय का भी कभी उन्हें अहंकार नहीं हुआ।

उनकी अनन्त श्रद्धा ने आचार्यश्री का प्रगाढ़ विश्वास पाया। साधु-साध्वियों की अन्तरंग गोष्ठियों में शामिल होने की उन्हें विशेष अनुमति थी। इसके अलावरा आचार्यश्री के द्वारा उनको एक और विशेष आदेश प्राप्त था जिसकी शब्दावली इस प्रकार है - "आज से तुमको साध्वियों को अध्ययन कराने का विशेष आदेश देता हूँ। तुम निःसंकोच अकेले बैठकर साध्वियों को पढ़ा सकते हो। जहां पर भी साध्वियां हैं उनको यह मेरा आदेश बता भी सकते हो।" सचमुच उनके प्रति आचार्य प्रवर के ये शब्द कितने गरिमामय हैं।

गुरुदेव तुलसी ने शासन कल्पतरु गीत में "आंचलियै री आस्था" का उल्लेख किया है। वे श्रद्धा और आस्था के अप्रतिम रूप थे। गुरु के प्रति उनमें जो समर्पण भाव था वह बेजोड़ था। आचार्य भिक्षु के प्रति जो श्रद्धा विजयचन्दजी पटवा में देखी गई वही श्रद्धा और भक्ति आंचलियाजी में आचार्य श्री तुलसी के प्रति परिलक्षित होती थी। हनुमान के कण-कण में राम थे तो आंचलियाजी के कण-कण में आचार्यश्री तुलसी थे।

अणुव्रत आन्दोलन के प्रारंभ से ही वे इसके साथ पूरी तरह संलग्न हो गए। वे सपत्नीक विशिष्ट अणुव्रती बने। एक प्रसिद्ध व्यापारी होते हुए भी वे नैतिकता के मूर्त रूप थे। व्यापार में पूरी प्रामाणिकता बरतते और न रिश्वत देते और न आयकर की चोरी करते। उनका ज्वलंत जीवन युगों-युगों तक सभी नैतिकजनों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

आंचलियाजी एक आदर्श श्रमणोपासक थे। वे सिद्धान्तप्रिय थे किन्तु उनके चिन्तन में किसी प्रकार की रूढ़ता नहीं थी। 'नया मोड़' के नियमों को उन्होंने प्रथम चरण में ही धारण कर लिया था। दहेज न लेने का उनका नियम वास्तव में उनके आदर्श व्यक्तित्व के अनुरूप था। गृहस्थ होते हुए भी आंचलिया जी का जीवन एक उच्च कोटि के साधक का था। सत्य के प्रति उनमें घनीभूत निष्ठा थी। वे भयंकर वेदना में भी औषधि का प्रयोग नहीं करते थे। वे अर्थ के अर्जन के साथ समुचित विसर्जन भी करते थे। वे मितव्ययी थे एवं अपनी निजी सुविधा के लिए अनावश्यक खर्च नहीं करते।

उनकी सौम्य शान्त, हंसमुख मुद्रा, शासन के प्रति अनन्य समर्पण, नैतिक जीवन जीने की अदम्य भावना, खान-पान में अनासक्ति, ब्रह्मचर्य की दिशा में गतिशील चरण, अनुपम गाम्भीर्य, सहनशीलता तथा सतत श्रमशील वृत्ति सदा-सदा श्रावक समाज के लिए प्रेरक बनी रहेगी।

आचार्य श्री तुलसी ने उनके विषय में लिखा - "महाराजा जनक के लिए एक शब्द आता है - विदेह, मैंने सुगनचन्दजी को उस रूप में पाया है। देहासक्ति और विषयासक्ति से मुक्त रहकर वे सदेह रहते हुए भी विदेह साधक थे।.....मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि मेरे व्यापक कार्यक्रमों के श्रावक संवाहकों में वे प्रमुख व्यक्ति थे।"

आंचलिया जी के आकस्मिक निधन पर गुरुदेव के उद्‌गार थे - सुगनचन्द जी आंचलिया की मृत्यु का समाचार श्री शुभकरण जी दसाणी के तार द्वारा कल सुना तो ऐसा लगा मानो मेरे निकट का अन्तेवासी साधु चल बसा हो। कई कामों में वे भुजा के समान सहयोगी थे। डालगणी कहा करते थे - कई बातें साधुओं के सामने कहने में संकोच होता है पर श्रावक रूपचन्द जी की विद्यमानता में वह नहीं रहता है। मेरे लिए सुगनचन्द जी के विषय में यही बात थी। वि.सं. 2004 मे वे निकट आए और एकीभूत हो गए। ऐसा स्थान उन्होंने अपनी विशेषता से पाया। उनके एक-एक गुण मेरी स्मृति में उभर रहे हैं। गृहस्थ के वेष में भी उनका जीवन साधु का-सा था। सत्य के अनन्य उपासक-सत्य के प्रति अटूट श्रद्धा थी। शील के अपूर्व साधक, साहित्य के सजीव सेवक, सादगी के अप्रतिम पुजारी, प्रथम अणुव्रती, दूसरे बजाज, संविभागी, मूक सेवी आदि-आदि।

एक विराट व्यक्तित्व के धनी आंचलिया जी सादा जीवन-उच्च विचार के प्राणवान प्रतीक, समता, सहजता, संयम और स्वालम्बन के आदर्श श्रमणोपासक थे। जीवन के अन्तिम दिन तक वे सतत कार्यशील रहे। 48 वर्ष की अल्पायु में धर्मसंघ और समाज को अनुपम सेवाएं समर्पित कर इस नश्वर संसार से आकस्मिक रूप से विदा हो गए। ■

सभा संवाद

तेरापंथी सभाओं में विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य और सभाओं के तत्वावधान में विभिन्न सभाओं में धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समय-समय पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि पूरे देश में संस्कारित समाज का निर्माण और आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। इसी क्रम में प्रस्तुत है विभिन्न सभाओं द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बैंगलुरु

साध्वीवृंद का चातुर्मासिक प्रवेश

साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी, साध्वीश्री सरलप्रभाजी, साध्वीश्री विनयप्रभाजी एवं साध्वीश्री प्रतीकप्रभाजी का बैंगलोर के गांधीनगर तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। बैंगलोर (गांधीनगर) सभा के अध्यक्ष श्री गौतम कोठारी एवं नव मनोनीत सभा अध्यक्ष श्री बद्रीलाल पितलिया तथा अन्य पदाधिकारियों एवं स्थानीय श्रावक समाज ने साध्वीवृंद का हार्दिक अभिनंदन किया एवं उनके सफल चातुर्मास हेतु मंगलकामना की। इस अवसर पर साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने श्रावक समाज को चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की सम्यक आराधना और साधना की प्रेरणा दी। साध्वीश्री सरलप्रभाजी, साध्वीश्री विनयप्रभाजी एवं साध्वीश्री प्रतीकप्रभाजी तथा समणी प्रशांतप्रज्ञाजी एवं समणीवृन्द ने गीत एवं प्रेरणादायक संवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 700 से अधिक पचरंगी तप में भाग लेने वाले तपस्वियों के तप का अभिनन्दन करते हुए साध्वीश्रीजी ने बताया कि आज के इस पचरंगी मंगल तप की शक्ति एवं मंगलकामना गुरुदेव के विदेश में विराटनगर चातुर्मास मंगल प्रवेश हेतु समर्पित है। साध्वीश्री सरलप्रभाजी ने तपस्वियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

श्री अमृतलाल भंसाली-अध्यक्ष, ट्रस्ट, श्री गणपतलाल चौरड़िया-अध्यक्ष, तेयुप, श्रीमती पुष्पा गन्ना-अध्यक्ष, महिला मंडल, श्री एम.सी. बरलोटा-अध्यक्ष, टी.पी.एफ., श्री माणकचन्द मुथा-अध्यक्ष, अणुव्रत समिति, श्री प्रेमचन्द कोठारी-ज्ञानशाला, संयोजक, श्री ललित मांडोत, श्री अविनाश नाहर-अध्यक्ष, अ.भा.ते.यु.प., श्रीमती वीणा बैद आदि वक्ताओं ने चातुर्मास की मंगलभावना गीत, भाषण वं मुक्तकों के द्वारा अभिव्यक्त की। साध्वीश्री जी की अहिंसा यात्रा की सीडी प्रॉजेक्टर द्वारा दिखाई।

सभा के मंत्री श्री कमलसिंह दुगड़ ने आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाशचंद लोढ़ा ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बैंगलोर की नई टीम के

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में हुआ। इस अवसर पर साध्वी प्रज्ञाश्रीजी ने कहा कि संगठन की आधारशिला है - मर्यादा और अनुशासन। उन्होंने प्रेरणा दी कि आचार्य महाश्रमणजी के इंगित, आदेशानुसार संगठन को मजबूत एवं सुदृढ़ बनाएं एवं समाज के लिए नए-नए आयाम उद्घाटित करें। सभा के उपाध्यक्ष श्री जसवंतराज गादिया ने नव मनोनीत अध्यक्ष श्री बद्रीलाल पितलिया को सन 2015-17 के कार्यकाल हेतु शपथ दिलवाई। तत्पश्चात नव मनोनीत अध्यक्ष महोदय ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए पदाधिकारी के रूप में उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल गिड़िया, श्री पारसमल भंसाली, श्री हीरालाल मांडोत, मंत्री श्री प्रकाशचन्द लोढ़ा, सहमंत्री श्री राजेन्द्र बैद, श्री बाबुलाल बाफना, संगठन मंत्री श्री माणकचन्द संचेती एवं कोषाध्यक्ष श्री अशोक कोठारी को शपथ दिलवाई। तत्पश्चात समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने शपथ ग्रहण की। समारोह में उपस्थित तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत, तेरापंथ ट्रस्ट के पदाधिकारीगण, परामर्शक, जैन युवा संगठन के अध्यक्ष, मंत्री, अ.भा.ते.यु.प. के कोषाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं समाज के वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं ने नई टीम को बधाई दी। आभार ज्ञापन मंत्री श्री प्रकाशचन्द लोढ़ा ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री दीपचन्द नाहर एवं श्री मदन बरड़िया ने किया।

इस अवसर पर सुश्री हर्षिता, सुश्री दीक्षिता धारीवाल और श्रीमती रेखा मेहर ने 9 की तपस्या का प्रत्याख्यान कर धर्मपरिषद को तपोमय कर दिया।

डॉ. ए. पी. जे. अबुल कलाम को श्रद्धांजलि

बैंगलोर के गांधीनगर सभा द्वारा साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी के सान्निध्य में भारत रत्न डॉ. ए. पी. जे. अबुल कलाम को श्रद्धांजलि देने हेतु तेरापंथ भवन में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर धर्मसभा ने दो मिनट मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना की। साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने भारत के 11वें राष्ट्रपति डॉ. अबुल कलाम के आकस्मिक निधन को भारत में एक नैतिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक नेता की बड़ी क्षति बताते हुए कहा कि कलाम जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ मिलकर आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के निर्माण हेतु साहित्य का सृजन किया था। साध्वीश्री सरलप्रभाजी ने कहा कि डॉ. कलाम आचार्य महाप्रज्ञजी के साहित्य से बहुत प्रभावित थे। साध्वीश्री विनयप्रभाजी, साध्वीश्री प्रतीकप्रभाजी ने भी कविता व गीतिका के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत, मंत्री श्री प्रकाशचन्द लोढ़ा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री हरकचन्द ओस्तवाल ने किया।

आचार्यश्री के बैंगलुरु चातुर्मास की घोषणा पर हर्ष

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य श्री महाश्रमणजी ने 2019 का चातुर्मास बैंगलुरु में करने का भाव व्यक्त किया है। यह संपूर्ण दक्षिण क्षेत्र के लिए परम आह्लाद और सौभाग्य का विषय है। गुरुपूर्णिमा के दिन परम गुरु आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा की गई इस घोषणा की जानकारी मिलते ही बैंगलुरु सहित उस क्षेत्र के पूरे श्रावक समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। सभी अपने गुरुदेव की इस कृपा के लिए नतमस्तक थे। उपस्थित लोगों ने मिठाई बांटकर अपनी खुशी जाहिर की। इस अवसर पर साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने उपस्थित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि गुरुदेव ने महती कृपा कर वर्ष 2019 का चातुर्मास बैंगलुरु का फरमाया है, इसलिए हम दक्षिणवासियों को 19 वैरागियों की भेंट गुरुचरणों में करने का संकल्प लेना चाहिए और आचार्यप्रवर की दक्षिण यात्रा को सफलतम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्री दीपचन्द नाहर ने कहा कि 10,000 श्रद्धालुओं की श्रद्धा का अंकन करते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने दक्षिण यात्रा की घोषणा की है। हमें गुरु इंगित के आधार पर इस अभियान को सफल करना है। युवक परिषद मंत्री श्री संजय बांठिया ने वॉटसआप के माध्यम से गुरुदेव द्वारा की गई तत्कालिक घोषणा को सुनाया जिसमें कहा गया था कि '2019 का चातुर्मास द्रव्य क्षेत्र काल और भाव को ध्यान में रखते हुए बैंगलुरु में करने का भाव है।'

इसी अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने तेरापंथ

धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारंभ बैंगलुरु में एवं समापन हैदराबाद में करने की घोषणा भी की। आनंद और उत्साह के इस अवसर पर सभा अध्यक्ष श्री बद्रीलाल पितलिया, उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत, श्री माणक मुथा, श्री गणपत चौरड़िया, श्रीमती पुष्पा गन्ना आदि पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर गुरुवर के प्रति कृतज्ञता एवं प्रणति निवेदित की। कार्यक्रम का संयोजन श्री हरकचन्द ओस्तवाल एवं श्री मदन बरड़िया ने किया।

बोधि दिवस, गुरुपूर्णिमा एवं तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

बैंगलुरु सभा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का भव्य आयोजन साध्वीश्री प्रज्ञाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में गाँधीनगर सभा भवन में किया गया। बोधि दिवस, चौमासी चवदस एवं गुरुपूर्णिमा तथा तेरापंथ स्थापना दिवस पर महिला मंडल, युवक परिषद एवं किशोर मंडल ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री माणकचन्द मुथा एवं सभा के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत ने सभी का स्वागत किया।

इस अवसर पर साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि बोधि दिवस पर आचार्य भिक्षु को बोधि प्राप्त हुई, चतुर्दशी को तेरापंथ की मर्यादा की स्थापना हुई और गुरुपूर्णिमा हमारे परम गुरुवरों के प्रति अभ्यर्थना प्रकट करने का पावन अवसर प्रदान करता है। यह दिन हम सबके लिए परम सौभाग्य का दिन होता है, जो हमारे धर्मसंघ और गुरुवरों के प्रति कृतज्ञता तथा प्रणति प्रकट करने का अवसर देता है।

स्वतंत्रता दिवस का पालन

साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी, ठाणा-4 के सान्निध्य में देश का 69वां स्वतंत्रता दिवस तेरापंथ भवन, गांधीनगर में झंडा फहराकर मनाया गया। तेरापंथ सभा के सदस्यों, तेयुप के सदस्यों एवं महिला मंडल के सदस्यों ने सामूहिक संगान किया। इस अवसर पर साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्र के चरित्र को उन्नत करने के लिए गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा निर्धारित पंचशील को अपनाने पर बल दिया और सदाचार नैतिकता, प्रामाणिकता का पालन करने की प्रेरणा दी। साध्वीवृन्द द्वारा संघगान प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत, कोषाध्यक्ष श्री अशोक कोठारी, संगठन मंत्री श्री माणकचन्द संचेती, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती निर्मला सोलंकी, तेरापंथ ट्रस्ट के मंत्री श्री रमेश दक, ज्ञानशाला के श्री प्रेम कोठारी, श्रीमती शशिकला नाहर, श्रीमती नीता गादिया एवं अध्यापकगण, ज्ञानशाला के बच्चे एवं तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

प्रथम मासखमण तपस्या का अभिनन्दन

साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी, ठाणा-4 के सान्निध्य में इस चातुर्मास में प्रथम मासखमण तपस्या का अभिनन्दन किया गया। तपस्वी बहन श्रीमती इन्द्रा देवी गादिया ने गुरुशक्ति व आत्मशक्ति से आज 28 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। आगे 31 दिन की तपस्या करने का संकल्प किया। इस तपस्या का अभिनन्दन तप से ही कराया। श्री सुरेश मुणोत व उनकी धर्मपत्नी ने इस अवसर पर 12 दिन की तपस्या का संकल्प किया। इस अवसर पर मातृ हृदया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी का संदेश प्राप्त हुआ, जिसका वाचन सभा के संगठन मंत्री श्री माणकचन्द संचेती ने किया। गादिया परिवार वालों ने गीत संवाद व वक्तव्य के द्वारा तपस्विनी बहन इन्द्रा देवी का अभिनन्दन किया। साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने कहा कि तप एक महायज्ञ हैं। इसमें अनेक जन्मों के कर्मों का होम हो जाता है। साध्वीश्री सरलप्रभाजी, विनयप्रभाजी, प्रतीकप्रभाजी ने गीत व वक्तव्य के द्वारा अभिनन्दन किया। सभा के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल मांडोत ने सभा की ओर से मासखमण अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। संचालन श्री मदन बरड़िया ने किया।

तप अभिनंदन

बैंगलुरु सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी ने ममता भंसाली की 15 दिन तपस्या का, बहिन प्रिया हिरावत की 8 तपस्या का, मिठ्ठालालजी बरलोटा की 16 दिन की तपस्या का अभिनन्दन किया। तपस्वियों का सम्मान सभा एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण ने साहित्य देकर किया। साध्वीश्री विनयप्रभाजी, प्रतीकप्रभाजी तप गीत प्रस्तुत किया। साध्वी सरलप्रभाजी ने तपस्वी के तप की मंगलकामना करते हुए कहा कि

तपस्या पूर्वार्जित कर्मों की निर्जरा का अपूर्व साधन है।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डोंबिवली

चातुर्मासिक प्रवेश

डोंबिवली सभा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथी समाज द्वारा दिनांक 25.7.2015 को स्थानीय सभा भवन में साध्वीश्री ललितप्रभाजी, साध्वीश्री अमितश्रीजी एवं साध्वीश्री दिव्ययशाजी के डोंबिवली में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर आध्यात्मिक अभिनन्दन एवं स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इसके पूर्व प्रातः 8 बजे साध्वीत्रय ने एक विशाल रैली के साथ सभा भवन में प्रवेश किया। समारोह का प्रारंभ साध्वीश्री ने जप अनुष्ठान द्वारा किया। साध्वीश्री ललितप्रभाजी ने जप, तप, तपस्या द्वारा चातुर्मास का लाभ लेने का आह्वान किया। साध्वीश्री दिव्ययशाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष श्री नरेश मादरेचा, मंत्री श्री भगवती पटवारी, महिला मंडल की संयोजिका श्रीमती जूला संचेती, तेयुप अध्यक्ष श्री जगदीश परमार, मंत्री श्री भरत कोठारी आदि ने चारित्रात्माओं के अभिनंदन में अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा प्रवक्ता श्री अजीत कोठारी ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गौहाटी

साध्वीवृंद के चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनंदन

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ गौहाटी तेरापंथी सभा भवन में नशामुक्ति यात्रा के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर संघ, संघपति के जयनारों से धरा-अम्बर को गुंजायमान करते हुए एक भव्य जुलूस में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं विशाल श्रावक समाज ने परम श्रद्धा, निष्ठा, आस्था, संघभक्ति, गुरुभक्ति का प्रदर्शन करते हुए साध्वीवृंद का अभिनंदन किया। अपने अभिनंदन के उत्तर में साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने कहा कि आज हमारे हृदय में उल्लास, उमंग व आनन्द का सागर हिलोरे ले रहा है, क्योंकि आज हम छह महीनों की प्रलम्ब यात्रा एवं लगभग 1700 किमी. की पदयात्रा के पश्चात परम श्रद्धास्पद आचार्यवर द्वारा निर्दिष्ट मंजिल तक पहुंच गए हैं। साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि चातुर्मास का समय शक्ति संचय का समय है। तन, मन एवं भावतंत्र को विशुद्ध बनाने का समय है। साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने रोचक नाट्य प्रस्तुति दी। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया।

गौहाटी सभा के अध्यक्ष श्री सुनील सेठिया, 2016 चातुर्मास व्यवस्था समिति के महमंत्री श्री सुपार्श्व बैद, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रणजीत मालू, तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय चोरड़िया, महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती रंजु बरड़िया, श्री विजयसिंह डागा, टी.पी.एफ. के अध्यक्ष श्री मनोज जैन, अणुव्रत समिति के मंत्री श्री नौरत बैद ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल व अर्हम भजन मंडली ने स्वागत गान प्रस्तुत किया।

श्री पवन जम्मड़ ने साध्वीश्री प्रमिलाश्रीजी के भावों की कविता के माध्यम से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने किया।

आचार्य भिक्षु जन्मदिवस पर बोधि दिवस का आयोजन

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में गौहाटी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस के अवसर पर बोधि दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तीर्थंकर तुल्य आचार्य भिक्षु के चरणों में विनम्र भावांजलि अर्पित करते हुए साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने आगम-वाणी के अमृत का पान कर जन-जन में संयम, तप, त्याग की अन्तःचेतना झंकृत की थी। इस पंचम कलिकाल में आचार्य भिक्षु सतयुग की बहार लेकर आए थे। वीतरागी पुरुष आचार्य भिक्षु को श्रद्धा नमन करते हुए साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु द्वारा जलाया हुआ दीपक था - पुरुषार्थ। उनकी मंजिल थी - वीतरागता, अन्तर्मुखता। उनके चरण हमेशा वीतरागता की दिशा में बढ़ते रहे। साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु के जन्म का अर्थ है सत्य का जन्म, मर्यादा का जन्म, अनुशासन का जन्म, संयम-तप-त्याग का जन्म। सभा के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा, श्री सुरेश सुराणा, श्री

विजयसिंह चौरड़िया, श्रीमती पुष्पा कुण्डलिया ने भी विचार रखे। श्रीमती मुनी डोसी, श्रीमती सुनीता गुजरानी एवं श्रीमती राखी चौरड़िया ने मंगल संगान किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

गौहाटी सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा भवन में तेरापंथ स्थापना दिवस का भव्य एवं गरिमामय आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की धर्मक्रांति की निष्पत्ति है - तेरापंथ। साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि आज गुरु-पूर्णिमा का दिन है। सही मायने में तेरापंथ को आज ही गुरु की प्राप्ति हुई थी। साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का गुण हमारे भीतर अवतरित हो ताकि साधना का मार्ग पुष्ट बन सके। श्री नेमीचन्द सिंघी, श्री बाबूलाल सुराणा, श्री छत्रसिंह बुच्चा ने गीत का संगान किया। श्री निर्मल कोटेचा ने पूज्यश्री के आगामी चातुर्मासों की घोषणा की जानकारी दी। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

गुरुदर्शन यात्रा संघ-2015

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी की प्रबल प्रेरणा से तथा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के तत्त्वावधान एवं श्री उत्तमचन्द नाहटा के संयोजकत्व में गुरुदर्शन यात्रा संघ-2015 दिनांक 20.7.2015 को विराटनगर (नेपाल) पहुँचा। लगभग 650 श्रावक-श्राविकाओं का यह बृहद संघ गुरुदेव के विराटनगर चातुर्मास स्थल पर पदार्पण के उपलक्ष्य में साक्षी बना।

यह संघ दिनांक 23 जुलाई 2015 को कामाख्या पहुंचा। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री सुनील कुमार सेठिया एवं मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने संघ ले जाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी कार्यकर्ताओं के साथ ही समस्त श्रावक-श्राविकाओं, गौहाटी ज्ञानशाला के प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं एवं बच्चों को सहयोग के लिए साधुवाद दिया है।

तीस पचरंगी अनूठा महायज्ञ

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में गौहाटी में पहली बार एक साथ तीस पचरंगी अनूठा महायज्ञ सम्पन्न हुआ। अनेक भाई-बहनों ने साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से अठाई व नौ का तप सम्पन्न किया है। श्रीमती मंजु मणोत, श्री लुनकरणजी सुराणा, श्रीमती सरिता चौरड़िया, श्रीमती एकता बोथरा, श्रीमती ललिता बोथरा ने पखवाड़ा तप एवं श्रीमती संजु सुराणा के नौ का तप किया, जिनके लिए तपोभिनन्दन कार्यक्रम समायोजित हुआ।

इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने जैन धर्म में तपस्या के महत्त्व को रेखांकित किया। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी सुधाप्रभाजी एवं साध्वी समत्वयशाजी तथा साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने साध्वी अणिमाश्रीजी द्वारा रचित तप-अनुमोदना गीत का भावपूर्ण संगान कर पूरी परिषद को तप-गंगा में अभिस्नात होने की प्रेरणा दी।

श्री विमल मणोत, श्रीमती राजु मणोत, श्रीमती सुमन सुराणा, सुश्री स्वाति सुराणा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने किया। सभा, तेयुप एवं महिला मंडल द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जसोल

तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरुपूर्णिमा का आयोजन

साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य एवं जसोल सभा के तत्वावधान में तेरापंथ स्थापना दिवस एवं आषाढ़ी गुरु-पूर्णिमा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सैंकड़ों श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकरेखाजी ने कहा कि तेरापंथ की स्थापना का दिन वस्तुतः सत्य और अहिंसा की स्थापना का दिन है। उन्होंने गुरु के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि हम खुशनसीब हैं कि हमें आचार्य भिक्षु जैसे नाम मंत्राक्षरी गुरु मिले। साध्वीश्री संवरविभाजी ने तेरापंथ के अभ्युदय पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री कमलेश चौपड़ा ने संगीत प्रस्तुत किया। श्री गौतम सालेचा, मंत्री श्री संतोष डोसी, फेना भंसाली ने भी विचार रखे। गुरु-पूर्णिमा के इस त्रिदिवसीय अखंड जप अनुष्ठान में भाई-बहनों ने उत्साह के

साथ भाग लिया। साध्वीश्री गुणप्रेक्षाजी ने संचालन किया।

आचार्य भिक्षु का 290वां जन्मदिवस

साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु का 290वां जन्मदिवस जसोल सभा द्वारा अपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभाजी व साध्वी केवलप्रभाजी के मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्री कनकरेखाजी ने विलक्षण प्रज्ञा के धनी आचार्य भिक्षु की अन्तर्मुखी चेतना पर प्रकाश डाला। श्री शंकरलाल ढेलडिया, तेयुप अध्यक्ष श्री प्रवीण भंसाली, श्रीमती पुष्पा बाई बुरड़, श्रीमती मोहनी देवी संकलेचा ने अपने विचार व्यक्त किये।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा जलोस के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ज्ञानशाला की बालिकाओं ने अर्हम वंदना की मधुर स्वर-लहरियों से वातावरण को अध्यात्ममय बना दिया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि मंत्र से हमारे भीतर छिपी हुई शक्ति का ऊर्ध्वारोहण होता है। मंत्र दीक्षा का उद्देश्य है - बच्चों को मंत्र की शक्ति से परिचित करवाना। कार्यक्रम के दौरान सभाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर, तेयुप अध्यक्ष श्री प्रवीण भंसाली, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जैन ने भी अपनी भावना रखी। इस अवसर पर मीडिया प्रभारी श्री कांतिलाल ढेलड़िया विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के दूसरे चरण में पचरंगी तप करनेवाले तपस्वियों के तप की साध्वीश्री जी ने अनुमोदना की। ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा की बुकलेट एवं माला वितरित की गई। संचालन साध्वीश्री गुणप्रेक्षाजी ने किया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी का कार्यक्रम

जसोल सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में ओसवाल जैन श्वेताम्बर भवन में चातुर्मासिक चतुर्दशी का विशाल कार्यक्रम समायोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकरेखाजी ने कहा कि आत्माराधना का स्वर्णिम अवसर है - चातुर्मास। यह बहिर्यात्रा से अन्तर्यात्रा की ओर प्रस्थान करने का विशेष समय है। उन्होंने सभी को अधिक के अधिक प्रवृत्ति से निवृत्ति की साधना करने तथा भोग से योग की आराधना करने की प्रेरणा दी। साध्वी गुणप्रेक्षाजी, संवरविभाजी, केवलप्रभाजी ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर भक्तामर स्तोत्र की जप स्तुति के महायज्ञ में बहनों ने अपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया। पूर्वसंध्या में भिक्षु भक्ति संध्या में संगीत स्वर लहरियों से भाई-बहनों ने अपने आराध्य की अर्चना की।

तपोभिनंदन समारोह का आयोजन

साध्वीश्री कनकरेखाजी के सान्निध्य में जसोल सभा में तपोभिनंदन समारोह समायोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकरेखाजी ने कहा कि धर्म की उपासना के अनेक सोपानों में एक महत्त्वपूर्ण सोपान है - तपस्या, जहां से व्यक्ति के भीतर परिवर्तन की-प्रक्रिया प्रारंभ होती है। ज्ञातव्य है कि सभाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर छाजेड़ ने 9 उपवास का, नाकोडा ट्रस्ट के मैनेजर श्री प्रकाश जैन ने 8 उपवास का, श्री धनराज चौपड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती चन्दा देवी चौपड़ा व श्री कालूराम सालेचा की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी सालेचा ने अठाइ तप का उपहार साध्वीश्री जी को भेंट किया। साध्वी गुणप्रेक्षाजी, संवरविभाजी व केवलप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से पचरंगी तप के महायज्ञ में आहुति देने पर हर्षाभिव्यक्ति की। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्वियों का साहित्य देकर सम्मान किया गया। साध्वी गुणप्रक्षाजी ने संचालन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बंगोमुंडा

साध्वी सम्यकप्रभाजी ठाणा-4 का चातुर्मासिक प्रवेश

साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी और सहवर्तिनी साध्वीश्री सौम्यप्रभाजी, साध्वीश्री मलयप्रभाजी, साध्वीश्री वर्धमानयशाजी का बंगोमुंडा सभा के तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। इस अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा सुबह 8.30 बजे निकाली गई और सभा अध्यक्ष श्री बसन्त जैन की अध्यक्षता में अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य

अतिथि के रूप में कंटाबांजी के विधायक हाजी महम्मद आयूब खान, सम्मानीय अतिथि के रूप में ओडीसा प्रांतीय सभा के अध्यक्ष श्री केवल व मुख्य वक्ता रूप में समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञाजी ने अपने अपने विचार रखे। साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी ने कहा कि आज स्वागत हमारा नहीं उस महातेजस्वी सूर्य महाश्रमण का हो रहा है, जिनकी किरण बन हम चातुर्मास करने ओडीसा की पवित्र भूमि बंगोमुंडा में आए हैं। आप सभी इस चातुर्मास का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाकर अपने जीवन का कल्याण करें। इस अवसर पर साध्वीश्री सौम्यप्रभाजी, मलयप्रभाजी व साध्वीश्री वर्धमानयशाजी ने तपस्या, जप और संत सन्निधि का लाभ उठाने हेतु प्रेरणा दी। समणी स्वर्णप्रज्ञाजी, प्रांतीय मंत्री श्री निवास जैन, श्री ओमप्रकाश जैन, श्री धर्मपाल जैन, श्रीमती सारदा देवी, श्री जितेन्द्र जैन, श्री सुशील जैन, श्री तुलसी दास जैन, श्री बिनोद जैन, श्री भूपेन्द्र जैन, श्री नानुराम जैन, श्री प्रेम बोरड़ आदि 47 वक्ताओं ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में रायपुर, कटक, अहमदाबाद, फरीदाबाद, कंटाबांजी, पटनागढ़, बलांगीर, तुसरा, सैंताल, बेलगाँव, केसिंगा, उत्केला, भवानीपटना, बोर्डा, कुरसुड, चांदूतरा, सिंधिकेला, टिटिलागढ़ के लगभग 1000 से ज्यादा श्रद्धालु उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन युवा पत्रकार श्री केशव नारायण जैन ने किया।

आचार्य भिक्षु जन्म दिवस - बोधि दिवस का आयोजन

बंगोमुंडा सभा द्वारा साध्वीश्री सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु का 290वां जन्म दिवस बोधि दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी ने भिक्षु के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व, कर्तृत्व व वक्तृत्व पर विशेष जानकारी दी और उनके आदर्शों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री मलयप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु की महानता का उल्लेख किया। साध्वीश्री सौम्यप्रभाजी, ओडिसा प्रान्तीय कोषाध्यक्ष श्री केशब नारायण जैन, सहमंत्री श्री मुकेश जैन, कन्यामंडल, महिला मंडल, बंगोमुंडा, महिला मंडल, सिंधकेला, श्री नीरज जैन, श्री संजीव जैन, श्रीमती रश्मि जैन, श्री विद्युत कुमार जैन, श्रीमती सावित्री देवी जैन आदि ने गीत, कविता एवं विचारों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति प्रणति निवेदित की। कार्यक्रम में टिटिलागढ़, बेलपडा, चांदूतरा, कुरौसुद, कंटाबाजी, सिंधकेला आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु उपस्थित थे। संचालन तेयुप के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र कुमार जैन ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस एवं तप अभिनंदन कार्यक्रम

साध्वीश्री सम्यकप्रभाजी के सान्निध्य में बंगोमुंडा सभा द्वारा गुरु-पूर्णिमा के दिन तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें साध्वीश्री ने तेरापंथ को अर्हत वाणी पर आत्मसमर्पण करने वाला तथा अनुशासन, आज्ञा, मर्यादा को प्रतिष्ठित करने वाला धर्मसंघ बताया। साध्वीश्री मलयप्रभाजी, सौम्यप्रभाजी, वर्धमानयशाजी ने गीत का संगान किया। सभा के अध्यक्ष श्री बसन्तजी, म.मं. की अध्यक्ष श्रीमती शारदा देवी आदि ने कविता, मुक्तक, भाषण एवं सुन्दर गीतों की प्रस्तुति दी।

साध्वीश्री ने कांटाबाजी से तपस्वी सुमित की गुरु-पूर्णिमा पर गुरु दक्षिणास्वरूप किए गए अठाई तप पर मंगल कामनाएं कीं। बंगोमुण्डा, कांटाबाजी, सिंधिकेला तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल आदि ने साहित्य आदि अर्पित कर सम्मान किया। अंत में धम्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री केशव नारायण ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नई दिल्ली

मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी का चातुर्मासिक प्रवेश

मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमलजी का शाहदरा सभा, दिल्ली में पर्यावरण विशुद्धि यात्रा के साथ भव्य चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। यात्रा में पर्यावरण विशुद्धि की चेतना व *हर डगर मेरा घर* की थीम पर दो झांकियां निकाली गईं। लोग हाथों में तख्तियां थामे हुए थे जिनपर पर्यावरण विशुद्धि चेतना के जागरण की अपील थी।

श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि चातुर्मास का समय विशेष रूप से उपासना के लिए है। मुनिश्री ने बाहरी प्रदूषण के साथ भीतरी प्रदूषण को मिटाने का आह्वान करते हुए धर्म-ध्यान में नए कीर्तिमान स्थापित करने तथा ज्ञान-दर्शन, त्याग-तपस्या के क्षेत्र में विकास करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने कहा कि

पर्यावरण प्रदूषण से आज पूरा विश्व चिन्तित है। इसे ठीक करना जरूरी है। पूर्वी दिल्ली के सांसद श्री महेश गिरि ने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मंत्रीमुनिजी का मेरे क्षेत्र में प्रवास हो रहा है। आप सभी को आत्मा व मन की शुद्धि का आशीर्वाद प्रदान करते रहें। दिल्ली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री के.एल. जैन पटावरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मंत्रीमुनिश्री के चातुर्मास प्रवास से दिल्लीवासियों को निरन्तर प्रेरणा मिलेगी। कार्यक्रम में पूर्व विधायक श्री जितेन्द्रसिंह शंटी, निगम पार्षद श्री रतनसिंह पंवार, पूर्वी दिल्ली नगर निगम के चेयरमेन श्री महेन्द्र आहूजा सहित अनेक विशिष्ट जन उपस्थित थे।

मुनि उदित कुमारजी ने श्रावकों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की। शाहदरा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भानुप्रकाश बरड़िया ने मंत्रीमुनिश्री का परिचय देते हुए स्वागत किया। स्वागत करने वालों में प्रमुख थे, ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री आनन्द बुच्चा, चीफ ट्रस्टी श्री हनुमानमल बांठिया, गांधीनगर सभा के अध्यक्ष श्री प्रेम छल्लाणी, विकास मंच के अध्यक्ष श्री सुभाष सेठिया, टी.पी.एफ. के अध्यक्ष श्री अभय चिंडालिया, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती तारा बैंगाणी, तेयुप अध्यक्ष श्री मनोज बोरड़, दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक श्री रतनलाल जैन, प्रबुद्ध श्रावक श्री विजयराज सुराणा, यात्रा संयोजक श्री अरुण सेठिया, मुनि विजय कुमारजी आदि। दिल्ली महिला मंडल एवं मारवाड़ी युवा मंच ने गीत प्रस्तुत किए। शाहदरा सभा के मंत्री श्री राजेन्द्र सिंघी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी सम्पादक श्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगापुर

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनंदन समारोह

तपोमूर्ति श्री पृथ्वीराज एवं मुनिश्री अजयप्रकाश के गंगापुर में चातुर्मासिक प्रवेश पर कालू-कल्याण कुंज के प्रांगण में सभा द्वारा अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भिन्न-भिन्न स्थानों से आए विभिन्न वक्ताओं ने गीतिका, वक्तव्य व कविता के माध्यम से मुनिजनों का भावभीना स्वागत किया। तपोमूर्ति श्री पृथ्वीराज ने इस अवसर पर कहा कि दुर्लभ मनुष्य जीवन का यदि उचित उपयोग हो तो जीवन में निखार आ सकता है। मुनिश्री अजयप्रकाश ने समय का उपयोग ध्यान, तप, जप व स्वाध्याय में करने की प्रेरणा दी। अभिनन्दन कार्यक्रम में श्री कैलाश हिरण, अणुव्रत समिति के श्री रमेश हिरण, श्री प्रकाश बूलिया तथा बावलास व आम्रावली आदि समीपवर्ती क्षेत्रों से समागत भाई-बहनों ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। सभा के अध्यक्ष श्री भगवतीलाल बापना ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री घेवरचन्द बाबेल ने किया।

प्रज्ञा दिवस का आयोजन

मुनिश्री पृथ्वीराजजी स्वामी के सान्निध्य एवं गंगापुर सभा के तत्वावधान में आमली ग्राम में आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिन के अवसर पर प्रज्ञा दिवस का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने इस अवसर पर कहा कि देश का सौभाग्य है कि आचार्य महाप्रज्ञ जैसे संत इस धरती पर पैदा हुए, जिनका सम्पूर्ण जीवन एक योगी की भाँति रहा। ऐसे संत युगों के बाद इस धरती पर आते हैं। मुनिश्री अजयप्रकाश ने आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा पर प्रकाश डाला। श्री चाँदमल सुतरिया ने आचार्यश्री के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति की। आगंतुक अतिथियों का स्वागत श्री शंकरलाल चपलोत ने किया। श्री गेहरीलाल चपलोत (आमली), श्री भैरूलाल सिंघवी (आशाहोली), श्री नानालाल बापना व श्री घेवरचन्द बाबेल (गंगापुर) आदि वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सुश्री सुषमा श्रीमाल तथा प्रेक्षा बाबेल ने गीतिका के माध्यम से आचार्यवर को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम में गंगापुर, नांदसा, बावलास, आशाहोली व आसपास के सैंकड़ों भाई-बहन उपस्थित थे।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हासन

मंगलभावना समारोह

हासन सभा द्वारा साध्वीश्री काव्यलताजी एवं सहवर्तिनी साध्वीवृंद साध्वी ज्योतियशा, साध्वी सुरभिप्रभा, साध्वी वैभवयशा के सभा में प्रवास के पश्चात चातुर्मासिक प्रवास हेतु चिकमंगलूर की ओर प्रस्थान करने पर मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री काव्यलताजी ने कहा कि धर्म ही

व्यक्ति के जीवन में नया उजास भर सकता है। हासन में भी जागृति की लहर आई है। साध्वी ज्योतियशा, साध्वी सुरभिप्रभा, साध्वी वैभवयशा ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष श्री चान्दमल सुराणा, मंत्री श्री सोहनलाल तातेड़, नव अध्यक्ष श्री फूलचन्द तातेड़, श्री विमल कोठारी, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश कोठारी, श्रीमती विनीता सुराणा, नम्रता सुराणा, सपना सुराणा ने भी मंगलकामना प्रस्तुत की। सभा के मंत्री श्री सोहनलाल तातेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बीदासर

जैन विद्या दिवस पर कार्यक्रम

बीदासर सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी के पावन सान्निध्य में जैन विद्या दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कहा कि जैन विद्या वीतरागता की दिशा में प्रस्थान की विद्या है। कषाय मुक्ति ही जैन साधना का सार है। इस दिवस को मनाने का तात्पर्य है जैन विद्या के प्रति समाज की अभिरुचि बढ़ाना। साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभाजी ने कहा कि जैन विद्या को जानने का प्रथम सोपान है - नव तत्त्वों का ज्ञान। संसार के हेतु क्या है और संसार मुक्ति का उपाय क्या है - यह जाने बिना जैन विद्या में विकास नहीं हो सकता।

तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष श्री अजित बैंगानी ने जैन विद्या दिवस के उपलक्ष में अपनी शुभकामना देते हुए सबके प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर जैन विद्या परीक्षा के गत वर्ष के प्रमाणपत्रों का वितरण किया गया। मौखिक परीक्षा का आयोजन बड़ा ही रोचक रहा, जिसमें साध्वीश्री ने भाइयों-बहनों व बच्चों से जैन तत्त्व विद्या के संबंध में अनेक प्रश्न पूछे, जिन्हें उत्तरित करनेवालों को तत्काल पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन सुश्री पूनम फलोदिया ने किया।

पूज्यप्रवर की सेवा में बीदासरवासी

बीदासर सभा के पदाधिकारीगण एवं संघ के लोग गंगाशहर में आयोजित आचार्य तुलसी की 19वीं पुण्यतिथि पर 3 एवं 4 जुलाई को गंगाशहर गए एवं वहाँ 3 जुलाई को प्रबुद्धजनों की गोष्ठी एवं तेरापंथ भवन में संगीत के कार्यक्रम में तथा 4 जुलाई को जप के कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर अणुव्रत एक्सप्रेस के शुभारंभ पर भी हर्षोल्लास मनाया गया।

नेपाल में पूज्य गुरुदेव की रास्ते की सेवा दर्शन का लाभ भी बीदासर तेरापंथी श्रावक समाज ने उठाया, जिसमें कुल 23 व्यक्तियों ने भाग लिया।

वर्षायोग का प्रारंभ

साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी के सान्निध्य में बीदासर सभा द्वारा त्रिदिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान के साथ वर्षायोग का प्रारंभ हुआ। बोधि दिवस के अवसर पर आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी के पावन प्रातः में आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना तप-जप पूर्वक की गई।

साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का अभ्युदय विक्रम की 19वीं सदी की महान घटना है।

चातुर्मासिक चतुर्दशी के अवसर पर साध्वी निर्वाणश्रीजी ने तेरापंथ की मर्यादाओं को संयम का सुरक्षा कवच बताया।

तेरापंथ स्थापना-दिवस एवं गुरुपूर्णिमा के संदर्भ में साध्वीश्री ने कहा कि गुरु के प्रति आस्था का अर्घ्य समर्पित करने का पावन पर्व है गुरुपूर्णिमा।

साध्वीश्री डॉ. योगक्षेमप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति, उनकी मनस्विता, तपस्विता, तेजस्विता के संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त किए। श्रीमती सरोज बैद ने गीत प्रस्तुत किया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम का संचालन साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने कुशलतापूर्वक किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जलगांव

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी ठाणा-2 का 17 जुलाई 2015 को चातुर्मास हेतु जलगांव के अणुव्रत भवन में मंगल प्रवेश हुआ। इस उपलक्ष में अभिनन्दन समारोह एवं खान्देश स्तरीय श्रावक-श्राविका सम्मेलन नवजीवन मंगल कार्यालय में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हीरालाल मालू (निवर्तमान अध्यक्ष-महासभा), श्री जतनलाल सेठिया (अध्यक्ष-खान्देश सभा), श्री दूलीचन्द जैन (अध्यक्ष-सकल जैन संघ, जलगांव) उपस्थित थे।

मुनिश्री स्वस्तिक कुमारजी ने श्रावक-श्राविका समाज को गुरु के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा रखने व संगठन को मजबूत बनाने, प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करने, साधु-साध्वियों की सेवा करने और संघीय आयामों में अपना पूर्ण योगदान देने की प्रेरणा दी। मुनिश्री सुपार्श्वकुमारजी ने समाज को अपना जीवन धर्ममय एवं तपमय बनाने एवं चातुर्मास में धर्मध्यान का लाभ लेने की प्रेरणा दी।

प्रमुख अतिथि श्री हीरालाल मालू ने खान्देश से पधारे श्रावक-श्राविका समाज को मार्गदर्शन दिया एवं संघीय गतिविधियों की जानकारी दी तथा समाज के विकास हेतु सभी को तन-मन-धन से एवं संगठित होकर कार्य करने हेतु आह्वान किया। सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार सेठिया, महिला मंडल की अध्यक्ष सौ. संतोष छाजेड़, युवक परिषद के अध्यक्ष श्री पवन सामसुखा, श्री दूलीचन्द जैन एवं खान्देश सभा के अध्यक्ष श्री जतनलाल सेठिया भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर खान्देश तेरापंथी सभा के आगामी कार्यकाल के लिए अध्यक्ष के रूप में मनोनीत श्री नानकराम तनेजा को सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन श्री जितेन्द्र छाजेड़ ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

केसिंगा सभा और स्थानीय श्रावक समाज द्वारा समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञाजी तथा सहयोगी समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के केसिंगा नगरी में मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य में भव्य स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि श्री संजय भंडारी, प्रान्तीय ओडीसा सभा अध्यक्ष श्री केवलचन्द जैन व केसिंगा सभा अध्यक्ष श्री शंकरलाल जैन की उपस्थिति में मंगल प्रवेश कार्यक्रम हुआ। श्री शंकरलाल जैन ने समणीवृंद के प्रति मंगल भावना प्रस्तुत करते हुए उनका श्रद्धासिक्त स्वागत किया। समणी मंजुप्रज्ञाजी ने सबको जागृति का संदेश दिया और समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने चातुर्मास में धर्मलाभ उठाने की प्रेरणा दी। ओडीसा प्रान्तीय सभा के मंत्री श्री निवास जैन, कोषाध्यक्ष श्री केशव नारायण जैन, उपाध्यक्ष श्री अनिल जैन, ओडीसा के पूर्व अध्यक्ष श्री जीतमल जैन, श्री रामनिवास जैन, श्रीमती अर्चना जैन एवं बगोमुंडा, सिंधिकेला, कांटावांजी, टिटलागढ़, उत्केला, बलांगीर, शैतला, भवानीपटना, वोरडा आदि से पधारे पदाधिकारियों ने अपनी गीतिका व भाषण आदि से समणीवृंद का स्वागत किया। केसिंगा ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों एवं कन्या मंडल के सदस्यों ने अपनी प्रस्तुतियों के द्वारा समणीवृंद का अभिवंदन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री अजीत जैन ने तथा आभार ज्ञापन श्री प्रवीन जैन ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जैतो

बोधि दिवस का आयोजन

साध्वीश्री अमितप्रभाजी के सान्निध्य में जैतो सभा द्वारा आचार्य भिक्षु के जन्म दिन को बोधि दिवस के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री अमितप्रभाजी ने आचार्यश्री भिक्षु के 290वें जन्मदिन पर श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए उन्हें सत्य का महान पुजारी बताया। साध्वी कंचनबालाजी एवं साध्वी ध्रुवरेखाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। साध्वी नयश्रीजी ने स्वरचित गीत के द्वारा भावांजलि अर्पित की। साध्वी रिजुप्रभाजी ने मधुर गीत पेश किया। महिला मंडल मंत्री अनु ने गीत से श्रद्धासुमन चढ़ाये।

ज्ञानशाला के बच्चों के लिए शिविर का आयोजन

साध्वीश्री अमितप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा में बच्चों का एक शिविर दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक रखा गया, जिसमें लगभग 30 बालक-बालिकाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। साध्वीश्री अमितप्रभाजी ने बच्चों को सुसंस्कारी बनाने हेतु ज्ञानशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और माता-पिता को अपने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने हेतु प्रेरित किया। साध्वी कंचनबालाजी ने बच्चों को संस्कार सप्तक के माध्यम से ज्ञान सीखने और अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा दी। साध्वी ध्रुवरेखाजी ने बच्चों को बुद्धि विकास और क्रोध विजय के लिए प्रेक्षाध्यान के माध्यम से प्रयोग करवाये। वर्ग पहेली के माध्यम से बच्चों के ज्ञान का परीक्षण किया गया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में दो सप्ताह से चल रही ज्ञानशाला में कण्ठस्थ ज्ञान की परीक्षा ली गई, जिसमें बच्चों ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिये। तेरापंथ महिला मंडल, जैतो द्वारा सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

बहुओं के लिए एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन

साध्वीश्री अमितप्रभाजी के सान्निध्य में जैतो सभा द्वारा बहुओं के लिए एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने पारिवारिक जीवन में रिश्तों की अहम भूमिका बताते हुए कहा कि जीवन में शांति तभी संभव है जब आपसी संबंधों में मधुरता हो, जिसके लिए वाणी में मधुरता और शालीनता, एक दूसरे की जरूरतों को समझना, प्रमोद भावना का विकास होना, दूसरों के गुणों को खुले दिल से व्यक्त करना और सेवा और सहयोग के लिए तत्पर रहना आवश्यक है। इनको अपनाने से रिश्तों में मिठास भरती है। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में साध्वी नयश्रीजी द्वारा प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग और मंगलभावना के प्रयोग करवाए गए।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोगुन्दा

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनंदन

गोगुन्दा सभा के आयोजकत्व में साध्वीश्री उज्ज्वलप्रभाजी, साध्वीश्री अनुप्रेक्षाश्रीजी, साध्वीश्री विनीतयशाजी, साध्वीश्री सन्मतीप्रभाजी, ठाणा-4 का चातुर्मासिक प्रवेश पर एक भव्य अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। सभा अध्यक्ष श्री श्रीलाल खोखावत, कार्यकारी अध्यक्ष श्री चतर फतावत, उपाध्यक्ष श्री हीरालाल सुराणा ने स्वागत में अपने विचार रखें। साध्वीश्री अनुप्रेक्षाजी ने चातुर्मासिक प्रवेश के महत्व को बताया। साध्वीवृन्द द्वारा सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। आभार श्री श्रीलाल खोखावत ने व्यक्त किया और कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र गोरवाड़ा ने किया।

मूलचन्दजी बोथरा के प्रति श्रद्धांजलि

गोगुन्दा सभा के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सभा के पदाधिकारियों एवं स्थानीय श्रावक समाज ने शासनसेवी स्व. मूलचन्दजी बोथरा के देवलोक गमन पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सभआ के कार्यकारी अध्यक्ष श्री चतरसिंह फतावत ने कहा कि स्व. बोथरा स्थानीय तेरापंथ समाज के एक स्तंभपुरुष थे। उनके द्वारा की गई संघ सेवाएं सदैव स्मरणीय रहेगी। उन्होंने पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के विभिन्न स्वप्नों को साकार करने में निष्ठापूर्वक कार्य किया था। जीवन के अन्तिम समय में संथारा-संलेखनापूर्वक समाधिमरण प्राप्त करना उनकी पुण्याई का द्योतक है। उनके स्वर्गवास से समाज एवं धर्मसंघ की अपूरणीय क्षति हुई हैं। उन्होंने परिवार के सभी सदस्यों को यह शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु सर्वशक्तिमान से प्रार्थना की।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अजमेर

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

अजमेर सभा द्वारा शासनश्री साध्वीश्री चांदकुमारीजी और उनकी सहवर्तिनी साध्वी राकेश कुमारीजी, साध्वी विवेकश्रीजी, साध्वी मंजुबालाजी, साध्वी तितिक्षाश्रीजी व नवदीक्षित साध्वी पल्लवप्रभाजी के साथ सुन्दर विलास स्थित तेरापंथ सभा भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर हार्दिक अभिनंदन किया गया। साध्वीश्री चांदकुमारीजी ने चातुर्मासिक कार्यकाल में संपूर्ण समाज को आध्यात्मिक जागृति बनाए रखने की प्रेरणा दी। साध्वी तितिक्षाश्रीजी, साध्वी पल्लवप्रभाजी, साध्वी विवेकश्रीजी, साध्वी मंजुबालाजी एवं साध्वी राकेश कुमारीजी ने धर्म-ध्यान के द्वारा जीवन को उन्नत बनाने, अपनी शक्ति अनुसार तप-त्याग करने व चातुर्मासकाल में साध्वियों का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेने की प्रेरणा दी। रैकी प्रशिक्षक श्री मदनलाल बाफणा, अणुव्रत प्रभारी श्री जीतमल छाजेड़, सभा के अध्यक्ष श्री गौतम श्रीश्रीमाल, मंत्री श्री लाभचन्द श्रीमाल, तपस्वी श्री प्रकाश कोठारी ने भी अपने विचार रखे। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के द्वारा साध्वीवृंद का वर्धापन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद

प्रज्ञा दिवस का आयोजन

साध्वीश्री लब्धिश्रीजी के सान्निध्य में अहमदाबाद सभा द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 96वें जन्म दिवस पर प्रज्ञा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ के विशद ज्ञान पर प्रकाश डाला। साध्वीश्री आराधनाश्रीजी ने सुन्दर कविता का पाठ किया और मुमुक्षु यशाजी ने अपने सारगर्भित विचार

रखे। इसके पूर्व सभा के मंत्री श्री राजेन्द्र बोथरा ने समागत श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति अपनी भावनाएं प्रस्तुत की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पश्चिम के सहमंत्री श्री अमित सेठिया एवं तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनोज लुणियां, श्री धनपत मालू ने भी वक्तव्य दिए। कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद पश्चिम सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नवरतन रामपुरिया ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

रायपुर सभा द्वारा साध्वीश्री राकेश कुमारीजी (बायतू), साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी एवं साध्वी जिज्ञासाप्रभाजी के रायपुर में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर हार्दिक अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री राकेश कुमारीजी ने कहा कि ज्ञान-दर्शन चरित्र तप की आराधना करने का उत्तम समय है चातुर्मास। उपशम भावों को संजोकर आत्मा को उज्ज्वल बनाने का श्रेष्ठतम अवसर है चातुर्मास। साध्वी मलयविभाजी, विपुलयशाजी व जिज्ञासाप्रभाजी ने चातुर्मास बुलेटिन द्वारा रोचक कार्यक्रम की प्रस्तुति की। इसके पूर्व सभा अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जैन ने साध्वीश्री का अभिनन्दन वंदन किया एवं आसपास तथा नागपुर, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव, ओडीसा से आए सभी आगन्तुक तथा उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। महिला मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति की। नागपुर सभाध्यक्ष श्री सुनील छाजेड़, श्री दानमल पोरवाल, भिलाई से श्री वर्धमान सुराना, एम.एल.ए. सुन्दरानीजी, तेयुप, महिला मंडल, टीपीएफ, समिति के अध्यक्षों, श्रीमती विमला बैंगानी, श्रीमती इन्दु लोढ़ा, श्री शिवराज भंसाली, श्री महेन्द्र धाड़ीवाल आदि ने साध्वीश्री का अभिनंदन किया।

चातुर्मासिक पक्खी का कार्यक्रम

रायपुर सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री राकेश कुमारी के सान्निध्य में चातुर्मासिक पक्खी का कार्यक्रम साध्वी जिज्ञासाप्रभाजी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री राकेश कुमारीजी ने गीत का संगान कर तप, जप, स्वाध्याय, ध्यान आदि करने की प्रेरणा दी। साध्वी मलयविभाजी ने चातुर्मास में कार्यकलाओं के आयोजन, रात्रि भोजन परिहार, सचित्त परिहार, सामायिक पौषध संवर आदि आध्यात्मिक अनुष्ठानों द्वारा चातुर्मास को सफल बनाने पर जोर दिया।

बोधि दिवस व 255वां तेरापंथ स्थापना दिवस

रायपुर सभा में साध्वीश्री राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में आ.भि. जन्मदिवस (बोधि दिवस) एवं 255वां तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों की जानकारी देते हुए साध्वी राकेशकुमारीजी ने कहा कि उन्होंने लौकिक व लोकोत्तर धर्म को परिभाषित किया। साध्वी मलयविभाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मलयविभाजी एवं साध्वी जिज्ञाशाप्रभाजी ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर

तीन दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन

तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा मुनिश्री राजकरणजी, मुनिश्री मुनिव्रतजी एवं मुनिश्री शांतिकुमारजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस बोधि दिवस के रूप में आयोजित किया गया और आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन 256वां तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन भक्ति भाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री राजकरणजी ने धार्मिकता और नैतिकता से युक्त जीवन व्यवहार और आचरण करने की प्रेरणा दी। तीन दिनों के धर्म प्रेरक कार्यक्रमों में मुनिश्री मुनिव्रतजी, मुनिश्री शांतिकुमारजी, मुनिश्री श्रेयांशकुमारजी, मुनिश्री विमलबिहारीजी एवं मुनिश्री पीयूषकुमारजी ने भी वक्तव्य और उपदेशात्मक गीतिका के संगान से प्रतिबोध दिया और चातुर्मास काल में ज्यादा से ज्यादा धर्म-ध्यान और त्याग-तपस्या करने की प्रेरणा दी। श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री किशन बैद, श्री मनीष बाफना, श्री मनीष छाजेड़, श्रीमती मधु छाजेड़ आदि ने तीनों दिन के कार्यक्रमों में सहभागिता निभाई।

जैन निःशुल्क कॉमर्स कोचिंग सेन्टर का शुभारंभ

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा 31 जुलाई 2015 को तेरापंथ भवन, गंगाशहर में जैन निःशुल्क कॉमर्स कोचिंग सेन्टर का शुभारंभ किया गया। तेरापंथी सभा के

पूर्व अध्यक्ष श्री हंसराजी डागा ने विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ने की प्रेरणा दी। संयोजक श्री राजेन्द्र सेठिया ने कहा कि आज से इस सेंटर में कक्षा 11 और 12 के वाणिज्य के जैन विद्यार्थियों तथा बी.कॉम. प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष के जैन विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता युक्त निःशुल्क अध्यापन किया जाएगा, जिसमें सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी श्री के.सी. चौपड़ा तथा डॉ. मनोज जैन अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। तेरापंथी सभा के पदाधिकारियों द्वारा श्री के.सी. चौपड़ा तथा डॉ. मनोज जैन का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। श्री कानीराम डाकलिया, श्री जीवराज सामसुखा, श्री प्रेमसुख चौपड़ा सहित काफी गणमान्य लोग और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

सभा के सहमंत्री श्री धर्मेन्द्र डाकलिया ने कहा कि गुरु-पूर्णिमा जैसे पवित्र दिन शुरू हुए इस कोचिंग सेन्टर से विद्यार्थियों को बहुत लाभ मिलेगा। इसके संचालन में गंगाशहर तेरापंथ न्यास, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद सहयोगी संस्था के रूप में कार्य करेगी। कार्यक्रम का संचालन श्री रजनीश बैद ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गांधीधाम

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

गांधीधाम सभा द्वारा मुनिश्री जिनेशकुमार आदि ठाणा-2 के चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत किया गया। सभा के अध्यक्ष श्री बाबुलाल सिंघवी ने कहा कि कच्छ के अन्दर लगभग 400 किमी. का विचरण करते हुए तथा सौराष्ट्र में मोरबी, जामनगर, राजकोट, गोंडल, जुनागढ़, पालीताणा भावनगर, बोटाद, लीबंडी, सुरेन्द्र नगर, धाग्रंध्रा, डलवद आदि क्षेत्रों का लगभग 1300 किमी. का विहार तथा सार-संभाल करते हुए मुनिवृंद का गांधीधाम में चातुर्मास हेतु पधारना हम सबके लिए परम आह्लाद का विषय है। सभा द्वारा क़रीबन 6 महीनों तक रास्ते की सेवा की गई एवं पालीताणा में अक्षय तृतीया को तेरापंथी भाई-बहिनों के वर्षीतप पारणा का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे तेरापंथ धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, आसींद

चातुर्मासिक प्रवेश पर अभिनन्दन समारोह

मुनिश्री अर्हत कुमारजी एवं मुनि चैतन्यकुमार अमन के आसींद सभा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें नगरपालिका अध्यक्ष श्री हगामीलाल मेवाडा, एस.एच.ओ. श्री अरविन्दसिंह चारण, तहसीलदार रमेशचन्द्र माहेश्वरी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मंत्री श्री पंकज ओस्तवाल, श्री लक्ष्मी साहू, स्थानकवासी समाज से श्री नवरत्नमल वडौला, मुमताज मोहम्मद शेख, डायर साहब, श्री चांदमल सांड, श्री निर्मल मेहता आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। मुनिश्री ने इस अवसर पर कहा कि चातुर्मास का समय जागने व जगाने का है। हम स्वयं में मानवीय गुणों का विकास करें। मुनि चैतन्यकुमार अमन ने कहा कि चातुर्मास में प्रत्येक व्यक्ति जिज्ञासु, विनम्र और विवेकी बने। पूर्व मंत्री श्री रामलाल जाट ने भाईचारे व कौमी एकता को महत्त्व देने पर बल दिया। श्री नवरत्नमल जैन, श्री राजेन्द्र बडोला, श्री कैलाश चावत, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल, युवक परिषद, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी आदि ने मुनिवृन्द के स्वागत में अपने विचार, गीत आदि प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर दौलतगढ़, करेडा, लाछूडा, लुहारिया, तिलोली, शम्भूगढ़, बदनोर, ज्ञानगढ़, कटार, कीडिमाल, नेगडिया, रघुनाथपुरा, मोतीपुर, बागोर, भीलवाड़ा, परासोली, पालडी आदि गांव से अनेक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अनिल गोखरू, स्वागत भाषण तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सम्पतलाल रांका एवं आभार कल्याणमल गोखरू ने प्रकट किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, जयपुर

आचार्य भिक्षु जन्म दिवस : प्रज्ञा दिवस

साध्वीश्री रतनश्री (लाडनूं) के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर द्वारा आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस को बोधि दिवस के रूप में मनाया गया एवं तेरापंथ के 256वें स्थापना दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि सत्यता के

महान साधक आचार्य भिक्षु संयम और साधना पर सिंह की भांति निर्बाध गति से बढ़ते रहे। उन्हें पांच वर्षों तक खाने को आहार नहीं, पहनने को पर्याप्त वस्त्र नहीं और ठहरने को स्थान नहीं, फिर भी अपनी प्रज्ञा के द्वारा विलक्षण कार्य किए। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी हिमश्रीजी द्वारा भिक्षु अष्टकम से हुआ। साध्वी रमावतीजी ने आचार्य भिक्षु के गुणों पर प्रकाश डाला। साध्वी हिमश्रीजी ने बोधि के स्वरूप को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मुक्तियशा ने कहा कि *निडर बनकर तुम चले थे, सूत्र के आधार से। चलते रहे थे न रुके तुम विरोधियों के वार से।* सभा के मंत्री श्री राजेन्द्र बांठिया, श्रीमती मीना बैद एवं श्री अजय नागौरी ने अपने भाव अभिव्यक्त किए।

तेरापंथ स्थापना दिवस

साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं) के सान्निध्य में तेरापंथ के 256वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं) ने तेरापंथ को पुरुषार्थ की दस्तक देने वाला पंथ बताया। साध्वी रमावती ने कहा कि जहां आचार, विचार ही मुख्य है वही तेरापंथ है। साध्वी हिमश्रीजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी चैतन्ययशा एवं सभा के मंत्री श्री राजेन्द्र बांठिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुक्तियशाजी ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिनहटा

प्रेक्षाध्यान सेंटर का शुभारंभ

दिनहाटा तेरापंथ सभा भवन में दिनांक 1.8.2015 को प्रेक्षाध्यान सेंटर का शुभारंभ सभा अध्यक्ष श्री माणकचन्द बैद, मंत्री श्री टीकमचन्द बैद एवं श्री शांतिलाल छलाणी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जैन अजैन कुल 22 व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें 9 महिलाएं थीं। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष श्री माणकचन्द बैद ने प्रशिक्षण लेने वाले सभी भाई-बहनों को ध्यान का निर्मल प्रयोग करने की प्रेरणा दी। श्री टीकमचन्द बैद ने गीत का संगान किया। मंत्री महोदय ने प्रेक्षाध्यान को योग-शिक्षा, स्वास्थ्य विज्ञान, जीवन विज्ञान एवं मनोचिकित्सा का समन्वित उपक्रम बताया। दिगम्बर जैन समाज की श्राविका श्रीमती दीपा जैन ने प्रेक्षाध्यान द्वारा जीवन में परिवर्तन लाने की बात कही। डॉक्टर एस.एन. सरकार द्वारा आसन, यौगिक क्रिया और कपालभाती का प्रयोग करवाया गया। श्री टीकमचन्द बैद ने कायोत्सर्ग और दीर्घश्वास प्रेक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रयोग करवाए।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पीलीबंगा

तेरापंथ स्थापना दिवस समारोह

पीलीबंगा जैन भवन में तेरापंथ स्थापना दिवस समारोह का आयोजन शासनश्री साध्वीश्री रतनश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि आज से 256 वर्ष पहले गुरु-पूर्णिमा के शुभ मुहूर्त में उत्तम गृह स्थिति में आचार्य भिक्षु ने इस संघ की स्थापना की। आज इस छोटे से संघ ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है। साध्वी कार्तिकप्रभा, साध्वी चिन्तनप्रभा ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। साध्वीश्री सुव्रताजी एवं साध्वीश्री कार्तिकप्रभाजी ने भिक्षु जीवन में घटित होने वाले कष्टप्रद प्रसंगों का चित्रण किया। अखिल भारतीय महिला मंडल की प्रभारी श्रीमती पुष्पा जैन, पीलीबंगा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मंजु जैन, श्रीमती सायर जैन, श्रीमती संगीता जैन, श्री राजकुमार जैन आदि वक्ताओं ने संगीत व वक्तव्य के द्वारा भिक्षु के चरणों में भावांजलि अर्पित की। इस अवसर पर दिन में *ॐ भिक्षु जय भिक्षु* का अखण्ड जाप और रात्रि में धर्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुशीला नाहटा ने किया।

त्रिआयामी समारोह का आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार जैन विद्या के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हेतु शासनश्री साध्वीश्री रतनश्रीजी के सान्निध्य में पीलीबंगा सभा के तत्वावधान में त्रिआयामीय समारोह समायोजित किया गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वीश्री रतनश्रीजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक महान स्वप्नद्रष्टा आचार्य थे। उन्होंने संघ के चतुर्मुखी विकास के लिए अनेकानेक स्वप्न लिए, उनमें जैन विद्या, युवक परिषद एवं मंत्र दीक्षा का स्वप्न उल्लेखनीय हैं। आज तीनों स्वप्न अच्छे ढंग से

साकार बने है। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थी इस परीक्षा में संभागी बनते हैं। पीलीबंगा में नौ वर्षों के दौरान आयोजित परीक्षाओं में 18 विद्यार्थी विज्ञ की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। इस वर्ष अधिकतम परिवार इस उपक्रम से जुड़े और आचार्यश्री के स्वप्न को साकार करे। बाद में शासनश्रीजी ने छोटे-छोटे बच्चों को कुछ संकल्पों की स्वीकृति के बाद मंत्र दीक्षा प्रदान की। 35 बच्चों ने दीक्षा ग्रहण की। विद्यार्थियों को एवं मंत्र दीक्षा ग्रहणकर्ता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कर्ता थे श्री संजीव जैन-आचंलिक प्रभारी, श्री जसकरण जैन-अध्यक्ष, तेरापंथी सभा-पीलीबंगा, श्री वंशीलाल जैन-संरक्षक, तेरापंथी सभा-पीलीबंगा, श्री महेन्द्र जैन, श्री ओमप्रकाश जैन, श्री कमलापत जैन, श्री संजय जैन, श्री सुमित जैन आदि। कार्यक्रम में हनुमानगढ़ एवं ढावा से भी कुछ श्रावक-श्राविकाएं समुपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री देवेन्द्र बांठिया ने किया।

नौ दिवसीय तपस्या के उपलक्ष में अभिनंदन समारोह

पीलीबंगा जैन भवन में हनुमानगढ़ निवासिनी सुश्री मिताली की नौ दिनों की तपस्या के उपलक्ष में अभिनन्दन समारोह शासनश्री साध्वीश्री रतनश्रीजी के सान्निध्य में समायोजित किया गया। साध्वीश्री उनके तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि जिसकी संकल्प शक्ति मजबूत होती है वही व्यक्ति तपस्या कर सकता है। साध्वीश्री सुव्रतांजी ने कहा कि तपस्या से हमारी ऊर्जा बढ़ती है। साध्वी कार्तिकप्रभा एवं साध्वी चिन्तनप्रभा ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रीति जैन ने आचार्य वन्दना से किया। श्री पद्मचन्दजी बांठिया, श्रीमती पुष्पा नाहटा, श्रीमती मंजु नौलखा, श्री सुरेन्द्र रांका आदि ने तपस्विनी का अभिनन्दन किया। पीलीबंगा महिला मंडल ने साहित्यार्पण द्वारा सुश्री मिताली का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुशीला नाहटा ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद

256वां तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

साध्वी कुन्थुश्रीजी के सान्निध्य एवं हैदराबाद तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ के 256वें स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के दिन तेरापंथ को एक विलक्षण गुरु मिले थे। इस अवसर पर उन्होंने आचार्य श्री महाश्रमणजी की दक्षिण यात्रा की घोषणा पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु-पूर्णिमा का शुभ दिन आचार्य भिक्षु के ग्यारहवें पट्टधर गुरु महाश्रमणजी का महान वरदान प्राप्त हुआ है। चैन्नई, बैंगलोर एवं हैदराबाद को भी पावन पावस प्राप्त हुआ है। उपस्थित जन मेदिनी ने हर्षध्वनि ओम अर्हम के द्वारा खुशी जाहिर की। साध्वी कंचनरेखाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु वीर, धैर्यशील एवं शक्तिशाली पुरुष थे। साध्वी सुलभयशाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु वीर प्रभु थे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री दिलीप डागा के सुमधुर गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के सहमंत्री श्री पदम दुगड़, तेयुप के अध्यक्ष श्री प्रवीण बैंगानी, महिला मंडल की मंत्री श्रीमती रीटा सुराणा, टी.एम.सी. के प्रभारी श्री कुन्दनमल रामश्री आदि वक्ताओं ने आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर विचार प्रस्तुत करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने किया।

स्मृति सभा का आयोजन

हैदराबाद तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी कुन्थुश्री के सान्निध्य में डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में श्रीमती मोहिनी देवी खटेड़ की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती मोहिनी देवी खटेड़ ने आचार्य महाश्रमणजी के निर्देशानुसार साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया था। 18 दिवसीय संथारा दिनांक 20 जुलाई, 2015 को सायं 5 बजकर 33 मिनट पर संथारा सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने श्रीमती मोहिनी देवी की आत्मा के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास की कामना की। साध्वी कंचनरेखाजी, साध्वी सुमंगलाजी, साध्वी सुलभयशाजी ने गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष श्री प्रकाश बरड़िया ने परमपूज्य आचार्यप्रवर के संदेश का वाचन करते हुए श्राविका मोहिनी देवी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए। उनके सुपुत्र श्री रणजीतमल खटेड़ ने मातुश्री का परिचय देते हुए उनकी दृढ़ता का वर्णन किया और परमपूज्य गुरुदेव तथा साध्वीवृन्द व सभा के प्रति आभार प्रकट

किया। सभा के पूर्वाध्यक्ष श्री राजकुमार सुराणा, तेयुप अध्यक्ष श्री मुकेश सुराणा, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बरड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री दिलीप डागा, तपस्विनी की पौत्रवधू श्रीमती मोनिका खटेड़ एवं अन्य पारिवारिक जन सर्वश्रीमती सुशीला, विमला, पुत्री आदि ने गीतिका, पौत्री प्रीति ने कविता आदि के माध्यम से श्राविका मोहिनी देवी के आध्यात्मिक जीवन की विशेषताओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री अशोक नाहटा ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, असाड़ा

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश कार्यक्रम

साध्वीश्री शुभवतीजी का चातुर्मास के लिए असाड़ा के तेरापंथ भवन में मंगल प्रवेश के अवसर पर तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, कन्या मंडल, महिला मंडल और श्रावक समाज द्वारा भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री मौलिकप्रभाजी ने सिवांची मालाणी में तीनों साध्वियों का भावभीना स्वागत किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मदनलाल भंसाली और श्रीमती राजल देवी बालड़, श्रीमती कान्ता देवी बालड़, श्रीमती ममता देवी भंसाली, श्री मांगीलाल भंसाली, श्री तिलोकचन्द भंसाली, श्रीमती देवकन्या भंसाली आदि ने भाषण ,गीतिका, कविता आदि के माध्यम से साध्वीश्रीजी का हर्षोल्लास से स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने रोचक कविता प्रस्तुत की।

साध्वीश्री सम्पूर्णयशा, संवरप्रभा ने श्रावकों को चातुर्मास में जागरूक रहने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री शुभवती ने फरमाया कि चातुर्मास सफल तभी हो सकता है जब आप सभी भाई-बहन तन्मयता से प्रवचन, स्वाध्याय, अर्हत वंदना, प्रतिक्रमण में नियमित भाग लें। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन श्री पीयूष बालड़ ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांकरोली

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर अभिनंदन समारोह

बहुश्रुत परिषद की सम्मान्य सदस्या विदुषी साध्वीश्री कनकश्रीजी और उनकी सहवर्तिनी साध्वीवृंद के कांकरोली के नया बाजार स्थित तेरापंथ भवन प्रज्ञा विहार में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर कांकरोली तेरापंथी सभा द्वारा स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। साध्वीवृंद की अगवानी करने हेतु नगर परिषद के उप सभापति श्री अर्जुन मेवाड़ा, कांकरोली सभा के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारीगण, श्रीमती लादी देवी डीडवानिया, श्रीमती विशाखा तिवारी, श्रीमती मधु चोरड़िया, श्री राजेश पालीवाल, श्री राकेश बड़ाला आदि उपस्थित थे।

अभिनंदन कार्यक्रम का शुभारंभ कन्याओं द्वारा प्रस्तुत मंगल गीत से हुआ। सभा अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री नंदलाल बाफणा, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती नीता सोनी, तेयुप अध्यक्ष श्री पवन कोठारी आदि ने साध्वीश्री का हार्दिक स्वागत किया। महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कन्या मंडल की बालिकाओं ने संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया।

चातुर्मास को धर्माराधना का उत्कृष्ट समय बताते हुए साध्वीश्री कनकश्री जी ने कहा कि श्रावक-श्राविकाएं चार माह तक आत्मानुशासन का विशेष अभ्यास करें।

ज्ञातव्य है कि साध्वीवृंद इसके पूर्व विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक जागृति एवं संस्कार निर्माण करती हुई तुलसी साधना शिखर और अणुव्रत विश्व भारती पधारीं, जहाँ साध्वीश्री के पावन सान्निध्य में अणुविभा में गुरुदेव श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर तुलसी स्मृति समारोह के अन्तर्गत बहुआयामी कार्यक्रमों के साथ पांच दिवसीय महाशिविर आयोजित हुआ। इसके साथ ही साधना शिखर पर त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न हुआ। दोनों ही शिविर विशेष प्रभावक रहे।

256वां तेरापंथ स्थापना दिवस

तेरापंथी सभा कांकरोली द्वारा साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन तेरापंथ भवन प्रज्ञा विहार में किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकश्रीजी ने कहा कि भिक्षु महावीर की परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर थे। उनका चिन्तन वीतराग वाणी और अध्यात्म पर केन्द्रित था।

साध्वीश्री मधुलताजी ने तेरापंथ धर्मसंघ के उद्‌भव और विकास की कहानी प्रस्तुत की। साध्वी समितिप्रभाजी ने

काव्यमयी भावांजलि समर्पित की। साध्वीवृन्द ने संघ भक्ति और समर्पण के भावों से ओतप्रेत गीत का संगान किया। सभा अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया एवं उपाध्यक्ष श्री विनोद बड़ाला ने भी प्रासंगिक विचार रखे। तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री पदमचन्द पटावरी ने समाज से अपील की कि भिक्षु के विचार दर्शन को समझें और उसके अनुरूप अपनी जीवनशैली बनाएं। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वीश्री मधुलताजी ने किया।

नई पीढ़ी : नई सोच - कार्यशाला

बहुश्रुत परिषद की सदस्या साध्वीश्री कनकश्रीजी लाडनूं के सान्निध्य में तेरापंथ भवन प्रज्ञा विहार में तेयुप कांकरोली द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका विषय था - नई पीढ़ी : नई सोच। साध्वीश्री कनकश्रीजी ने सकारात्मक सोच, सृजनात्मक कार्यशैली और संकल्पों की शक्ति को विकसित करने की प्रेरणा दी। प्रमुख वक्ता के रूप में भारतीय जैन संघटन के राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र लूंकर ने गंभीर चिन्तन और समाधान का रास्ता प्रस्तुत किया। तेयुप अध्यक्ष श्री पवन कोठारी ने स्वागत भाषण किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया, उपाध्यक्ष श्री विनोद बोरा, श्री विनोद गिड़िया ने प्रमुख वक्ता श्री राजेन्द्र लूंकर एवं समागत अतिथिगण श्री पंकज भंडारी एवं श्रीमती संप्रति सिंघवी का साहित्य भेंट कर स्वागत किया। मंत्री श्री नवीन चोरड़िया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री विकास बावेल ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विजयनगर

साध्वीश्री कंचनप्रभाजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथी सभा, विजयनगर के तत्त्वावधान में अर्हम भवन में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वीश्री मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेलनाश्रीजी ने तथा तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल ने श्रद्धा भरा गीत आचार्य भिक्षु को समर्पित किया। श्रीमती वीणा बैद ने भी अपनी भावनाएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन श्री सुशील चोरड़िया ने किया। इस अवसर पर अनेकों भाई-बहिनों ने तेले की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। रात्रि में धम्म जागरण कार्यक्रम हुआ।

चातुर्मासिक चतुर्दशी के पावन अवसर पर कार्यक्रम

विजयनगर सभा द्वारा शासनश्री साध्वीश्री कंचनप्रभाजी

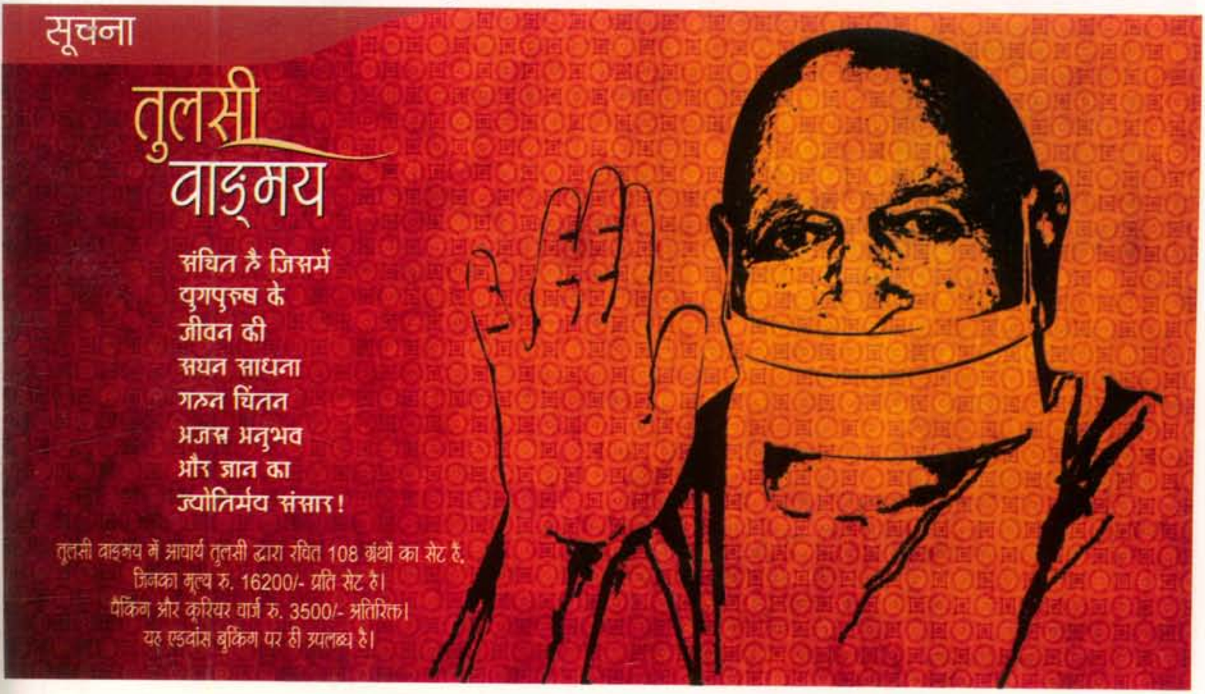

के सान्निध्य में चातुर्मासिक चतुर्दशी के पावन अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीश्री ने आत्म अस्तित्व एवं आत्म विकास की साधना की प्रेरणा दी। साध्वीश्री मंजुरेखाजी चातुर्मास में अनासक्ति की साधना वृद्धिंगत करने की प्रेरणा दी तथा साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेलनाश्रीजी ने चतुर्मास में मासखमण, तप तथा पचरंगी तप आदि प्रेरणा भरे गीत का सामूहिक संगान किया। श्री गुलाब बांठिया ने मंगलाचरण तथा श्री राकेश दूधेड़िया ने संचालन किया। अनेकों भाई-बहिनों ने उपवास, बेला तथा एकासन के प्रत्याख्यान किए।

बोधि दिवस समारोह

विजयनगर तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वीश्री कंचनप्रभाजी आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में अर्हम भवन में आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस पर बोधि दिवस समारोह आयोजित हुआ। साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु जैनागमों के मर्मज्ञ एवं व्याख्याता थे। साध्वीश्री मंजुरेखाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु दिव्य संकेतों के साथ जन्मे। साध्वी उदितप्रभाजी, निर्भयप्रभाजी व चेलनाश्रीजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन से संबंधित विविध संस्मरणों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राकेश दूधेड़िया ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, टोहाना

जैन विद्या दिवस एवं तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

टोहाना सभा के तत्वावधान में शासनश्री साध्वीश्री सरोजकुमारीजी के सान्निध्य में जैन विद्या दिवस तथा तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा दी गई। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के नन्हे-नन्हे बच्चों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। साध्वी सोमप्रभा जी ने जैन विद्या का ज्ञान दिया।

युवा पत्रकार श्री राकेश जैन, मास्टर रायचन्द जैन, मास्टर सुभाष जैन, अंजु जैन ने जैन विद्या के संस्कार भरे।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, इंदौर

स्वतंत्रता दिवस का आयोज

साध्वीश्री स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में इंदौर सभा द्वारा स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर

सूचना

"तुलसी गाथा" आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित एनीमेशन फिल्म की डी वी डी (अवधि 25 मिनट लगभग) उपलब्ध है। विशेष दर रु. 100/- प्रति डी वी डी + पैकिंग एवं कोरियर खर्च।

ट्रिब्यूट टु आचार्य तुलसी डीवीडी में आचार्य श्री तुलसी के बारे में देश के विशिष्ट राजनयिकों, सार्वजनिक क्षेत्र के महानुभावों आदि के द्वारा प्रकट किए गए उद्गारों का समावेश किया गया है। विशेष दर रु. 100 प्रति डी वी डी+ पैकिंग एवं कोरियर खर्च।

"जपें हम तुलसी-तुलसी" सीडी जिसमें आचार्य तुलसी के एवं उनके विषय में रचित गीतों को देश के विख्यात पार्श्वगायकों ने स्वर दिया, अब उपलब्ध है। विशेष दर रु. 30/- प्रति सीडी + पैकिंग एवं डाक खर्च।

उपर्युक्त सीडी मंगवाने हेतु महासभा कार्यालय को इमेल अथवा पत्र द्वारा यथाशीघ्र सूचित करें। सभी सभाएं विशेष ध्यान देकर अपने क्षेत्र की अपेक्षानुसार शीघ्र सीडी एवं डी वी डी का आरक्षण कराएँ।

पर साध्वीश्री ने कहा कि 15 अगस्त बलिदानी वीरों की कहानी को आत्मसात करने की शिक्षा प्रदान करती है।

कार्यक्रम में साध्वीश्री स्वर्णरेखाजी, श्री करणसिंह पगारिया एवं श्रीमती वंदना भादानी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल कांसवा द्वारा झण्डा वंदन किया गया एवं सभी को स्वतंत्रता की हार्दिक शुभकामना दी गई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हुबली

जैन विद्या दिवस

तेरापंथ सभा हुबली द्वारा आयोजित समण संस्कृति संकाय जैन विश्व भारती, लाडनूं के तत्त्वावधान में दिनांक 2 अगस्त 2015 को तेरापंथ सभा भवन में जैन विद्या दिवस मनाया गया। स्थानीय अध्यक्ष श्री पारसमल बाफना ने समण संस्कृति संकाय व जैन विद्या पर विशेष वक्तव्य दिया। श्री अमोलकचन्द बागरेचा ने जैन विद्या की परीक्षाओं तथा समण संस्कृति संकाय के इतिहास का विवरण दिया। पूर्व अध्यक्ष श्री सोहनराज कोठारी ने 2020 गुरुदेव का मर्यादा महोत्सव हुबली में हो इस पर अपनी विशेष प्रस्तुति दी। क्षेत्र के आंचलिक प्रभारी श्री केशरीचन्द ने भी अपने विचार रखे।

जैन विद्या परीक्षा 2014 एवं जैन विद्या परीक्षा 2014 में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया एवं सभा द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, बाड़मेर

जैन विद्या कार्यशाला

साध्वीश्री संघप्रभा आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट सभा, बाड़मेर के भिक्षु कुंज में 15 दिवसीय जैन विद्या कार्यशाला (षष्ठम) का शुभारंभ साध्वीश्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

तेयुप के उपाध्यक्ष श्री पारसमल गोलेच्छा ने बताया कि कार्यक्रम में साध्वी अखिलयशा, साध्वी मृदुप्रभा, साध्वी कर्तव्ययशा, साध्वी प्रांशुप्रभा ने जैन विद्या कार्यशाला में गीत के समवेत संगान से उपस्थित जन समूह को जैन विद्या जानने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में आयोजक तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री रतनलाल गोलेच्छा, तेयुप अध्यक्ष श्री गौतम बोथरा, उपाध्यक्ष श्री पारमल गोलेच्छा समेत अनेक लोग उपस्थित थे। प्रायोजक श्री गौतमचन्द, श्री प्रदीपकुमार, श्री हितेशकुमार भंसाली सपरिवार की ओर से करीब 35 संभागियों को

सूचना

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका

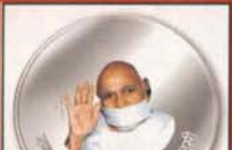

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सुंदर, आकर्षक एवं उपयोगी स्मारिका आचार्यप्रवर के चित्र एवं जन्म शताब्दी के मीनाकारी युक्त लोगो सहित सिल्वर प्लेटेड कॉइन के साथ प्रकाशित की गई है। इस स्मारिका में कॉइन के साथ गुरुदेव के जीवन से जुड़े विशिष्ट प्रसंगों की सचित्र प्रस्तुति दी गई है। सचित्र कॉइन युक्त यह स्मारिका प्रत्येक परिवार हेतु एक संग्रहणीय निधि है।

इसे यथासंभव तेरापंथी समाज के सभी परिवारों के साथ-साथ जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रति स्मारिका (कॉइन सहित) मात्र 300 रु. की सहयोग राशि पर सुलभ कराया जा रहा है। इसकी अग्रिम बुकिंग हेतु महासभा कार्यालय से संपर्क करें।

कार्यशाला के किट वितरित किए गए। श्रीमती नर्बदा देवी व श्रीमती लीला जैन ने सभी को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन जैन विद्या केन्द्र व्यवस्थापक श्री मनीष मेहता ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, देवगढ़ मदारिया

चातुर्मासिक प्रवेश अभिनंदन समारोह

देवगढ़ मदारिया सभा द्वारा शासनश्री मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी के तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि हमारे गुणों में मिठास आये, व्यवहार में उज्ज्वलता आये, हममें मिलनसारिता बढ़े यही अपेक्षित है। मुनिश्री दिनकर, मुनि शान्तिप्रियजी ने भी सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में श्री उत्तमचन्द सखलेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री श्री राजेन्द्र मेहता ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मदुरै

वार्षिक साधारण बैठक

मदुरै सभा की वार्षिक साधारण बैठक तेरापंथ में आयोजित हुई, जिसमें सभा के अध्यक्ष श्री श्रवण कुमार बोथरा ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए यह जानकारी दी कि आचार्यश्री ने पर्युषण पर्व हेतु समणी मल्लिप्रज्ञाजी, समणी रुचिप्रज्ञाजी, समणी भास्करप्रज्ञाजी को मदुरै भेजने हेतु स्वीकृति प्रदान की है। सभी का स्वागत करते हुए अपना विचार रखा। सभा के मंत्री श्री जयन्तिलाल जीरावला ने गत वर्ष के दौरान सभा द्वारा किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया।

सूचना

तुलसी स्मृति ग्रंथ

जो समर्पित है...
उनकी प्रभावना को
उनके विचारों को
उनकी कहानियों को
और स्वयं उनको।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित तुलसी स्मृति ग्रंथ आगामी शताब्दियों के लिए अद्वितीय साबित होगा। अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनेगा। ग्रंथ का आध्यात्मिक पहलू इसे अलौकिक बनाता है और संस्मरण जे जुड़ा भाग मानवीय पहलू दिखाता है।

तुलसी स्मृति ग्रंथ एडवांस बुकिंग पर ही उपलब्ध है। ग्रंथ का विक्रय मूल्य पैकिंग एवं कूरियर चार्ज सहित रु. 6500/- है।

कृपया स्मृति ग्रंथ के बुकिंग हेतु महासभा के प्रधान कार्यालय से संपर्क करें।

सभाओं में निर्वाचन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वडोदरा
चुनाव की तारीख : 26.07.2015
अध्यक्ष - श्री संतोष कुमार सिंघी
उपाध्यक्ष - श्री मुकेश कुमार बडोला
- श्री हस्तीमल मेहता
मंत्री - श्री राजेंद्र पारख
सहमंत्री - श्री पवन कुमार दुधेड़िया
कोषाध्यक्ष - श्री विनोद कुमार समन्दरिया

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई
चुनाव की तारीख : 20.08.2015
अध्यक्ष - श्री सुकनराज परमार
उपाध्यक्ष - श्री अमरचंद लुंकड़
- श्री अशोक कुमार खतंग
मंत्री - श्री विमल चिप्पड़
सहमंत्री - श्री अनिल कुमार सेठिया
- श्री हनुमान घोड़ावत
कोषाध्यक्ष - श्री सुरेश नाहर
संगठन मंत्री - श्री रमेश खटेड़

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रामपुरा फूल
चुनाव की तारीख : 22.05.2015
अध्यक्ष - श्री सुरींदर बंसल
उपाध्यक्ष - श्री सुभाष कुमार गर्ग
- श्री मोहनलाल जैन
मंत्री - श्री अनिल जैन
सहमंत्री - श्री गौरव गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री दवींदर जैन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धुबड़ी
चुनाव की तारीख : 02.08.2015
अध्यक्ष - श्री अशोक कुमार सिंघी
उपाध्यक्ष - श्री रणजीत सेठिया
- श्री सूरजमल चोरड़िया
मंत्री - श्री संपतलाल सिंघी
सहमंत्री - श्री सुभाष लालाणी
श्री विमल सेठिया
कोषाध्यक्ष - श्री झंवरलाल कोचर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पटना सिटी
चुनाव की तारीख : 13.06.2015
अध्यक्ष - श्री छत्तरसिंह छाजेड़
उपाध्यक्ष - श्री गजेंद्र गोलछा
मंत्री - श्री कमल बरमेचा
सहमंत्री - श्री हेमराज चौरड़िया
कोषाध्यक्ष - श्री विजयसिंह सेखाणी
संगठन मंत्री - श्री विनोद कोठारी

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजसमंद
चुनाव की तारीख : 29.07.2015
अध्यक्ष - श्री बाबूलाल ढिलीवाल
उपाध्यक्ष - श्री लालचंद नेमीचंद परमार
- श्री रमेशकुमार फुलचंद गुंदेचा
मंत्री - श्री लालचंद शंकरलाल परमार
कोषाध्यक्ष - श्री घेवरमल पन्नालाल परमार

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदासर
चुनाव की तारीख : 02.08.2015
अध्यक्ष - श्री भंवरलाल चोपड़ा
उपाध्यक्ष - श्री माणकचंद सेठिया
मंत्री - श्री हनुमानमल महनोत
सहमंत्री - श्री सुंदरलाल महनोत
कोषाध्यक्ष - श्री चैनरूप महनोत

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बेलाड़ी
चुनाव की तारीख : 05.07.2015
अध्यक्ष - श्री निर्मल कोठारी
उपाध्यक्ष - श्री बसंत कुमार छाजेड़
- श्री मंगलचंद नाहर
मंत्री - श्री संपतराज खिवेसरा
सहमंत्री - श्री सोहनराज गोलेछा
कोषाध्यक्ष - श्री अशोक कुमार छाजेड़
संगठन मंत्री - श्री कमल चंद छाजेड़

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा
चुनाव की तारीख : 18.08.2015
अध्यक्ष - श्री भैरूलाल चौरड़िया

उपाध्यक्ष - श्री जसराज चौरड़िया
- श्री कँवरलाल झाबक
मंत्री - श्री निर्मल गोखरू
सहमंत्री - श्री अशोक सिंघवी
- श्री महावीर भलावत
कोषाध्यक्ष - श्री शुभकरण चौरड़िया
संगठन मंत्री - श्री अशोक बाफना

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिंधीकेला
चुनाव की तारीख : 04.07.2015
अध्यक्ष - श्री सुनील कुमार जैन
उपाध्यक्ष - श्री दिनेश जैन
- श्री किरोड़ीमल जैन
मंत्री - श्री मनोज कुमार जैन
सहमंत्री - श्री राजेश जैन
- श्री ममराज जैन
कोषाध्यक्ष - श्री रोशन जैन
संगठन मंत्री - श्री छत्रपाल जैन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सुपौल
चुनाव की तारीख : 14.08.2015
अध्यक्ष - श्री शंभु कुमार जैन
उपाध्यक्ष - श्री अरविंद सिंघी
मंत्री - श्री जितेंद्र जैन
सहमंत्री - श्री प्रेमचंद चौरड़िया
कोषाध्यक्ष - श्री दीपक कुमार चौरड़िया

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बापी
चुनाव की तारीख : 07.06.2015
अध्यक्ष - श्री संपतलाल कोठारी
उपाध्यक्ष - श्री गुलाब चौपड़ा
- श्री पुखराज सोनी
- श्री देवराज डोगरा
मंत्री - श्री मीठालाल कच्छारा
सहमंत्री - श्री सुनील तलेसरा
कोषाध्यक्ष - श्री प्रकाश मेहता
संगठन मंत्री - श्री मदन सांखला

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डोंबिवली
चुनाव की तारीख : 17.06.2015
अध्यक्ष - श्री नरेश मादरेचा
उपाध्यक्ष - श्री सागरमल इटोदिया
- श्री माणकलाल डांगी
मंत्री - श्री भगवतीलाल पटवारी
सहमंत्री - श्री लक्ष्मीलाल मादरेचा
- श्री कांतिलाल कोठारी
कोषाध्यक्ष - श्री दिनेश कच्छारा
संगठन मंत्री - श्री कैलाश सियाल

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोप्पल
चुनाव की तारीख : 01.07.2015
अध्यक्ष - श्री रामलाल बागरेचा
उपाध्यक्ष - श्री राजमल जीरावला
मंत्री - श्री राजेंद्र कुमार जीरावला
कोषाध्यक्ष - श्री प्रमोद कुमार चोपड़ा
संगठन मंत्री - श्री रमेश कुमार संचेती

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पिंपलनेर
चुनाव की तारीख : 01.06.2015
अध्यक्ष - श्री जितेंद्र राजमल जैन
उपाध्यक्ष - श्री धनराज चंदनमल जैन
मंत्री - श्री केशरमल मांगीलाल गोगड
सहमंत्री - श्री अनिल सुमेरमल जैन
कोषाध्यक्ष - श्री राकेश रावलाल जैन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांकरिया-मणिनगर
चुनाव की तारीख : 30.06.2015
अध्यक्ष - श्री रायचंद लूनियां
उपाध्यक्ष - श्री हंसराज सेखाणी
- श्री नरपत लूनियां
मंत्री - श्री दीपक लूनियां
सहमंत्री - श्री राजेश बिरमेचा
- श्री आशिष पारख
कोषाध्यक्ष - श्री कंवरलाल पटवा
संगठन मंत्री - श्री सचिन सुराणा

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुए। (दिनांक : 01.07.2015 से 31.07.2015)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

10,00,000/- श्री बिमल कुमार नाहटा,गुवाहाटी

अहिंसा यात्रा

11,00,000/- श्री बिमल कुमार नाहटा,गुवाहाटी

जैन भारती के प्रकाशन में सहयोगी

5,00,000/- श्री बिमल कुमार नाहटा,गुवाहाटी

आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल व्यवस्था स्थायी कोष

1,00,00,000/- श्री राधेश्याम जी अग्रवाल एवं श्री राधेश्याम जी गोयनका द्वारा इमामी फाउन्डेशन, कोलकाता

सहभागिता योजना

65,510/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद

51,637/- साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हावड़ा

51,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा मंडी

10,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नवसारी

3,600/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरनाला

2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बैकुण्ठपुर

2,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनेन्द्रगढ़

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

11,000/- श्री झमनमल सिंघी, कोलकाता

5,100/- कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति, कोलकाता

नेपाल आपदा राहत सहायता कोष (26 जुलाई से 28 अगस्त 2015 तक)

5,00,000/- मरुधर मित्र परिषद, मुम्बई

1,21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दुबई

92,400/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राउरकेला

50,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई

41,300/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मदुरै

21,600/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरनाला

21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नवसारी

21,000/- श्री यशराज सेठिया, राउरकेला

21,000/- श्री मांगीलाल बोथरा, राउरकेला

11,000/- श्री पवन कुमार दुगड़, राउरकेला

8,500/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कीम

8,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उल्लासनगर

7,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, देउलगांव मही

5,100/- श्री राजकुमार दुगड़, राउरकेला

5,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बैकुण्ठपुर

5,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनेन्द्रगढ़

शताब्दी अक्षय निधि कोष

- अनुदान का महायज्ञ अनवरत रूप से प्रवर्धमान है। समग्र समाज अक्षय निधि कोष से जुड़कर दायित्व बोध का परिचय दें एवं गौरव की अनुभूति करें।
- "शताब्दी अक्षय निधि कोष" की स्थापना का उद्देश्य है कि कोष को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से संस्था की आवश्यकताओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक अपेक्षाओं की संपूर्ति की जाए।

- संपूर्ण समाज को कंधे से कंधा मिलाकर नव उन्मेषों के आरोहण में सहभागी-सहयोगी बनने हेतु प्रेरित किया जाए।
- इस कोष में अंशदान करके तेरापंथ समाज के प्रत्येक सदस्य के मन में दायित्व बोध का भाव विकसित होगा और सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में सहभागिता करके हर एक सदस्य को गौरव की अनुभूति होगी।
- एकरुपता एवम् सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रति सदस्य सहयोग राशि ग्यारह हजार प्रस्तावित है परन्तु आप अपनी भावना के अनुरूप अधिक या कम राशि का भी योगदान कर सकते हैं। मूल लक्ष्य समाज के प्रत्येक सदस्य की इस महान उपक्रम में सहभागिता है।

समग्र समाज से आर्थिक सहयोग की कामना के साथ....

बिमल कुमार नाहटा
प्रधान न्यासी

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

प्रगति विवरण

जुलाई, 2015 तक घोषित राशि : रु. 5,29,29,624/- | **जुलाई, 2015 तक प्राप्त राशि : रु. 3,94,15,624/-**

शताब्दी अक्षय निधि कोष के जुलाई -2015 के सहयोगी

2,50,000/-	श्री अमरचन्द धर्मचन्द लुंकड़, चेन्नई
11,000/-	श्री पन्नालाल बरड़िया, धुबड़ी
11,000/-	श्री नवरत्तन अजय पारस कोचर, हावड़ा
11,000/-	श्री प्रकाश बरड़िया, हैदराबाद
11,000/-	श्री अजय सुराणा, हैदराबाद
11,000/-	श्री विजय गेलड़ा, हैदराबाद
11,000/-	श्री प्रकाश बैद, हैदराबाद
11,000/-	श्री जुगल दुगड़ (जैन), हैदराबाद
2,100/-	श्री भीखमचन्द नाहटा, हावड़ा
2,100/-	श्रीमती झिणकार देवी बाफना, हावड़ा
2,100/-	श्रीमती मुन्नी देवी बैद, हावड़ा
2,100/-	श्रीमती राजू देवी बैद, हावड़ा

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका जुलाई - 2015 तक 8209 नग बिक्री की गई है। सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका से संगृहीत राशि का नियोजन शताब्दी अक्षय निधि कोष में किया जा रहा है।

हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज अहिंसा यात्रा पर डाक टिकट और संस्मरणात्मक आलेखयुक्त आवरण हम लोग प्रकाशित कर पाए। मेरा यह सौभाग्य है कि यह सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। इसके माध्यम से नेपाल सरकार ने आप जैसे तपस्वी के चरणों में अपनी एक छोटी-सी भेंट अर्पित की है। अभी नेपाल को अहिंसा की जरूरत सर्वाधिक है। संविधान निर्माण के लिए हमें सबके सद्भाव की जरूरत है। संविधान निर्माण के इस कार्य के लिए हमें आचार्यश्री से ऊर्जा और आशीर्वाद मिलता रहे, यही प्रार्थना है।

डॉ. मिनेन्द्र रिजाल
सूचना एवं संचार मंत्री,
नेपाल सरकार

जैन भारती, अगस्त 2015, भारत सरकार पं. सं. 2643/57

अहिंसा यात्रा

सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

भारत नेपाल भूटान

WITH REVERENCE

urja

B. N. GROUP

VINOD ARIHANT BAID FOUNDATION

FORT® GROUP
The Fourth Dimension of Space

BMD
Sincere Service
BMD GROUP OF COMPANIES
KBD Foundation
Budhamall Surendra Dugar Foundation
Budhamall Tulsi Dugar Foundation
Budhamall Kamal Dugar Foundation

Himachal Futuristic Communications Ltd.

BENGAL ENERGY

SUBHKAM VENTURES

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)

3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
दूरभाष : 2235 7956, 2234 3598, फैक्स : 033 2234 3666
email: info@jstmahasabha.org